स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

जनवरी 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

भव्य राम मंदिर में

श्री रामलला की प्राण - प्रतिष्ठा

22 जनवरी 2024

गौरव एवं आत्मसंतोष का यह चिरप्रतीक्षित आयोजन करोड़ों रामभक्तों की भावनाओं का प्रतिबिंब बने,

देश में रामराज्य की स्थापना हो

आप सभी इस ऐतिहासिक अवसर के

परम साक्षी बनें।

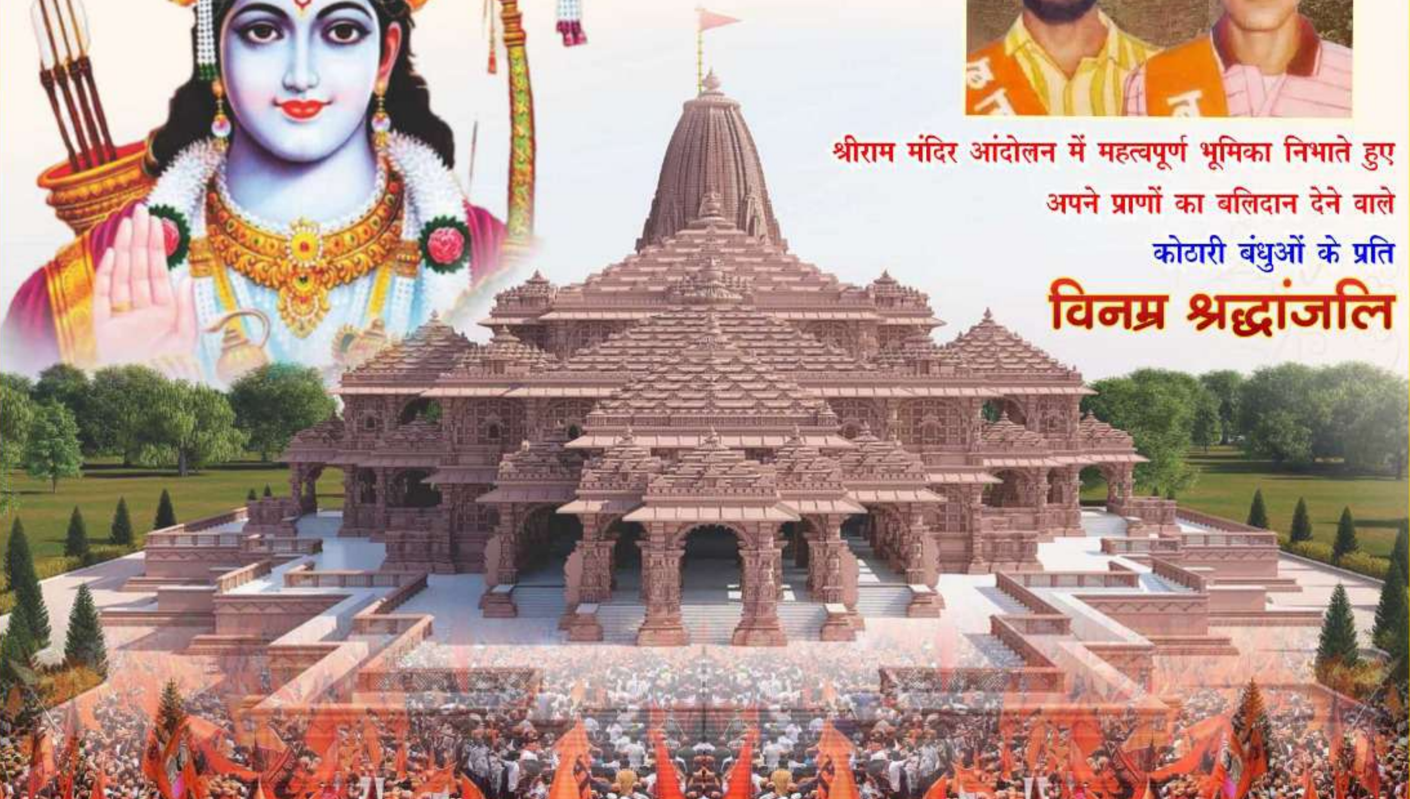

श्रीराम मंदिर आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए

अपने प्राणों का बलिदान देने वाले

कोठारी बंधुओं के प्रति

विनम्र श्रद्धांजलि

!! श्री महावीराय नमः !! !! श्रमण संघ जयवन्त हो !!

।। जय आत्म - जय आनन्द - जय देवेन्द्र - जय शिव - जय महेन्द्र ।।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

के तत्वावधान में

ध्यानयोगी पूज्य आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के शुभाशीर्वाद से

खद्दरधारी, घोर तपस्वी, बालब्रह्मचारी, कर्नाटक गजकेसरी

पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म. सा. की 62वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा

"एक उपवास, जप - तप के साथ, खद्दरधारी गुरु गणेश के नाम"

विक्रम संवत् 2080 माघ वदी अमावस्या - शुक्रवार, 09 फरवरी 2024

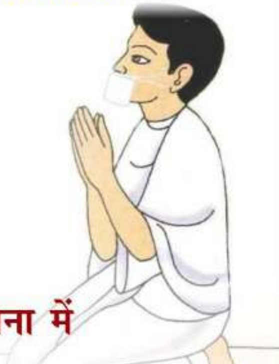

श्रद्धाओं का सैलाब हमें लक्ष्य तक फैलाना है।
करके उपवास, अपनी श्रद्धाओं को निभाना है।।

62,000
एक उपवास, जप-तप के साथ

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से तप महोत्सव जालना में अथवा निज निवास स्थान पर शामिल होने हेतु विनम्र आग्रह !

!! हृदयपूर्वक निवेदनकर्ता !!

आनंदमल छल्लाणी जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष	सुभाष ओसवाल जैन राष्ट्रीय चेयरमैन	अशोक मेहता जैन राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	अतुल जैन राष्ट्रीय महामंत्री	पद्मचंद कांकरिया जैन राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
राजेन्द्र नथमल मुथा जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	जसवन्त जैन राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष	पुष्पा राजेन्द्र गोखरू जैन राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा	पद्मचंद आच्छा जैन राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष	

एक उपवास, जप-तप संकल्प के साथ

आनंद सुराणा जैन - 7020522944
राष्ट्रीय संयोजक

आवास-निवास के लिए संपर्क
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, तपोधाम जालना
फोन नं. 02482, 232366, 243066
तपोधाम ऑफिस, गणेश नगर
सम्पर्क सूत्र - 8830500931, 8668423581

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 01 | जनवरी - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल
संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560
डॉ. भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई
93822 91400
एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE
CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
जैन प्रकाश पत्रिका हेतु सुझाव ...	सम्पादक मण्डल	11
अध्यात्म शत्रु को जीतने ...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	12
नववर्ष की शुरुआत ...	- प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा.	13
श्री सूर्यमुनिजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	15-18
तत्व बोध ...	- आचर्य श्री महाप्रज्ञजी म.सा.	19
आगम दर्पण ...	- श्री प्रवर्तक श्री रतनमुनिजी म.सा.	20-21
महरत्मय ...	- साध्वी श्री प्रतिभाजी म.सा.	22-23
जैन दिवाकर ...	- महासाध्वी डॉ. श्री मधुबालाजी म.सा.	24-25
राम मंदिर, अयोध्या ...	- श्री संजय बाफना जैन	26
पूज्य गुरुदेव ...	- श्री आनंद सुराणा जैन	27-29
समता-क्षमता-दक्षता ...	- श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन	30-32
बुद्धिमान कौन ?	-	32
बेगानी शादी में ...	- श्री गौतम खारीवाल जैन	33-34
जैन धर्म में राम	- श्री मुन्नालाल जैन	35-36
हौंसले की उड़ान	- श्रीमती नीता बाबेल जैन	37-38
जैनों को सही जनगणना ...	- श्री हंसकुमार जैन	39
परमेष्ठी वंदन	- श्री सम्पतराज चौधरी	40
आचार्य हस्ती के अनमोल वचन	- साभार संगीत सरिता	41
एक रुपये के बदले ...	- श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन	42
ये बिजनेस है	- श्री आनंद मेहता जैन	43
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा नवंबर माह में सम्पन्न...		44
समाचार प्रकाश		45-49
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : लेखक / प्रेषक द्वारा लिखे गए विचारों, सामग्री एवं विषय व उसकी प्रमाणिकता के लिए सम्पादक या जैन कॉन्फ्रेंस जिम्मेदार नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी रचनाएं मौलिक एवं आवश्यकतानुसार सन्दर्भ-युक्त हों। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	09.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	93021 03817
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	11.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
04.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082	12.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98100 45440
06.	श्री राजीव जैन, दिल्ली	98110 42280	14.	श्री कांतिकुमार लोढा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	15.	डॉ. अमित राय जैन, बड़ौत	98373 94448
08.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838			

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-23

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत	98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे	98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर	93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर	98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद	92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई	98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई	94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर	98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली	98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर	78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली	98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता	98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना	70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे	98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई	98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी	87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर	94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली	98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे	98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे	98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर	93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर	98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत	70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई	98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर	83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर	94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर	98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर	92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती	98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर)	98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर	98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद	92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली	93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना	98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर	98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत	98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता **12 वर्ष**	**रु. 1000/-**

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-23

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-23

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

जैन दर्शन की कुछ बातें

दस लक्षण : क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य ।

नव तत्व : जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष ।

आठ कर्म : ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, आयु, गौत्र, नाम, अंतराय ।

सात सुख : निरोगी काया, घर में माया, पतिव्रता नारी, पुत्र आज्ञाकारी, स्वस्थान में वासा, राज में पासा, बैकुंठ में वासा ।

छः लेश्या : तीन अशुभ - कृष्ण, नील, कपोत, तीन शुभ - तेजस्, पद्म, शुक्ल ।

पांच महाव्रत : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ।

चार शिक्षा : दान, शील, तप, भाव ।

तीन गुण : कम खाओ, गम खाओ, नम जाओ ।

सम्पादकीय

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा ...

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail: ajvk1973@gmail.com

आदरणीय पाठकगण, आत्मीय बंधुओं !
सादर जय जिनेन्द्र ।

अंग्रेजी नववर्ष 2024 का आरम्भ हो चुका है। आप में से बहुतों ने इस मौके पर खूब खुशियाँ मनाई होंगी, कुछ नये लक्ष्य निर्धारित किये होंगे, कुछ नई दिशाओं में जाने का निर्णय बनाया होगा, नववर्ष में कुछ नया हासिल करने का निश्चय किया होगा। यह सब ठीक है परन्तु एक आध्यात्मिक चित्त दशा का निर्माण करना, अपनी चेतना में धर्म के कुछ नये बीजों को बोने का निर्णय लेना भी अति महत्वपूर्ण बात है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है। एक भौतिकवादी व्यक्ति चीजों को बदल-बदल कर सोचता है कि नई-नई चीजों से उसे सुख मिलेगा और उसे मिलता भी है। परन्तु चीजों का स्वभाव तो समय के साथ पुराना होते जाना है जो कि वे होती ही हैं। सारा जीवन इसी उधेड़बुन में निकल जाता है। वहीं एक आध्यात्मिक चेतना जानती है कि समय में सब कुछ नया ही है। हर दिन, हर घड़ी, हर क्षण नया है और इस नये का उत्सव हर पल हर क्षण ही है। आप सभी भी नये वर्ष में अपनी आध्यात्मिक चेतना के स्वामी बनें और आत्मा के नित नूतन उल्लास में आनंदित हों ऐसी भावना है।

जनवरी माह में ही 23वें तीर्थंकर, पुरुषोत्तम भगवान पार्श्वनाथ का पावन जन्मकल्याणक भी मनाया जाता है। भगवान पार्श्वनाथ का जन्म आज से कोई 28 सौ वर्ष पहले के भारतीय जनपद काशी की राजधानी वाराणसी नगरी में राजा अश्वसेन और महारानी वामा देवी के यहां पर हुआ। ऐसे भव्य दिव्य परिवार में एक बालक का जन्म हुआ और नाम रखा गया पार्श्व कुमार। भगवान पार्श्वनाथ अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। बचपन से ही आश्चर्यजनक बुद्धि वाले थे। 30 वर्ष की उम्र में आपने दीक्षा ली और कुल 84 दिन का साधना काल रहा और साधना में रमकर सभी कर्मों की निर्जरा करने लगे। 84वें दिन केवल ज्ञान प्रगट हुआ और आप साधक पार्श्वनाथ से भगवान पार्श्वनाथ के रूप में लोक विख्यात हो गए। कैवल्य होने पर अगले 70 वर्षों तक सम्पूर्ण आर्यावृत के विभिन्न जनपदों में विहाररत रहे। अपार जनसमूह का कल्याण किया उन्हें धर्म का ज्ञान दिया, मुक्ति का सम्यक् मार्ग दिखाया और जनमानस के आकुल-व्याकुल चित्त में शांति और समता के संदेश द्वारा सुख की स्थापन की। 100 वर्ष की पूर्णायु में सम्मेद शिखर से आप परम निर्वाण को प्राप्त हुए। समस्त तीर्थंकरों का आत्मतेज समान ही होता है, परन्तु लोक मानस में भगवान पार्श्वनाथ के प्रति विशेष भाव देखने में आता है। देशभर में सर्वाधिक जिन मंदिर भगवान पार्श्वनाथ को ही समर्पित हैं जो उनके प्रति लोगों की भक्ति भावना को दर्शाता है।

जनवरी में ही मकर संक्रान्ति का पावन पर्व भी आता है। इस अवसर पर भी लोक मानस विशेष उत्साह और उल्लास से भरा-पूरा हो जाता है। आपका जीवन भी उत्सव और उल्लास के इन पावन पर्वो से जुड़कर आनंदमय बन जाये ऐसी कामना करता हूँ। हमारे सामाजिक बंधु भी जिन शासन प्रभावना के विभिन्न आयमी कार्यक्रमों के माध्यम से आपने जीवन को सफल बनाएं। समाज में व्यामोह पैदा न करके सत्य के साथ चलने का साहस करें। सामाजिक कार्यों और संगठनों की मजबूती हेतु सहयोगी भाव बनाकर चलें। हम सभी का लक्ष्य धर्म उत्थान और समाज उन्नति ही है तो हम सब साथ चलें और साथ मिलकर कार्यरत रहें।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 26 जनवरी 2024 को दिल्ली के कर्त्तव्य पथ पर भारत अपना 75वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनायेगा। देश के सभी नागरिकों के लिए गणतंत्र दिवस की यह परेड़, यह क्षण एक अदभुत छटा बिखेरेगा। हम सभी इस क्षण को आनंदमय वातावरण में तिरंगे झण्डे के नीचे हर्ष और उल्लास के वातावरण में मनायें। आप सभी को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से 75वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। ❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

E-mail : rjachallani@gmail.com

जैन दर्शन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम !

- आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण
सादर जय जिनेन्द्र !

वि.सं. 2080 पौष शुक्ल द्वादशी, दिनांक 22 जनवरी 2024 को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के बाल रूप नूतन विग्रह को श्रीराम जन्मभूमि पर बन रहे भव्यातिभव्य नूतन मंदिर के भूतल-गर्भगृह में विराजित करके प्राण प्रतिष्ठा की जायेगी। विगत पाँच सौ वर्षों में लाखों राम भक्तों ने बलिदान दिया, अपने प्राण न्यौछावर किये तथा जैन समाज के भी अनेक महानुभावों तथा कलकत्ता के दो युवा कोठारी बंधुओं ने ध्वज फहरा कर, गोलियों को अपने सीने पर झेलकर प्राण न्यौछावर कर दिये। यह सब भगवान श्रीराम के प्रति अनन्य निष्ठा, आस्था, श्रद्धा का जीता जागता सबूत था।

जैन धर्मानुसार 20वें तीर्थंकर मुनि सुव्रतस्वामी के समय में श्रीराम का जन्म हुआ। श्रीराम को जन्मे 20,000 वर्ष से भी अधिक समय हो गया, जिसका उल्लेख अनेक जैन ग्रंथों में मिलता है। दिगम्बर ग्रंथ पद्मपुराण में, श्वेताम्बर ग्रंथ त्रिषष्ठिश्लाका पुरुष चरित्र में श्रीराम का विस्तृत वर्णन है। 63 श्लाघनीय/प्रशंसनीय पुरुषों में श्रीराम का विस्तृत वर्णन आता है। आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म.सा. कृत बड़ी साधु वन्दना के अनुसार श्रीराम अभी मोक्ष में है -

इस अवसर्पिणी काल माँ, आठ राम गया मोक्ष।
श्रीराम ''णमो सिद्धाणं'' के रूप में प्रतिष्ठित है।

श्रीराम का जीवन अत्यंत महनीय था, जैन रामायण में भी वे राजा दशरथ के पुत्र थे, सभी पात्र समान है। जैसा कि आपने रामानन्द सागर कृत रामायण सीरीयल में देखा। रामानन्द सागर ने भी पद्मपुराण, त्रिषष्ठिश्ताका पुरुष चरित्र दोनों महाग्रंथों से श्रीराम संबन्धित सामग्री का चयन किया था। पद्यमय जैन रामायण का एक प्रारंभिक दोहा है -

'रा' उच्चारता मुख पकी, पाप पलाई जाय ।
मति फरी आवे लेहथी, 'म'मो कवाड़ी थाय ।।

अर्थात् 'रा' के उच्चारण से पाप दूर होते हैं, पाप पुनः न आ जाये, एतदर्थ 'म' उच्चारण करते ही कपाट बन्द हो जाते हैं। कितनी सटीक राम की व्याख्या जैन कवि ने की है। श्रीराम का जीवन उत्कृष्ट एवं महनीय जीवन था, पिता की आज्ञा का पालन, भ्रातृ प्रेम, सखा प्रेम, पत्नी प्रेम, राज-धर्म, न्याय-नीति, मर्यादा-पालन, वचन निभाना आदि सद्गुण कोई सीधे तो श्रीराम से सीखें। उनका जीवन अनुपमेय था, कहा भी है - राम से राम, सीया सी सीया ! कवि ने राम को राम, सीता को सीता ही कहा, क्योंकि उनके लिए कोई भी उपमा उनके सद्गुणों के अनुरूप नहीं थी। माता सीता जैन धर्म की 16 सतियों में प्रतिष्ठित है -

कौशल्या च मृगावती च सुलसा, "सीता" सुभद्रा शिवा।

आज श्रीराम, सीता मैय्या को हुए बीस सहस्राब्दियों से भी अधिक समय हो गया, किंतु उनकी यशो गाथा, कीर्ति पताका का आज भी पूरे विश्व में गुंजायमान है। **'इण्डोनेशिया'** पूरा मुस्लिम देश हो गया, परन्तु वहाँ भी एक माह तक रामलीला का मंचन होता है। वहाँ के निवासियों का कथन है- "हमने धर्म बदला है किंतु हमारे संस्कार आज भी वही है, सनातन धर्म का आज सबसे बड़ा मन्दिर भी इण्डोनेशिया में ही है। विश्व के जन-मन में श्रीराम के प्रति जो आदर-सम्मान है, वह श्लाघनीय अभिनंदनीय तथा स्तुत्य है। आज श्रीराम के प्रति आस्था-भक्ति चरमोत्कर्ष पर है। विदेशों की धरती पर भी 'राम-राज्य' एवं 'राम-ग्राम' की स्थापना की जा रही है, श्री 'राम-मुद्रा' भी कई देशों में शुरू हो गई, जो डॉलर को भी मात दे रही है। आज पूरा विश्व राममय बन रहा है। राम-राज्य की स्थापना की बात भले ही महात्मा गांधी ने कही थी, परन्तु भारत में धर्महीन, स्वार्थी, तुष्टिकरण की नीति अपनाने वाले राजनेताओं के कारण वह बात कल्पना मात्र ही रह गई। अब वह स्वप्न साकार होने का समय आ रहा है। भारतवासी जाग रहे है। भारत पुनः विश्व गुरु बनने की राह पर है। हम केवल राम-राज्य की बात न करके श्रीराम के गुणों को, आदर्शों को जीवन में स्थापित कर ले तो स्वतः ही राम-राज्य स्थापित हो जायेगा। आज चारों ओर मिडिया में श्रीराम मंदिर, प्राण-प्रतिष्ठा की ही चर्चा है, समारोह में लाखों भक्त आयेंगे।

जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों ने भी इस प्रसंग पर तन-मन-धन से सहयोग करने का निर्णय दिल्ली में लिया है। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय-प्रांतीय पदाधिकारियों ने भी इस सभा में भाग लिया। इससे पूर्व भी श्रीराम मंदिर चन्दा-एकत्रीकरण में भी सभी जैनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह ऐतिहासिक कार्यक्रम सानंद-सोत्साह सम्पन्न हो, यही मंगल मनीषा।

जैन भवन, दिल्ली का कार्य गतिशील है। संत-सतीयृंद के विहार भी निरंतर चल रहे है, सेवा-वैय्यावृत्य, विहार-सेवा आदि का युवागण लाभ लें। जय श्रीराम। जय महावीर।। ❖

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका हेतु सुझाव एवं आग्रह

– सम्पादक मण्डल

सादर जय जिनेन्द्र! आप सभी पाठक वृन्द को **'जैन प्रकाश मासिक पत्रिका'** वर्षों से प्राप्त हो रही होगी और कुछ बंधुओं को किन्हीं कारणों से नहीं मिल रही होगी। इसके अलावा कुछ महानुभावों के पते बदल गये या कोई सदस्य काल धर्म को प्राप्त हो गये हैं तो इसकी सूचना आप हमारे पास अवश्य भिजवायें, जिससे रिकॉर्ड को समय पर सुधारा जा सकें। वस्तुतः हमारा प्रयास तो यही रहता है कि हर घर तक पत्रिका समय पर पहुँचे, परन्तु पत्रिका हर घर तक न पहुँच पाने का मुख्य कारण पता गलत होना अथवा पोस्ट ऑफिस कार्यालय से पत्रिका सदस्यों तक न पहुँचाना होता है।

हमारे समक्ष प्रायः ऐसा भी देखने और सुनने में आता है कि कुछ लोग पत्रिका उनके निवास अथवा प्रतिष्ठान पर पहुँचने के बाद पत्रिका को कवर तक से बाहर नहीं निकालते हैं और कुछ दिन-महीने बीतने के बाद पत्रिका को रद्दी में डाल दिया जाता है, यह वास्तविकता है।

यह एक धार्मिक पत्रिका है, जो सिर्फ समाचार पत्रिका न होकर नॉलेजयुक्त पत्रिका भी बने, जिसके लिए वर्ष 2022 से ही हमारा यह प्रयास रहा है कि इसको और अधिक धार्मिक और ज्ञान-सामग्री से भरपूर बनाया जाए, जिसके लिए आप सभी का सहयोग भी हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है। ऐसी ही सामग्री आप हमारे पास अवश्य भिजवायें, जिसको अवश्यमेव स्थान प्रदान करने का हमारा प्रयास रहेगा। यह वाचनीय, पठनीय, विचारणीय हो, लोगों में पत्रिका की प्रतीक्षा हो, जल्द प्राप्त हो, अच्छी जानकारी हेतु लोगों के फोन कॉल आए, ऐसा हमारा प्रयास रहेगा। हमारे सदस्यगण जिज्ञासु, ज्ञानी है, इसे धरोहर के रूप में संभालकर रखें, ऐसा लेखन करने का हमारा प्रयास आपके सहयोग से रहेगा।

ऐसा प्रयास मात्र हमारे द्वारा संभव नहीं हो पाएगा, आप लोग सभी प्रबुद्ध है, विचारक है, हमारे साधु-साध्वीवृद भी पढ़े-लिखें विद्वान् है, आपके भी लेख आना जरूरी है। प्रवचन के साथ उनके विचारों का प्रकाशन पूरे भारत में 29000 से ज्यादा सम्प्रेषण में स्थान मिलेगा। हमारे युवा संत-सतियों में भी विराट प्रतिभा छिपी हुई है, उन्हें भी जैन प्रकाश पत्रिका में अच्छा स्थान प्रदान किया जाएगा।

इस नववर्ष में हम आपसे अनुरोध करते हैं कि हमारे पूर्वजों ने वर्षों से इस पत्रिका को सुचारू रूप से चलाया है। आपको भी इसे आगे लेकर जाने में सहयोग करना है, तथा इसे सजाना है। आपश्री ने यह पत्रिका की सदस्यता ग्रहण की है, इसी से आपका ज्ञान के प्रति प्रेम झलकता है।

आजकल लोग मोबाईल प्रयोग के अधिक आदी हो गये हैं, पत्र-पत्रिकाओं का पठन कम हो गया है, इसको देखते हुए हमारे द्वारा भी काफी समय से ई-मैगजीन का चलन किया जा रहा है।

अतः जो लोग प्रेषित पत्रिका को नहीं पढ़ पा रहे हैं, वे लोग भी पत्रिका को मोबाईल के माध्यम से ई-मैगजीन का प्रयोग करते हुए पढ़ सकते हैं। अतः जिन महानुभावों को पत्रिका उनके पते पर भेजने की आवश्यकता नहीं है, वे लोग भी अपनी एक निवेदन पत्र कार्यालय में, ई-मेल अथवा पत्र के द्वारा भेजकर प्रेषण होने वाली पत्रिका को बंद करने एवं ई-मैगजीन पत्रिका को शुरू करने का आग्रह भेज सकते है। हमें आशा है कि आप जैसे महानुभाव जरुर इसे गंभीरता से लेंगे।

हम आपको आव्हान करते हैं कि रोजाना का मात्र आधा-एक घण्टा इस पत्रिका को पढ़ने में अवश्य लगायें। आपको धीरे-धीरे रूचि पैदा होगी और आपकी जिज्ञासा बढ़ेगी तथा हमारा हौसला बढ़ेगा।

यह लेख पढ़ने के बाद आपके निर्देश, सुझाव अवश्य प्रेषित करें। हम समाज की ओर से आपके ऋणी रहेंगे। हम आगम, साधु-साध्वियाँ एवं श्रावक-श्राविकाओं के बीच में सेतु का काम करने जा रहे हैं। अतः जैन कॉन्फ्रेंस एवं जैन प्रकाश पत्रिका के परिवार की ओर से आपसे सहयोग की महती अपेक्षा है। आपके सुझाव एवं लेख तथा समाचार आदि सम्प्रेषण करने के लिए ई-मेल, पता एवं संपर्क सूत्र सभी पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर ही अंकित है। इन्हीं विचारों एवं शुभ भावनाओं के साथ आप सभी को नूतन वर्ष की शुभकामनाएं, पुनः सादर जय जिनेन्द्र! ❖❖

अध्यात्म शत्रु को जीतने की कला

- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

प्रभु महावीर का 2550वाँ निर्वाण वर्ष चल रहा है। इस वर्ष में हम सभी विशेष चिंतन करें कि प्रभु महावीर ने निर्वाण कैसे पाया? निर्वाण की रहस्यमयी साधना क्या थी? जिसे प्रभु महावीर ने आत्मसात् कर स्व-पर कल्याण का मार्ग जन-जन के लिए प्रशस्त किया।

वीतराग मार्ग की शुरुआत कहाँ से होती है? जहाँ से जीव को अपने स्वरूप का बोध होता है, अनादिकाल की यात्रा में जीव ने एक ही भूल की, पर को स्व मानकर, मिथ्यात्व को, असत्य को जीया।

भूतकाल में एक समय भी ऐसा नहीं था, जहाँ जीव ने बंधन न बांधा, क्योंकि जीव को अपना ही परिचय नहीं था। अतः जब भेद विज्ञान से जीव को सत्य का बोध प्राप्त होता है। उससे जीव को वैराग्य प्राप्त होता है। वैराग्य से वीतरागता की प्राप्ति होती है।

प्रभु महावीर ने अनादिकाल के शत्रु मिथ्यात्व व मोह को जीता। प्रश्न होता है किसके द्वारा जीता है? त्याग व वैराग्य से जीता। त्याग किसका किया? उन्होंने त्याग किया राग और द्वेष रूपी शत्रु का। साधक जब भी किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान से राग करता है तो वह अपने अन्तरंग शत्रु का पोषण करता है।

निश्चय में प्रत्येक पदार्थ का अपना अस्तित्व है। जब भी हम पुद्‌गलों से राग करते हैं या अनुकूलता की चाह करते हैं तो हम अपने मोह शत्रु का पोषण करते हैं। जब भी हम किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान से द्वेष करते हैं, वहां हम अपने मोह शत्रु का पोषण करते हैं क्योंकि व्यक्ति तो निमित्त है। निमित्त हमेशा निर्दोष है, उसके निमित्त से हम विभाव में जाकर राग या द्वेष करते हैं तो अपने शत्रु का पोषण करते हैं।

मोह रूपी शत्रु को जीतने का सरल तरीका है वैराग्य। वैराग्य अर्थात् अपने जीव के अलावा सब कुछ पर है, पराया है। अरिहंत परमात्मा फरमाते हैं - "मेरे पास, मेरे अलावा, मेरा कुछ नहीं, मेरा कोई नहीं।" इसे जीने वाले की वीतराग यात्रा प्रारम्भ हो गई, वह जीव अतिशीघ्र मुक्त होगा।

प्रभु महावीर ने अपने अन्तिम भव में इस ज्ञान को जीया। गृहस्थ में 30 वर्ष वैरागी बनकर रहे अर्थात् महलों में निर्लेप बनकर रहे। दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उस वैराग्य में जीने का पुरुषार्थ करते रहे। प्रतिकूलताओं को स्वीकार किया और अनुकूलता की चाह मिटा दी। अनुकूल-प्रतिकूल उपसर्ग परीषहों को समभाव में जीकर उन्होंने अपने कार्मण शरीर को हल्का कर लिया।

उन्होंने पुद्‌गल के चिंतन मात्र को छोड़ दिया व आत्म चिंतन करते-करते शुक्लध्यान में निर्विचार, निर्विकल्प समाधि में लीन होने का पुरुषार्थ साढ़े बारह वर्ष के साधनाकाल में किया, उनके बाह्य तप से अधिक आभ्यांतर तप का महत्व था। उन्होंने भेद विज्ञान, शुक्लध्यान व कायोत्सर्ग से निद्धित एवं निकाचित दोनों कर्म क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया।

उनकी सेवा में गौशालक जैसे साधक छद्‌मस्थकाल में परीक्षा लेने आए तथा गौतम जैसे शिष्य केवलज्ञान के बाद गणधर बनकर आए पर उनकी दृष्टि दोनों पर सम रही, वे दोनों में एक समान आत्मा देख रहे थे।

केवलज्ञान के पश्चात् 30 वर्ष तक वीतराग मार्ग का पथ प्रदर्शन कर जन-जन के कल्याण के निमित्त बने। वीरत्थुई में उनकी स्तुति करते हुए कहा है -

आत्मदर्शी खेद के ज्ञाता, महामुनि वीर थे।
कर्म दल को नाश करने में कुशल, अतिधीर थे।
ज्ञान दर्शन का अनंत, अनंत कीर्ति वितान था।
नयन पथ गत लोक पति का धर्म धैर्य महान् था।

वर्ष 2024 प्रारम्भ हो गया है, विश्व में त्याग, वैराग्य, वीतरागता की गूंज हो।

प्रत्येक जीव भेद-विज्ञान, आत्म-ज्ञान, शुक्ल-ध्यान के द्वारा आनंद-शांति एवं ज्ञान को प्राप्त करें। कर्म सिद्धांत को मानकर हर जीव स्वभाव की साधना कर वीतराग पथ का पथिक बने, यही मंगल कामना।

❖❖

नववर्ष की शुरुआत् हो आंतरिक सुख प्राप्ति के संकल्प से

- श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनिजी म.सा.

आत्मप्रिय साधकगण ! वर्ष 2024 का शुभारम्भ हो चुका है। इस वर्ष का शुभारम्भ आन्तरिक सुख प्राप्त करने के संकल्प से हो। अनादिकाल की यात्रा में हमने भौतिक सुख प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ किया व सुखाभास से तृप्त रहे। अनंत पुण्य की कतारें लगीं तो हमें पंचम आरे में चतुर्थ आरे की साधना मिली, शुद्ध वीतराग मार्ग प्राप्त हुआ, स्वरूप बोध की साधना मिली।

इस भव की हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है कि हमें भेद-विज्ञान व आत्म-ध्यान की साधना मिली। अब जीवन का शेष समय अपने जीव को देने का संकल्प करें तो अनादि की संसार-यात्रा समाप्त होगी। सम्यक्त्व को प्राप्त कर इसमें परिपूर्णता प्राप्त करने के लिए क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करें। क्षायिक सम्यक्त्व अर्थात् एक घड़ी (24 मिनट) तक निर्विकल्प-निर्विचार समाधि को प्राप्त कर अखण्ड अनंत सुख का अनुभव प्राप्त करूं।

अनंत सुख अर्थात् जिस सुख का कभी अंत हुआ नहीं, होगा नहीं। जो भूत में भी मुझ जीव में था, वर्तमान में भी है, भविष्य में भी रहेगा। आवश्यकता है निज जीव को जानकर, समझकर उस पर श्रद्धा कर उसमें स्थिर रहना। ये साधना जो कर रहे है करेंगे, वे अपने जीवन को सफल बना लेंगे और एक दिन अपने लक्ष्य सिद्धालय को प्राप्त कर लेंगे। वर्ष 2024 आन्तरिक सुख की प्राप्ति के पुरुषार्थ का हो, यही मंगल कामना।

दिनांक 10 दिसम्बर 2023 को एक दिवसीय ऑनलाईन आत्म-ध्यान धर्मयज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं सहित कुल 562 साधक-साधिका उपस्थित थे। दिनांक 10 से 13 दिसम्बर 2023 तक चार दिवसीय ऑनलाईन आत्म-ध्यान धर्मयज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं सहित कुल 429 साधक-साधिका उपस्थित थे। दिनांक 10 से 19 दिसम्बर 2023 को दस दिवसीय ऑनलाईन आत्म-ध्यान धर्मयज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं सहित कुल 164 साधक-साधिका उपस्थित थे। दिनांक 10 से 31 दिसम्बर 2023 को 21 दिवसीय आत्म ध्यान धर्मयज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें 53 नए, पुराने व परिपक्व साधकों ने भाग लेकर अपने जीवन में सच्चे सुख का मार्ग प्राप्त किया।

एक दिवसीय एवं चार दिवसीय आत्म-ध्यान धर्मयज्ञ जम्मू, भठिण्डा, आदीश्वर धाम, कुप्पकलां, जैन भवन-दिल्ली, उदयपुर, भीलवाड़ा, दुर्ग, सरस्वती विद्या केन्द्र, नाशिक, पुणे, मुम्बई, सूरत आदि 11 केन्द्रों पर एक साथ ऑनलाईन आयोजन हुआ।

जिसमें आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के आशीर्वाद से 12 साधुवृंद एवं 56 साध्वीवृंद ने भाग लिया। अवध संगरीला सूरत में आचार्य भगवन् आदि ठाणा, महाराष्ट्र गौरव श्री गौतममुनिजी म.सा. 'बरसादाता' आदि ठाणा, उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री दिव्यज्योतिजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री संयमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री पीयूषदर्शनाजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री सुकीर्तिजी म.सा. आदि ठाणा।

जैन भवन दिल्ली में उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी महासाध्वी डॉ. श्री सरिताजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री श्रेयाजी म.सा. आदि ठाणा, आदीश्वर धाम, कुप्पकलां, पंजाब में श्री आत्मज्ञाताजी म.सा., श्री आत्मदृष्टाजी म.सा., पंजाब वीरांगना महासाध्वी श्री किरणजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री लक्ष्मीजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री प्राचीजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री सम्बोधिजी म.सा. आदि ठाणा, महासाध्वी श्री शिवाजी म.सा. आदि ठाणा।

मंगलम् दुर्ग, छत्तीसगढ़ में महासाध्वी डॉ. श्री विजयश्री जी म.सा. 'आर्या', महासाध्वी श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. 'प्रियदा' आदि ठाणा। क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, लोणीकंद, पुणे में महासाध्वी श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा, अंधेरी, मुम्बई में महासाध्वी श्री पुण्यशीलाजी म.सा. आदि ठाणा, उदयपुर में महासाध्वी श्री मनीषाजी म.सा. आदि ठाणा इस प्रकार सभी सेंटर को मिलाकर एक दिवसीय व चार दिवसीय धर्मयज्ञ में 68

साधु-साध्वी एवं 10 दिवसीय धर्म यज्ञ में 41 साधु-साध्वियों ने सहभाग लिया।

इन्दौर सम्मेलन के पश्चात् अनेक शिविरों में साधु-साध्वियों ने सहभाग लिया, परन्तु संख्या की दृष्टि से यह गंभीर आत्म ज्ञान व भेद विज्ञान का विशेष एक विशाल धर्मयज्ञ आयोजित हुआ, जिसमें सभी साधकों ने स्वरूप बोध, भेद विज्ञान, आत्म ध्यान से शुक्ल ध्यान की विधि प्राप्त की एवं इस जीवन में क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर निकट भवी बनने का लक्ष्य बनाते हुए, उसी दिशा में पुरुषार्थ किया।

सभी ने आचार्य भगवन् एवं वीतराग साधिका निशाजी द्वारा अध्यात्म के रहस्यमय मार्ग को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य किया एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि आपने हम पर अपार कृपा कर यह मार्ग बताया। हम अपने जीवन का अधिकांश समय साधनामय व्यतीत करेंगे, धर्ममय जीव जीने का पुरुषार्थ प्रारंभ किया। अधिकांश साधु-साध्वियों ने शुक्लध्यान के स्वरूप को समझकर आत्म स्थिरता बढ़ाने हेतु संकल्पबद्ध हुए।

सभी साधकों ने विभिन्न केन्द्रों पर साधकों की साधना में सहयोग देते हुए उत्तम साधना की। शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से श्री सुशीलजी जैन ने सभी साधकों कि धर्म यज्ञ में सेवा हेतु हार्दिक अनुमोदना की।

❖❖

हैं धन्य-धन्य ये जैन सन्त

यूं तो दुनियाँ में कई जीव पैदा होते हैं, मरते हैं ।
है धन्य-धन्य ये जैन सन्त, जो महाव्रत पालन करते हैं ।।
ये कनक कामिनी के त्यागी, रात्रि में न कभी खाते हैं ।
कच्चा जल ये पीते नहीं कभी, नहीं ये न्यौते जाते हैं ।
इनकी चर्या है मधुकरणी, गोचरी मांग कर लाते हैं ।
देते सबको ज्ञान-दान, इनके समीप जो आते हैं ।
शेविंग या कटिंग नहीं होती, केशों का लोचन करते हैं ।।
है धन्य-धन्य ये जैन सन्त, जो महाव्रत पालन करते हैं ।।१।।
नहीं करते कभी सवारी, नहीं किसी जीव को सताते हैं ।
मिथ्या भाषण नहीं करे कभी, तिरने का मार्ग बताते हैं ।
हो ज्येष्ठ माह की भीषण गर्मी या सर्दी की ठंडी रात ।
पंखा झलते नहीं न करते आग आदि तपने की बात ।
इनको मरने का खौफ नहीं, केवल पापों से डरते हैं ।।
है धन्य-धन्य ये जैन सन्त, जो महाव्रत पालन करते हैं ।।२।।
कोई करते वन्दन-पूजन कोई गाली दे जाते हैं ।
नहीं देते आशीर्वाद इसे नहीं उसको शाप सुनाते हैं ।
इनका नहीं कोई घर बंगला नहीं भाई-बहन भतीजा है ।
केवल उनसे स्नेह है इन्हें, जिसने दुगुर्ण को जीता है ।
इनके चरणों की रज लेकर मोती मस्तक पर धरते हैं ।।
है धन्य-धन्य ये जैन सन्त, जो महाव्रत पालन करते हैं ।।३।।

दुनियाँ के ढंग देखो कैसे बदल रहे हैं ।

-सिद्धांताचार्य डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

दुनियाँ के ढंग देखो कैसे बदल रहे हैं।
धर्मात्मा थे जो वो पापों में ढल रहे हैं।।ध्रुव।।
सुनते थे राम-लक्ष्मण भाइयों का प्यार अनूठा।
भाई से भाई देखो अब रोज लड़ रहे हैं।।१।।
पुत्र पिता की रक्षा करते थे प्राण देकर।
पुत्रों के हाथ अब तो पिता मर रहे हैं।।२।।
आज्ञा बिना गुरु की, न करते थे शिष्य भोजन।
अब गुरु है बैठे रोते, शिष्य मौज कर रहे हैं।।३।।
दीखे न अंग कोई वस्त्र पहनते ऐसे।
अब बदन अर्द्धनग्न है, फैशन वो चल रहे हैं।।४।।
बढ़ता यदि पड़ौसी खुशियों में झूमते थे।
अब देखलो पड़ौसी-पड़ौसी से जल रहे हैं।।५।।
हैं मंदिर में 'निर्भय' दिन-रात पाप होते।
भगवान् मंदिरों के भगतों से डर रहे हैं।।६।।

स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

कवि, प्रवर्तक, पण्डित रत्न पूज्य श्री सूर्यमुनिजी म.सा.

'आलोट' ग्राम के श्री वच्छराजजी पीपाड़ा-श्रीमती फूलाँबाई के संतानें हुई, पर जीवित नहीं रही। वि.सं.1958, वैशाख पूर्णिमा को एक बालक भेरूलाल का जन्म हुआ। भेरूलाल के बाद एक पुत्र गिरधारीलाल और एक पुत्री हुई पर वे भी जल्दी ही चल बसे। भेरूलाल पाँच-छह वर्ष के हो चुके थे।

मातृ-वियोग : भेरूलाल शैशवावस्था पार कर बाल्यावस्था से गुजर रहे थे। फूलकुँवरबाई अकस्मात् अस्वस्थ हो चल बसी। भेरूलाल को माता के वियोग से बड़ा दुःख हुआ। कुछ दिन बाद बालिका चल बसी और फिर गिरधारीलाल की भी मृत्यु हो गयी। अब बालक भेरू ही पिता के लिये सर्वस्व था।

पिता की विरक्ति : पत्नी के वियोग के समय वच्छराजजी की उम्र लगभग अड़तीस वर्ष की थी। उन्होंने अपनी सन्तानों को भी जाते देखा था और पत्नी को भी। उन्हें मानव शरीर पानी के बुलबुले जैसा लगा। सन्त-समागम भी आलोट में प्रायः प्राप्त होता रहता था। संतगण स्थानक के अभाव में उनके घर पर ही विराजते थे। वच्छराजजी के हृदय में विरक्ति के भाव पनप रहे थे। आपके पिता जबरचन्दजी ने पूज्यश्री मोखमसिंहजी म.सा. से धर्मज्ञान पाया था, आपने पूज्य श्री नन्दलालजी म.सा. से। वच्छराजजी ने पक्का निर्णय लिया गृहत्याग का। बालक भेरूलालजी भी सहज भाव से पिता के संग दीक्षा लेने सहर्ष तैयार हो गये। यह बात फैलने लगी। वच्छराजजी की तीन बहनें थीं। तालवाली बहन चम्पाबाई तुरन्त भाई के पास आई तथा उपालम्भ देने लगी। उसने एक चतुराई की। वह वहीं रह गई। अपने भतीजे पर लाड-प्यार की वर्षा कर दी। भतीजे से इधर-उधर से ढुंढवा कर मकान का पट्टा अपने अधिकार में कर लिया। उन्होंने बहन को समझाया, पर वह टस से मस नहीं हुई। इस घटना से वच्छराजजी का वैराग्य और पुष्ट हो गया। अपने मकान को स्थानक के रूप में दान में देने उनकी इच्छा पूर्ण न हुई।

गुरुदेव के पास : वच्छराजजी ने अब अपने गुरुदेव के समीप जाना उचित समझा। वि.सं. 1967 में अपने पुत्र भेरूलालजी तथा अपने मित्र जीतमलजी और उनके दो सुपुत्र कन्हैयालालजी, हीरालालजी के संग पूज्यश्री नन्दलालजी म.सा. के समीप खाचरोद आये। उस वर्ष का श्री ताराचंदजी म.सा. आदि संतों का चातुर्मास बदनावर में था और जीतमलजी उनके शिष्य बनना चाहते थे। इसलिए पाँचों वैरागी बदनावर में उनके पास रहे। वैरागी श्रमणोचित्त क्रियाओं का ज्ञान और आवश्यक ज्ञान का उपार्जन करने लगे। वर्षावास के बाद बखतगढ़ में उनकी दीक्षा वि.सं. 1967 महासुदी 5 को दीक्षा देने का निर्णय लिया गया।

दीक्षा की तैयारी और विघ्न : दीक्षा के इस निर्णय से आस-पास के क्षेत्रों में प्रसन्नता छा गई। पूज्यश्री और अन्य सन्त-सतीवर्ग बखतगढ़ में पधार गये थे। कुछ विघ्न संतोषियों को यह उत्साह का प्रसंग रूचा नहीं। उन्होंने जाकर धार नरेश से शिकायत की, राजा ने बखतगढ़ के ठाकुर के पास दीक्षा रोकने का आदेश भेजा। दीक्षा-कार्य में अग्रणी श्री नंदरामजी डांगी थे। ठाकुर ने उन्हें बुलाकर डाँटा। दीक्षा पर प्रतिबंध लगा दिया गया। भेरूलालजी, कन्हैयालालजी और हीरालालजी को महल में रख लिया गया। संघ में उदासीनता छा गई। ठाकुर ने उन बच्चों के मामाओं के पास सूचना भेजी। कन्हैयालालजी और हीरालालजी के मामा आये और वे उन्हें ले गये, परन्तु भेरूलालजी के मामा नहीं आये। वे महल में एक महीने तक रहे पर उन्हें वहाँ अच्छा नहीं लगा। ठाकुर ने बालक की निर्लिप्तता देखी तथा सोचा- इसे त्याग मार्ग से रोकना अन्याय है। उन्होंने नंदरामजी डांगी को बालक सुपुर्द करते हुए कहा- 'यह बच्चा साधु बनेगा पर इसकी दीक्षा धार रियासत में मत करना।'

श्री नंदरामजी उन्हें घर ले आये। महल से छूटने पर भेरूलालजी वहीं रहे। समयांतर में श्री नंदरामजी के पुत्र श्री मूलचंदजी डाँगी आदि की भी आपके प्रति वैसी ही भक्ति रही।

दीक्षा और प्रथम चातुर्मास : इस घटना के बाद पूज्यश्री धार की ओर पधार गये। वहाँ जीतमलजी ने दीक्षा ग्रहण कर ली। इसके बाद पूज्यश्री उज्जैन पधारे। वहाँ वि. सं.1968,ज्येष्ठ सुदी 5 को वच्छराजजी ने अपने पुत्र भेरूलालजी के संग प्रव्रज्या स्वीकार कर ली। बालमुनि का नाम श्री सूर्यमुनिजी रखा गया। उस समय श्री सौभाग्यमलजी म. आपसे कुछ वर्ष की वय में बड़े होते हुए भी बाल्यकाल में ही थे। बाल मुनियों का यथोचित अध्ययन चलने लगा।

शाजापुर-संघ की ओर से पूज्यश्री के उधर पदार्पण के लिए आग्रहभरी विनती थी। चातुर्मास की भी स्वीकृति हो गई। बालमुनिश्री सूर्यमुनिजी म.का वह प्रथम चातुर्मास था। अभी बच्चे तो थे ही और साधुत्व भी पूरी तरह समझ में नहीं

आया था। तथापि साधु-मर्यादा में बहुत कुछ समझते थे परंतु बाल्यावस्था अपना प्रभाव दिखा ही देती थी। आप बाल सुलभ क्रीड़ा में लग जाते थे। उस समय अन्य स्थविरमुनि आपको समझाते- 'भाई! आप साधु हैं। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।' तब हँसते हुए कहते- 'अच्छा, नहीं करना चाहिए' और आप चुप हो जाते थे।

वहाँ के मुखिया श्रावक थे - सेठ सूरजमलजी पोरवाल। वे सम्पन्न थे, उनमें जो गुण थे, वे धनिक व्यक्तियों में विरले ही मिलते हैं, आपके पुत्र का नाम राजमलजी था। उस समय वे भी बालक थे। वह इन मुनियों के पास आ जाता था और उनकी बाल-क्रीड़ा में सम्मिलित हो जाता था। एक बार बालमुनि और उसमें तकरार हो गई। नौकर ने यह दृश्य देखा। उसने जाकर सेठजी से शिकायत की- 'सेठ साहब! बाबूसा छोटे महाराज से कुश्ती लड़ रहे हैं।' सेठजी ने हँस कर कहा- 'अच्छा, महाराज से ही कुश्ती लड़ रहा है न! कोई बात नहीं! जाओ तुम अपना काम देखो।' वे श्रावक इतने गम्भीर प्रकृति के थे, उन्होंने इस बात को कुछ भी महत्व नहीं दिया। स्थविर मुनियों के सिखाने-समझाने पर बालमुनि उसी चातुर्मास में अपने पद का गौरव समझ गये।

विध्याध्ययन और शास्त्राध्ययन : अब बालमुनि विद्याध्ययन में लगे। हिन्दी एवं व्याकरण का कुछ समय तक अध्ययन करने के बाद, लघु-सिद्धांत कौमुदी का अभ्यास प्रारम्भ किया। 'दसवेयालिय' और 'उत्तराज्झयण' सूत्र आपने कण्ठस्थ कर लिये और कई थोकड़े भी। धीरे-धीरे समस्त सूत्रों के अर्थ का अध्ययन किया। थोकड़े सीखने की इतनी लगन थी कि रतलाम में देर रात्रि तक सीखते रहते थे और जब भी निद्रा खुलती दुहराना और सीखना प्रारम्भ कर देते थे। पिंगल (कविता सम्बंधी नियम) का अध्ययन तो बाद में किया परन्तु तुकबन्दी करने का बचपन से ही शौक था। आपका जीवन अध्ययनशील रहा। अन्तिम समय के पूर्व तक अध्ययन और नूतन साहित्य का निर्माण चलता ही रहा।

उग्र विहार और अगले चातुर्मास : आपको लगभग ग्यारह वर्ष की आयु में ही उग्र विहार का अनुभव हो गया। आपकी दीक्षा को पूरा एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि पूज्यश्री ने मारवाड़ की ओर विहार कर दिया। आपका दूसरा चातुर्मास जोधपुर में हुआ। वहाँ कुछ विशेष अनुभव हुए। उस चातुर्मास के बाद राजस्थान में ही विचरण हुआ। तीसरा चातुर्मास किशनगढ़ (राजस्थान) में हुआ। वहाँ चातुर्मास के पूर्व शास्त्रार्थ का दृश्य देखने को मिला, जिससे आपके हृदय में ज्ञान की महिमा अंकित हो गई। जब संवेगी साधु, स्थानकवासी सन्तों को रास्ते में रोक कर प्रश्न करने लगे, तब आपने कह दिया- 'यों रास्ते में क्या पूछते हैं आप? वहाँ स्थानक में आकर पूछो तो सब पता चल जाएगा।' इस प्रकार शास्त्रार्थ का बीज पड़ गया था। जिसके परिणाम स्वरूप शास्त्रार्थ हुआ।

किशनगढ़-चातुर्मास के पश्चात् पूज्यश्री ने मालवा की ओर विहार किया और वि.सं. 1971 का चातुर्मास इन्दौर में किया। फिर मालवा में विचरण करते हुए, डूंगर प्रदेश में पधारे। चातुर्मास थांदला में हुआ। बालमुनियों के पास बालमण्डली खूब जमती थी। उस बालमण्डली में कुछ सुरीले कण्ठ वाले बालक भी थे। वे प्रतिक्रमण के बाद भजनों का रंग जमाते थे। बालमुनि भी भजनों में सम्मिलित होते थे। यों तो श्री सूर्यमुनिजी म. किशनगढ़ से ही भजन बनाने लग गये थे, परन्तु थाँदला में इस प्रवृत्ति में विशेष बल मिला और कवि नाम से पुकारे जाने लगे।

सन्त दूसरे दिन दाणी पिपलिया पहुँचे। वहाँ जैनों के कुछ घर हैं। केसरीमलजी वहाँ के अग्रणी व्यक्ति थे। सन्तों के बीते दिनों की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए विचार किया कि 'आगे विकट रास्ता है (उस समय बाँसवाड़ा की सड़क नहीं बनी थी।) यदि साथ में कोई इस प्रदेश का परिचित मार्गदर्शक रहे तो अच्छा।' उन्होंने अपने विचार केसरीमलजी से कहे। अपरान्ह में विहार के समय केसरीमलजी साथ हो लिये। अगले किसी गाँव में रात को रहना था। सन्तों ने, जिस गाँव में रात को ठहरना था, वहाँ से कुछ दूर ठहरकर, पानी आदि चुकाया। केसरीमलजी भी वहीं ठहर गये। वे बोले- 'महाराज! चिन्ता जैसी कोई बात नहीं है। यह गाँव है तो भीलों का पर मेरे परिचित हैं। रात बिताने के लिए रहने योग्य जगह मिल ही जायेगी।'

कुछ देर बाद केसरीमलजी के साथ सन्तों ने उस गाँव में प्रवेश किया। वह भीलों की ही बस्ती थी। गाँव में एक भी आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। जैसे कथाओं या चरित्रों में किसी कारण से शून्य बनी नगरियों का वर्णन आता है, वैसा ही दृश्य यहाँ भी दिखाई दे रहा था। सन्तगण और केसरीमलजी आश्चर्यचकित थे। केसरीमलजी बड़बड़ाते जा रहे थे- 'न जाने क्यों, सब के सब कहाँ चले गये हैं?' केसरीमलजी के कहने पर सन्तों ने एक छत के नीचे डेरा डाला।

कुछ क्षणों के बाद एक भील आया। उसकी पीठ पर तीरों का भारा था और दूसरी और ढाल थी। एक हाथ में धनुष

था। कमर में तलवार लटक रही थी। आँखें लाल हो रही थी। केसरीमलजी ने उसे पहचाना और नाम लेकर के पुकारा। फिर उसे कहा- 'भाई! तुम आ गये। कहाँ गये हैं सब?' उसने आँखें तरेर कर सिर्फ 'हूँऽऽ' कहा। वह केसरीमलजी की ओर घूर रहा था। मानों अभी सबको निगल जायेगा। केसरीमलजी को स्थिति कुछ विपरीत लगी। इसलिए उसकी मिन्नत करते हुए बोले - 'भाई बोलो तो सही। हुआ क्या है? ऐसे क्यों घूर रहे हो।' वह नाराजगी बताता हुआ अपनी भाषा में बोला - 'सेठ? तुझे ऐसा नहीं जाना था, कि तू यों विश्वासघात करेगा!' केसरीमलजी उसकी ओर ताक रहे थे। वह सन्तों की ओर संकेत करके बोला- 'बताओ, ये कौन है? सच-सच बताना।' केसरीमलजी बोले- 'ये तो हमारे गुरु हैं।' उसने अविश्वास से कहा- 'क्या कहा- ये साधु बाबा हैं? तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो? यह खूफिया पुलिस तो नहीं है? बात यही थी कि उस गाँव में कुछ लुटेरे भी रहते थे। अतः उन भीलों को सतर्क रहना पड़ता था। सन्तों ने भ्रम मिटाना आवश्यक समझा, बोले- 'भाई! हम पुलिस नहीं हैं। हम तो जैन साधु हैं। हम पैसा-कौड़ी, शस्त्र आदि कुछ भी नहीं रखते हैं, पैदल ही चलते हैं। हमें बाँसवाड़ा जाना है। रात भर यहाँ ठहरेंगे और सुबह में यहाँ से चले जायेंगे। क्या कभी तुम सैलाना हाट करने जाते हो? वहाँ हमारे जैसे जैन साधुओं को तुमने नहीं देखा? गुरुदेव भी उसे समझाने में भाग ले रहे थे। उस भील को सैलाना के नाम से कुछ याद आया। वह कुछ नरम पड़ा। फिर बह बोला- 'आपने ये क्या बाँध रखे हैं?' उसने शास्त्रों के डिब्बे और पात्रों की ओर इशारा किया।

संतों ने कहा- 'ये हमारे पात्र हैं, भोजन और पानी रखने के लिए और ये पढ़ने की पोथियाँ हैं।' डिब्बे और झोलियाँ खोलकर उसे शास्त्र और पात्र बताये, तब उसे विश्वास हुआ। वह बोला- 'सेठ! मैं नहीं आता तो गजब हो जाता। आज रात में हम लोग आप सबके टुकड़े-टुकड़े कर डालते। हमने तो यही समझा था कि सेठ ने हमारे साथ धोखा किया है। तुम हमें पकड़वाने के लिए छुपे वेष में पुलिस को ले आये हो। हमारे एक आदमी ने यह खबर दी, तब हम जैसे खड़े थे, वैसे ही भाग गये। बीमार, बच्चे और वृद्धों तक को उठाकर ले गये। अब मेरा भ्रम मिट गया। अभी लोगों को बुलाता हूँ।' उसकी बात सुनकर सबके रोंगटे खड़े हो गये। वह बाहर गया और लोगों को पुकारने लगा। वह कह रहा था- 'कोई भय नहीं है। आ जाओ।' पर लोग उल्टा ही समझे, कि वह पकड़ लिया गया है और पुलिस के दबाव से ऐसा बोल रहा है या वह भी उनसे मिल गया है। लोग और दूर भाग गये। जब भील ने देखा कि कोई भी नहीं आ रहा है, तब उसे साधुओं की सुरक्षा की चिंता हुई। उसने कहा- 'आप कुछ चिंता न करें। आपका बाल भी बाँका नहीं होगा।' वह चारों ओर घूमते हुए पहरा देने लगा। सन्त अपनी क्रिया करते रहे। रात बीती, सूर्योदय हुआ। सन्त कमर कस कर चल दिये। रास्ते में गाँव की ओर आते हुए स्त्री-पुरुष मिल रहे थे। कोई खटिया में बीमार और वृद्ध को उठाकर ला रहे थे तो कोई बच्चों को कन्धों पर उठाए हुए और कोई पीठ पर लादे हुए थे। वे सन्तों को देख-देख कर हैरान हो रहे थे। कोई-कोई तो अपने भ्रम पर खिलखिला कर हँस पड़ते और कहते थे- 'भारी आये महाराज! सारी रात हम मारे-मारे फिरते रहे।'

एक साहस : वि.सं.1993 की बात है। गुरुदेव विचरण करते हुए रायचूर पधारे। चार संत थे- बड़े महाराज वच्छराजजी, गुरुदेव श्री केसरीमलजी म. और श्री माणकमुनिजी म., लोगों ने संतों का भावभीना स्वागत किया। संतों ने प्रवचन दिया, यथासमय आहार लाये। आहार करने के लिए बैठ ही रहे थे कि बकरे की करूण चीत्कारों से वातावरण करूणार्द्र बन गया। बात यह थी कि वहाँ कोई उत्सव था। उस उत्सव में हर चौराहे पर बकरे की बलि चढ़ाने के लिए, उसे खींचकर ले जाया जा रहा था सन्तों को उन चीत्कारों ने हिला दिया, हृदय करूणा से भर गया। सभी सन्तों के मन में यह भाव व्याप्त हो गया 'ऐसे समय में क्या आहार करना?'

सभी सन्त बाहर आ गये। बकरे को घसीट कर ले जाया जा रहा था। यह करूण दृश्य गुरुदेव से देखा नहीं गया, वे स्थानक से नीचे उतरे, भीड़ को चीरते हुए, उस बकरे वाले के समीप चले गये। लोग कौतूहल से ताक रहे थे। गुरुदेव ने कहा- 'यहाँ तुम बकरे की बलि नहीं चढ़ा सकते हो।' उन्होंने बकरे वाले के हाथ से बकरा छुड़ा लिया और स्थानक की ओर चल दिये। बकरा भी निर्भय होकर, दौड़ता हुआ संग चला आया। लोग देखते रह गये। 'क्या हुआ।'- 'थोड़ी देर तक यह समझ ही नहीं सके। बकरे को स्थानक के भीतर लाकर छोड़ दिया। लोगों की भीड़ जमा हो गई।

संत बाहर खड़े थे। बलि चढ़ाने वाले लोग भी वहाँ आ पहुँचे। वे बकरे की माँग करने लगे। गुरुदेव ने कहा- 'अब बकरा नहीं मिल सकता है।' लोग बोले- 'यह हमारे धर्म का कार्य है। आप इसे कैसे रोक सकते हैं?' गुरुदेव बोले- 'सच्चा धर्म जीव की हिंसा करना नहीं सिखलाता है। किसी जीव की हिंसा करना धर्म नहीं है।' इधर यह वाद-विवाद हो

रहा था। उधर जैन लोगों को भी इस बात का पता लग गया। वे भी वहाँ आ गये। अन्य लोग कह रहे थे 'आप हमें बकरा दे दीजिए। सदा ही हम बलिदान करते आये हैं। यह कार्य रोकने वाले आप कौन होते हैं? यदि आप बकरा नहीं देंगे तो आपके ऊपर देव का कोप उतरेगा।' गुरुदेव बोले- 'देव-कोप की चिन्ता तुम मत करो। हम कौन हैं? हम भी तुम्हारे जैसे मनुष्य हैं और मनुष्यता के नाते हमें हिंसा रोकने का अधिकार है।' लोगों में तनाव बढ़ रहा था। जैन-जनता में घबराहट व्याप्त हो रही थी। पर वे ऐसा कह नहीं सकते थे, कि बकरे को लौटा दीजिए। अतः वे लोगों को समझाते हुए बोले- 'तुम्हें हम बकरे के बदले मिठाई दे देते हैं। अब यह झगड़ा समाप्त करो।' गुरुदेव ने कहा- आप बीच में मत बोलिए, हम इनसे निपट लेंगे।' लोगों को भय था कि कहीं कुछ अनिष्ट न हो जाये।

मुस्लिम राज्य था। मुसलमान भाई भी उस भीड़ में जमा हो गये थे। वे बोले- 'आप इनके धर्म के काम में बाधा क्यों डाल रहे हैं? इनका बकरा इन्हें दे दीजिए।' गुरुदेव ने मुसकराते हुए कहा- 'अच्छा भाई! मैं तुम से एक बात पूछूँ- बाजे बजाना हिंदू धर्म से सम्मत है।

यदि कोई बाजे बजाते हुए, तुम्हारी मस्जिद के सामने से निकले तो उन्हें निकलने दोगे?' मुस्लिम भाई बोला- 'नहीं, हम ऐसा नहीं होने देंगे।' गुरुदेव ने दूसरा तर्क दिया- क्या आप मस्जिद के सामने कुर्बानी करते हो?' 'नहीं करते।' गुरुदेव ने कहा- 'तो भाई! यह हमारा धर्म स्थान है। यहाँ हम हिंसा कैसे होने दे सकते हैं?' मुस्लिम भाई निरूत्तर हो गये। वहाँ मुस्लिम अधिकारी भी आ गये थे, परन्तु उनका समाधान होने पर वे चले गये।

आखिर जनता बिखर गई। बकरे को अभयदान मिल गया। सुना है कि उस चौराहे पर फिर कभी बलि नहीं हुई।

मैं व्याख्यान में नहीं आऊंगी : श्री चापसी-धर्मसी भाई की बहन कच्छ से या अन्यत्र कहीं से वहाँ आई थी। उनके परिवार वाले व्याख्यान श्रवण करने आ रहे थे। बहन ने पूछा- 'कहाँ जा रहे हो?' 'व्याख्यान सुनने के लिए।' 'यहाँ कोई साधु है क्या? कौन साधु हैं।' 'स्थानकवासी सन्त हैं।' बहन ने तुनककर कहा 'हूँ! ढूँढिये हैं!' 'बहन! व्याख्यान सुनने चलो तो सही।' बहन ने मुँह मरोड़कर कहा- 'ना, ना, मैं ढूंढियों का व्याख्यान सुनने नहीं आऊँगी।' बहन घर पर बैठी रही और सभी पारिवारिकजन व्याख्यान में आ गये। इस प्रकार कुछ दिन बीत गये। बहन को कौतुहल हुआ कि- 'इन ढूंढियों के व्याख्यान में ऐसा है क्या? जो ये मुझे छोड़कर वहाँ चले जाते हैं!' एक दिन बहन ने कहा- 'चलो, देखें आज मैं भी चलूँ। ऐसा क्या है उनके व्याख्यान में!' वह व्याख्यान में आई। पहले तो अनमनी सी बैठी रही। पर व्याख्यान समाप्त होते-होते तो उसकी अरूचि और घृणा सब समाप्त हो गई। अब वह प्रतिदिन व्याख्यान में आने लगी। एक दिन वह महाराज श्री के पास आई और बोली- 'महाराज! मुझे क्षमा करना। मैंने आपकी बहुत आशातना की है। मैंने आपको धर्म से भ्रष्ट करने वाला माना था परन्तु आपके व्याख्यान सुनकर मेरा सब भ्रम मिट गया।'

देह परित्याग : बदनावर श्रीसंघ ने गुरुदेव के स्थिरवास का लाभ लेते हुए लगातार सात वर्ष तक अटूट भक्ति से गुरुदेव की सेवा तथा वैयावृत्य का अपूर्व लाभ लिया। गुरुदेव की दूसरी आँख में मोतियाबिंदु पक गया था। स्वाध्याय करने में कठिनाई पड़ती थी। वि.सं. 2038 में उसकी भी शल्य चिकित्सा हुई। मोतिया निकाल दिया गया। गुरुदेव प्रसन्न थे। कोई रूग्णता थी ही नहीं। वृद्धावस्था के कारण दैहिक दुर्बलता थी। अचानक ही एक दिन स्थानक के पीछे आंगन में आप गिर पड़े। जंघा का अस्थि-भंग हो गया। फागुन सुदि का समय होगा। डॉक्टरों की दृष्टि से ऑपरेशन सफल हुआ। एकाध दिन बाद गुरुदेव ने मुझसे कुछ कहा। फिर बोलना बिलकुल बंद कर दिया।

आशा-निराशा का समय चल रहा था। (ऑक्सीजन दी जा रही थी। चैत्र शुक्ला 7 (वि.सं.2039) प्रातःकाल चार बजे के लगभग गुरुदेव ने एक बार आँख खोलीं। मैं लोगस्स का पाठ सुना रहा था। मुझे देखा और फिर आँखें बंद कर लीं। फिर लगभग एक प्रहर दिन बाद हमने डॉक्टरों से कहा- 'अब हमें आशा नहीं है। ये यंत्र हट जायें तो हम अंतिम आराधना करवा दें।' यंत्र हटा लिये गये। आलोचना सुनायी गयी।

अस्पताल में आगम-पाठ न बोलकर प्रतिक्रमण के पाठों से श्री कानमुनिजी म. ने महाव्रतारोपण करवायी। लगभग दो बजे के उपरांत समय में जब महाराजश्री ने महाव्रतारोपण के बाद यह कहा कि 'अब आप बिल्कुल शुद्ध हो गये हैं।' तब गुरुदेव ने अचानक आँख खोलीं। फिर कुछ क्षण के बाद ही आत्मा ने तन-पिंजर छोड़ दिया। गुरुदेव का पार्थिव शरीर विधि-पूर्वक वोसिरा कर श्रीसंघ के सुपुर्द किया।

कवि, प्रवर्तक संयमी साधक को शत-शत नमन ! हार्दिक भक्तिभाव युक्त श्रद्धार्पण ! ❖❖

तत्व बोध

- आचार्य श्री महाप्रज्ञजी म.सा.

क्रोध के आवेश में शरीर की भी बहुत हानि होती है, मन की भी हानि होती है और भाव भी बिगड़ते हैं । धार्मिक आदमी को तो इस पर विशेष चिंतन करना है कि तीव्रता न हो । सामायिक की, पूजापाठ किया, धर्मस्थान में आराधना कर घर में गए और लड़ाई शुरू कर दी । आज बहुत सारे लोगों को ऐसे विचार आते हैं कि हम क्या करें ? धर्म को कैसे समझे ? हमारे घर के कई लोग सामायिक और धर्मस्थान करते हैं, पूजा-पाठ करते हैं और घर में सबसे ज्यादा असामान्य व्यवहार उन्हीं का होता है, लड़ाई-झगड़ा हमेशा वे ज्यादा करते हैं । यह एक बड़ा प्रश्न है ।

आखिर धर्म का क्या फल होना चाहिए ? धर्म का क्या परिणाम होना चाहिए ? हमें कोई भेदरेखा खींचनी चाहिए कि यह व्यक्ति धर्म की आराधना करता है, तो गलत कार्य करेगा या कम करेगा । धार्मिक और अधार्मिक इन दोनों के जीवन में क्या अन्तर होना चाहिये ? जीवन शैली दोनों की समान है । दोनों का दैनंदिन व्यवहार वैसा ही है तो फिर धर्म का क्या अर्थ रहा ? उसका फलित क्या रहा ? बाजार में जाकर हम देखें । एक दुकान उस व्यक्ति की है जो धर्म का कभी नाम नहीं लेता, पूजा-उपासना से जिकसा कभी वास्ता नहीं रहा और उसके पास में दूसरी दुकान उस व्यक्ति की है, जो दिन-रात धर्म की उपासना में व्यस्त रहता है । लोगों की दृष्टि में वह धर्म का सबसे बड़ा आराधक है, किन्तु जब नैतिकता का प्रश्न आता है तो कोई किसी से कम नहीं है ।

अब प्रश्न होता है कि धर्म करने वाले में और न करने वाले में अन्तर क्या है ? भेदरेखा कहाँ खींची जा सकती है ? एक धारणा ही ऐसी बन गई है कि धर्म करो, परलोक सुधर जाएगा, स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होगी । आचार्य तुलसी कहा करते थे कि पहले अपने पैर के नीचे की आग को देखो, पहाड़ की आग को मत देखो । तुम्हारे पैरों के नीचे क्या हो रहा है ? तुम्हारा वर्तमान का जीवन कैसा है ? अगर वर्तमान जीवन अच्छा नहीं है तो भावी जीवन अच्छा हो जायेगा, यह एक बहुत बड़ी भ्रांति है । कैसे होगा ? कभी नहीं होगा । यह मात्र दिवास्वप्न है ।

धर्म के क्षेत्र में भी बड़ी भ्रांतियां चल रही है कि यह करो तो ऐसा हो जाएगा, वह करो तो वैसा हो जाएगा । ऐसा संभव नहीं है । वर्तमान के जीवन में अंधकार है तो आगे प्रकाश नहीं मिलेगा । वहाँ भी अंधकार ही पाओगे । धर्म की पहली कसौटी है- आचार और आचार में भी नैतिकता का आचरण । प्रामाणिकता, ईमानदारी, सच्चाई जिसके जीवन में है, उसे फिर कोई दूसरी चिंता नहीं करनी चाहिए । उसे फिर किसी देव या धर्मस्थान की शरण लेने की जरूरत नहीं है । किसी धर्म का लोकाचार निभाने की आवश्यकता नहीं है । कोई जरुरत नहीं है- फिर किसी प्रकार के क्रियाकांड की । लेकिन हमारे जीवन की सबसे कड़ी कठिनाई है, समूचे धर्म जगत् की कठिनाई है कि हम सच्चाई पर कम ध्यान देते हैं । हमारे धर्मगुरु भी इस पर कम ध्यान देते हैं ।

एषणा का भी बोध आवश्यक

एषणा से युक्त साधु आहार ग्रहण करें । पंचसूत्रम् में कहा है -

नाहाराय न पानाय, नाश्रयाय न वाससे ।
अस्माभिः स्वीकृता दीक्षा,न प्रतिष्ठोपलब्धये ।।
आत्मोदयाय साधुत्वमस्माभिः स्वीकृतं शुभम् ।

साधु क्यों बनें हैं ? न आहार के लिए, न पानी के लिए, न वस्त्र के लिए, न प्रतिष्ठा के लिए । इन सबके लिए साधु नहीं बने हैं, साधना के लिए साधु बने हैं । इसलिये साधना के अनुरूप ही एषणा की प्रवृत्ति हो । शुद्ध आहार भी लेना है तो दाता का अभिप्राय देखकर लें । यह देखें कि पीछे भी खाने वाले हैं । अभी साधु-साध्वियों की संख्या बहुत है, इसलिए इस संदर्भ में और ज्यादा ध्यान देना है ।

श्रावक के व्रत का नाम है- अतिथि संविभाग । कम से कम संविभाग होना चाहिए, विसंविभाग नहीं होना चाहिए । या तो यह हो कि आधा भूखा गृहस्थ रहे, आधा भूखा साधु रहे, तब तो संविभाग होता है । साधु तो पूरा खाए और गृहस्थ भूखा रहे, यह तो विसंविभाग हो गया । यह अच्छा नहीं होता । कितना लेना है, इसका विवेक या संविभाग बहुत आवश्यक है ।

यह नहीं होना चाहिए कि हमारी जरूरत है । जरूरत पर नहीं, पूरी पूछताछ के बाद विवेक के साथ यह काम करना जरुरी है । श्रावक को भी यह मोह नहीं होना चाहिए कि इतने साधु (ठाणे) है, कैसे काम चलेगा ? ❖❖

आगम दर्पण

प्रस्तुति - छत्तीसगढ़ प्रवर्तक पू. श्री रतनमुनिजी म.सा.

भूमिका : यदि मनुष्य को वास्तव में परम सुख प्राप्त करना है तो वह अपने जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान का विकास करें। वर्तमान में यह ज्ञान हम आगम ग्रंथों से ही प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार वैदिक शास्त्रों को वेद और बौद्ध शास्त्रों को पिटक कहते हैं, उसी प्रकार जैन शास्त्रों को आगम, श्रुत अथवा सूत्र कहते हैं। जैनागम आध्यात्मिक ज्ञान का अथाह सागर है, जिसमें शांतिमय जीवन जीने की पद्धतियाँ व निर्विघ्न सुख-प्राप्ति के उपाय बताए गए हैं।

तीर्थंकर परमात्मा से उत्पन्न अर्थज्ञान ही आगम है। वर्तमान अवसर्पिणीकाल में हमारे समक्ष जो आगम उपलब्ध हैं उनमें वर्णित तत्त्वज्ञान, आत्मज्ञान और आचार-व्यवहार की बातें भगवान महावीर की उपदेश वाणी के रुप में स्वीकृत की गई है, जिनका संकलन आर्य सुधर्मा स्वामी ने किया है।

प्रभावक चरित के अनुसार वर्तमान में जैनागमों को अंग, उपांग, मूल सूत्र व छेद सूत्र में बाँटा गया है। जैन आगम साहित्य की संख्या को लेकर श्वेताम्बर समाज के विभिन्न सम्प्रदायों में मतभेद है। कोई आगमों की संख्या 84 मानते हैं तो कोई 45 तो कोई 32 ही मानते हैं।

वर्तमान स्थानकवासी परम्परा में आगमों की संख्या 32 मानी गई है, जो इस प्रकार है - 11 अंग सूत्र, 12 उपांग सूत्र, 4 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र और एक आवश्यक सूत्र।

जैनागम एक अक्षय कोष है, जिसमें एक से एक दिव्य असंख्य मणिमुक्ताएँ छिपी हुई हैं। उनमें केवल अध्यात्म और वैराग्य का ही उपदेश नहीं है बल्कि भूगोल, खगोल, गणित, दर्शन, नीति, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, संगीत, आयुर्वेद और नाटक जैसे जीवन के विभिन्न पहलुओं को गाम्भीर्य रूप से दर्शाया गया है। इन सभी विषयों पर अच्छी तरह जानकारी प्राप्त करने के लिए इनके अध्ययन में गहरी डुबकी लगानी होगी। केवल किनारे-किनारे घूमने से इस अमूल्य रत्न राशि के दर्शन नहीं हो सकते हैं।

अगले अध्यायों में 32 आगमों का संक्षिप्त स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें सर्वप्रथम अंगप्रविष्ट साहित्य का तत्पश्चात् अंग बाह्य आगम साहित्य का परिचय है।

श्री आचारांग सूत्र : आचारांग सूत्र द्वादशांगी का सबसे प्राचीन आगम है। श्रमण-जीवन के आधारभूत इस ग्रंथ में मोक्ष प्राप्ति का उपाय बताया गया है। आचारांग सूत्र के अध्ययन से नवदीक्षित मुनि को श्रमण-धर्म का परिज्ञान होता है। वर्तमान में उपलब्ध आचारांग सूत्र दो श्रुतस्कंधों में विभक्त है जिनमें से प्रथम श्रुतस्कंध के 9 अध्ययन हैं।

पहले अध्ययन **'शस्त्रपरिज्ञा'** में सात उद्देशक हैं। पहले उद्देशक का प्रारंभ दर्शन के मूलभूत प्रश्न से होता है। यह प्रश्न है आत्मा या अस्तित्ववाद? इस उद्देशक में अस्तित्ववाद की संक्षिप्त, सुदृढ़ एवं मनोग्राही स्थापना की गई है। जीव के अस्तित्व के बोध का संज्ञान कराया गया है। आर्य सुधर्मा स्वामी भगवान महावीर का अस्तित्ववाद का सिद्धांत जम्बूस्वामी को समझाते हैं। इस उद्देशक में जीव को हिंसा न करने का उपदेश दिया गया है और शेष छह उद्देशकों में क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, वनस्पति, त्रस और वायुकाय के जीवों की विस्तृत विवेचना करते हुए उनकी रक्षा करने के बारे में बताया गया है।

दूसरा अध्ययन **'लोकविजय'** छह उद्देशकों में विभक्त है जिसमें वैराग्य और संयम साधना को दृढ़ करते हुए जातिगत मिथ्या अहंकार, भोगों में आसक्ति, भोजनादि के निमित्त होने वाले आरम्भ-समारम्भ और ममत्व भाव का परित्याग कर अनासक्त जीवन जीने के बारे में बताया गया है। इस उद्देशक में लोक दो प्रकार के बताये गये हैं - (1) द्रव्य लोक, (2) भाव लोक। जिस क्षेत्र में मनुष्य, पशु-पक्षी आदि जीव रहते हैं, वह द्रव्य लोक कहलाता है और जहाँ क्रोध-मानादि कषाय होते हैं वह भाव लोक कहलाता है।

तीसरे अध्ययन **'शीतोष्णीय'** के चार उद्देशक हैं। यहाँ पर शीत और उष्ण का अर्थ क्रमशः अनुकूल एवं प्रतिकूल परीषहों से है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रसुप्त व्यक्ति के महान् दुःखों का वर्णन करते हुए चित्त-शुद्धि की वृद्धि करने एवं कषाय परिहार कर संयम को उत्कर्ष करने पर विशेष बल दिया गया है।

चौथे अध्ययन **'सम्यक्त्व'** के चार उद्देशक हैं। सभी अध्ययनों में इस अध्ययन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है क्योंकि इसमें अहिंसा, सत्य, दया, धर्म और तप जैसे सद्गुण सम्यक्त्व की विवेचना की गई है। इन चार उद्देशकों में क्रमशः सम्यक्त्ववाद, आर्य-अनार्य, निर्वद्य तप और सम्यक्त्व की

उपलब्धि के लिये प्रयत्न करने का उपदेश दिया गया है।

पाँचवें अध्ययन **'लोकसार'** के छह उद्देशक हैं। समग्र लोक के सारभूत तत्व को धर्म बताया है जिसमें धर्म का सार ज्ञान, ज्ञान का सार संयम और संयम का सार मोक्ष है।

छठे अध्ययन **'धूत'** में पाँच उद्देशक हैं। यहाँ धूत का अर्थ कर्म-निर्जरा से है। इसमें आत्मा पर लगे कर्ममल को हटाकर शुद्ध आत्म स्वरूप प्रकट करने हेतु तप-संयम एवं साधना की सुंदर प्रक्रिया बताई है।

सातवें अध्ययन का नाम **'महापरिज्ञा'** है जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। गुप्त और रहस्यमयी विद्याओं एवं मंत्रों का इस अध्ययन में समावेश था। पूर्वाचार्यों को शायद यह पूर्व ज्ञान एवं आभास हो गया था कि भविष्य में इन महान् विद्याओं का दुरूपयोग हो सकता है। शायद इसी कारण से उन्होंने इस अध्ययन की वाचना देनी बंद कर दी जिसके फलस्वरूप यह अध्ययन आज लुप्त हो गया।

आठवें अध्ययन के दो नाम **'विमोक्ष और विमोह'** है-जिनके आठ उद्देशक हैं। समस्त सांसारिक वस्तुओं के संग से अलग होने को **'विमोक्ष'** तथा मोह से रहित होने को **'विमोह'** कहते हैं। **प्रथम उद्देशक** में श्रमण के अशुद्ध-पान के क्या तरीके हैं, प्रस्तुत उद्देशक में बताये गये हैं। **द्वितीय उद्देशक** में किसी भी परिस्थिति में साधु को अकल्पनीय आहार ग्रहण करने की मनाही की गई है। **तृतीय उद्देशक** में एकचर्या, भिक्षु लक्षण आदि का वर्णन करने के बाद किसी गृहस्थ के मन में श्रमण को देखकर कुछ गलत शंका उत्पन्न हो जाये तो उसका समीचीन रूप से समाधान बताया गया है। **चतुर्थ उद्देशक** में श्रमण के वस्त्र-पात्रादि की मर्यादा का निर्देश दिया है। **पंचम उद्देशक** में श्रमण को अनेक अभिग्रह धारण करके परीषहों को सहन कर सर्वज्ञ द्वारा प्ररूपित धर्म को अपने जीवन में सम्यक् रूप से पालन करने के बारें में बताया गया है।

षष्ठम उद्देशक में श्रमण जीवन के संयम-साधना-नियम व तप आराधना के बारे में बताकर उन्हें अपनी आत्मा का चिंतन किस प्रकार करना चाहिए इस विषय पर कहा गया है। **सप्तम उद्देशक** में प्रतिभाधारी अचेलक श्रमण को 22 परीषहों में से केवल लज्जा परीषह की असमर्थता के लिए कटिबंध को धारण करने के बारे में उल्लेख किया गया है। **अष्टम उद्देशक** में शरीर से अत्यंत निर्बल संयमी साधक को बाह्य-आभ्यंतर बेड़ियों/ग्रन्थियों का परित्याग कर अनशन स्वीकार करके पण्डितमरण का हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है।

नवें अध्ययन **'उपधान श्रुत'** के चार उद्देशक हैं। प्रथम उद्देशक में श्रमण भगवान महावीर के देवदूष्य वस्त्र धारण करने के विषय में बताया है। द्वितीय और तृतीय उद्देशक में भगवान महावीर द्वारा सहन किये जाने वाले असहनीय एवं घोर परीषहों की विवेचना की गई है। चतुर्थ उद्देशक में भगवान महावीर की उग्र तपश्चर्या का वर्णन करते हुए अनार्य देशों में विहार करते समय उन पर जो भीषण उपसर्ग हुए उनका वर्णन है।

आचारांग सूत्र का द्वितीय श्रुतस्कंध पाँच चूलिकाओं में विभक्त है। इनमें से चार चूलिकाएँ ही आचारांग सूत्र में है परन्तु पाँचवी चूलिका वर्तमान में 'निशीथ सूत्र' नाम से उपलब्ध है।

इनमें से प्रथम चूलिका के सात अध्ययन और पच्चीस उद्देशक हैं। प्रथम अध्ययन का नाम **पिण्डैषणा**। द्वितीय अध्ययन **'शय्यैषणा'** में शय्या के सम्बन्ध में, तृतीय अध्ययन **'इर्य्यैषणा'** में श्रमण के चलने की विधि का, चतुर्थ **'भाषैषणा'** अध्ययन में वक्ता के सोलह वचनों का, पंचम् **'वस्त्रैषणा'** अध्ययन में श्रमणों के वस्त्रादि का, षष्ठम् **'पात्रैषणा'** अध्ययन में पात्र ग्रहण विधि का और सप्तम् अध्ययन **'अवग्रह'** में श्रमण के किसी व्यक्ति के मकानादि में रुकने/ठहरने आदि का वर्णन किया गया है।

दूसरी चूलिका के सात अध्ययन हैं, जिनमें कायोत्सर्ग करने हेतु उपर्युक्त स्थान, निशीथिका प्राणी दीर्घ शंका व लघु शंका के स्थान सम्बन्धी, शब्द एवं रूप के प्रति राग-द्वेष न करने का श्रमण के लिए विधान बताया गया है।

तीसरी **'भावना'** नामक चूलिका में भगवान महावीर के चरित्र का वर्णन करते हुए प्रत्येक महाव्रत की पाँच-पाँच भावनाओं का प्रतिपादन किया गया है।

चौथी **'विभक्ति'** नामक चूलिका में आरम्भ और परिग्रह के फल की मीमांसा करते हुए उनसे रहने को कहा गया है।

इस प्रकार आचारांग सूत्र में श्रमणों के आचार, आराध्य देव के जीवन चरित्र एवं दार्शनिक तथ्यों का सुन्दर तरीके से वर्णन करते हुए सम्यक् दर्शन-ज्ञान और चरित्र की त्रिवेणी का सुन्दर संगम किया गया है। ❖❖

गुरु का महात्म्य

प्रस्तुति - कोटा संघ प्रमुखा, साध्वी पू. श्री प्रतिभाजी म.सा.

गुरु एक शब्द है, जिसे किसी भी शब्दों में वर्णित करना अपने आप में एक कठिन कार्य है। एक व्यक्तित्व जो किसी भी मनुष्य को तराश कर परमात्मा बनने में सबसे अहम् भूमिका निभाता है। सम्पूर्ण 'ब्रह्माण्ड' अपने आप में समेटे हुए हैं और हर शिष्य के लिए ज्ञान का आखरी स्त्रोत हैं।

मनुष्य जब अपने जीवन की शुरुआत करता है तभी से उसकी मुलाकात अपनी जिंदगी के सबसे प्रथम गुरु से होती है। गुरु को भगवान से बढ़कर माना जाता है। जीवन में उजाले का दीप प्रज्वलित करने वाले गुरु होते हैं। गुरु के सहयोग से ही हर व्यक्ति सफल बनता है, सत्य का साक्षात्कार कराने वाले गुरु होते हैं।

संत कबीर कहते हैं-'हरि रुठे गुरु ठौर है, गुरु रुठे नहि ठौर।।' अर्थात् भगवान के रूठने पर तो गुरु की शरण रक्षा कर सकती है, किन्तु गुरु के रूठने पर कहीं भी शरण मिलना सम्भव नहीं है। सभी ने उपास्य सद्गुरु कहा है। उस श्री गुरु से उपनिषद् की तीनो अग्नियाँ भी थर-थर काँपती है। त्रैलोक्यपति भी गुरु का गुणगान करते हैं। गुरु का जीवन में होना विशेष मायने रखता है। गुरु हमारे दुर्गुणों को हटाता है। गुरु के बिना हमारा जीवन अंधकारमय होता है। गुरु हमें जीवन जीने का सही रास्ता बताते हैं, जिस रास्ते पर चलकर जीवन को संवारा जा सकता है, एक नई ऊँचाई को छुआ जा सकता है इसलिए गुरु हमारे लिए किसी मूल्यवान वस्तु से कम नहीं। माता-पिता तो हर किसी के होते हैं, लेकिन गुरु का होना जीवन का मार्ग बदलने की तरह होता है।

ऐसे ही विरल विभूति हमारे परम पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म.सा. थे। जिन्होंने हमारे जीवन को बदल दिया, जीवन को सही दिशा देकर सत्य के पथ पर आगे बढ़ाया।

सम्यक्त्व साधना के महायोगी : मंगल मूर्ति, खद्दरधारी, घोर तपस्वी, कर्नाटक गज केसरी श्री गणेशीलालजी म.सा. संसार में मंगल का वातावरण फैलाने उदित हुए थे। उन्होंने ज्ञान प्रकाश से संसार को आलौकित किया था। दया देवी की उपासना से सच्चे सुख का साम्राज्य प्रदान किया। शुद्ध क्रिया द्वारा निर्ग्रन्थ का स्वरूप प्रदर्शित कर मिथ्यात्वियों का खण्डन किया और शुद्ध सम्यक्त्व का प्रचार किया। गौमाता की करुण पुकार सुनकर आनंद-कामदेव आदि श्रावकों का भक्तों के सम्मुख आदर्श स्थापित किया। सम्यक्त्व रूपी रत्न प्रदान कर जनता का सही मार्गदर्शन किया। भगवान महावीर के सिद्धान्तों का तथा मुँहपत्ती का महत्व समझाया और धर्म सभा में आने वाले श्रद्धालुओं को मुँहपत्ती बँधवायी और सामायिक भी करवाई।

गुरुदेव के दरबार में जैन-जैनेतर भी शुद्ध खाद्दी के वस्त्र पहनकर ही सामायिक में बैठते थे। वे सदैव अपने प्रवचन में फरमाते थे, वस्तु को यथार्थ रूप से ज्यों का त्यों मानना ही सम्यक्त्व है। सुदेव-सुगुरु-सुधर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखना समकित है। शुद्ध समकित का पालन करने से जीव तीर्थंकर गौत्र का बंध करता है। पूज्य गुरुदेव ने जीवन भर सम्यक्त्व का प्रचार किया। जिनशासन की महती कृपा से तथा देव-गुरु-धर्म के आशीर्वाद से आपको शक्ति प्राप्त हुई। आपश्री ने एक बार नियम लिया कि 'जो भाई-बहन मिथ्यात्व का त्याग करेंगें उन्हीं के हाथों से आहार-पानी ग्रहण करूँगा।'

इस अभिग्रह का परिणाम यह हुआ कि आपको कई बार ऊनोदरी तप करना पड़ा। कई बार उपवास के पारने में एकासन, तो कई बार तेला हुआ, लेकिन आपश्री के चित्त में न विक्षेप होता न चेहरे पर शिकन आती। वे आध्यात्म में लीन थे, क्योंकि आपश्रीजी दृढ़ मनोबली थे। एक बार जो निश्चय कर लेते उसे अवश्य पूरा करते। जहाँ भी आप पधारते वहाँ मिथ्यात्व के काले बादलों को अवश्य कम किया। कई भक्तों ने सारे देवी-देवताओं को आपके चरणों में लाकर रख दिया और सुदेव-सुगुरु-सुधर्म की शरण ग्रहण की अर्थात् मिथ्यात्व का त्याग कर, सम्यक्त्व को धारण किया।

एक समय आपकी धर्मसभा में प्रवचन चल रहा था। उस समय एक बहन अपना सिर घुमाने लगी, धीरे-धीरे उसके सिर घुमाने की गति तेज हो गयी, उसका शरीर थर-थर

काँपने लगा। गुरुदेव ने जान लिया और तेज आवाज से पूछा - तुम कौन हो? उस बहन के शरीर में स्थित आत्मा ने कहा- 'मै बाणा हूँ।' इस बहन के शरीर में क्यों आये? गुरुदेव ने पूछा। 'यह स्त्री मेरे स्थान पर मनौती करने आयी थी। अतः मैं इसके शरीर में आ गया हूँ। गुरुदेव ने कहा ठीक है पर तुम हमेशा के लिए इसके शरीर से चले जाओ। इसके शरीर में फिर से कभी मत आना। उस आत्मा ने कहा मैं आपके तप-तेज को नहीं सह पा रहा हूँ। आपके आदेश का अवश्य पालन करूँगा, लेकिन यह नारी मेरे स्थान पर कभी न आये। इतना कहकर वह आत्मा उस बहन के शरीर से निकल गयी। वह बहन कुछ देर में स्वस्थ हो गई।

उस बहन ने कहा गुरुदेव मेरे पति बीमार थे तब कुछ लोगों ने मुझे कहा- वह बाबा बहुत चमत्कारी हैं तुम तुम्हारे पति को वहाँ लेकर जाओ। तब मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी, मैं बाबा के पास मेरे पति को लेकर गयी। मेरे पति अच्छे तो नहीं हुए, वे परलोक सिधार गये। उनका गला रूँध गया। सभी उपस्थित भाई-बहनों की आँखे भीग गई।

गुरुदेव ने फरमाया जो हो गया सो हो गया। बीती बातों पर शोक करने से कोई लाभ नहीं। बहन, ध्यान रखना मिथ्यात्वी देवों का स्वभाव दूसरों को दुःख देने का है। जबकि सम्यक्त्वी देव कभी भी किसी को कष्ट नहीं देते। आप मिथ्या मान्यताओं को मानो मत। वास्तव में सुख की प्राप्ति पुण्य से होती है और दुःख की प्राप्ति पाप से। अतः सम्यक्त्व को धारण करना चाहिए। उसी समय सभी भाई-बहनों ने गुरुदेव से सम्यक्त्व को धारण कर मिथ्यात्व का त्याग किया। गुरुदेव ने कहा- हे देवानुप्रियो- **'न धम्मं कज्जं परममियं कज्जमू'**

उत्तम धर्मराधना जैसा श्रेष्ठ कार्य दूसरा कोई नहीं है। अतः धर्म आराधना करते रहो। देव-गुरु-धर्म की उपासना करते रहो। आपश्रीजी ने अपना पूरा जीवन आत्म-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण में अर्पित कर दिया था।

धन्य-धन्य आदर्श तुम्हारा, आत्मा का शृंगार किया।
आत्म शुद्धि के महायज्ञ में, तन-मन जीवन वार दिया।

गुरुदेव श्री गणेशलालजी म.सा. : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि	- 19.11.1879, कार्तिक सुदी छट्ठ, बुधवार
जन्म स्थल	- बिलाड़ा, जिला : जोधपुर (राजस्थान)
पिताश्री	- धर्मानुरागी सेठ पूनमचंदजी
माताश्री	- सौभाग्यवती श्री धुलीदेवीजी
गौत्र	- ललवाणी
गुरु एवं दीक्षा प्रदाता	- कोटा सम्प्रदाय के 8वें पट्टधर, घोर तपस्वी श्री प्रेमराजजी म.सा.
दीक्षा तिथि	- ई.स. दि.7.12.1913 रविवार - मिगसर सुदी नवमी
दीक्षा स्थल	- नगरसोल, जिला- नासिक (महाराष्ट्र)
रचनात्मक कार्य	- खादी प्रचार, सम्यक्त्व प्रचार, धर्म प्रचार एवं जीव रक्षा हेतु गौशालाओं की स्थापना, विद्यालय आदि
शिष्य समुदाय	- श्री खेमराजजी म.सा, श्री अगरचंदजी म.सा., श्री राजमलजी म.सा. आदि
तप	- दीक्षा लेते ही 10 वर्ष निरंतर एकासन तप तथा 38 वर्ष उपवास का एकान्तर तप अन्तिम समय तक
महाप्रयाण क्षेत्र	- दि.4.2.1962, माघ वदि अमावस्या, रविवार, रात्रि 8.45 बजे, गणेशनगर, जालना (महाराष्ट्र)
विशेषताएँ	- 32 आगम आपने 4.5 वर्ष में लिखे। अंतिम समय तक तप एवं स्वाध्याय करते रहें।
भाषाओं का ज्ञान	- संस्कृत, प्राकृत, उर्दू, कन्नड़, हिन्दी, राजस्थानी, मराठी आदि भाषा ज्ञान था।
विचरण	- महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि क्षेत्रों में
विशेष	- गुरुदेव ने छोटे-छोटे गांवों में जिनधर्म का प्रचार-प्रसार किया। अनेक भक्तों को मिथ्यात्व छुड़ाकर सम्यक्त्व प्रदान किया। आप कठोर संयमी थे, जिनकी तप और त्याग की गुण गौरव-गाथा वर्तमान में भी चारों दिशाओं में गूंजायमान हो रही हैं।

❖❖

गुरुदेव श्री जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म. सा. का बहु आयामी व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तुति - महासाध्वी डॉ. श्री मधुबालाजी म.सा.

भारत भूमि ऋषि-मुनियों की धरा है। महाभाग्यवान सभी गुरुओं ने यहाँ जन्म लेकर जनता जनार्दन को धर्मोपदेश देकर धर्म का मार्ग बताया। सभी प्राणियों पर दया करने का उपदेश दिया। भारत में अभी भी लाखों धर्म गुरु जनता को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास कर रहे हैं। उन सभी में जैन धर्म बहुत प्राचीन है। आदिनाथ भगवान ने धर्म की आदि की थी, उनके बाद तैबीस तीर्थंकर, अनेक आचार्य, उपाध्याय, संत-सतीवृन्द ने जैन धर्म के सिद्धान्त को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। उनमें पूज्य गुरुदेव, जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. का नाम भी सदैव स्मरणीय रहेगा। आपका जन्म नीमच सिटी म. प्र. में हुआ, वह तिथि थी- कार्तिक शुक्ला तेरस। आपके माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला - श्रीमान् गंगारामजी चोरड़िया जैन की धर्मपत्नी केशरबाईजी को।

आप बहुत लाड-प्यार से पले थे। बड़े भाई श्री कालूरामजी थे, उनका देहावसान हो गया। पिता का भी स्वर्गस्थ हो गये। माता ने सोचा- चौथमल की शादी करके मैं दीक्षा अंगीकार करूँगी। पहले आपकी दीक्षा के प्रयास हुए। हुआ यूं कि गुरुदेव ने माता से कहा - ''माताजी! पहले तेरा बेटा दीक्षा लेगा फिर आप दीक्षा अंगीकार करोगी। यदि आपकी भावनाा दीक्षा लेने की ही थी तो मेरी शादी क्यों की?''

दीक्षा के बहुत प्रयास किये परंतु कोई भी दीक्षा देने के लिए तैयार नहीं थे। आपके ससुर की तरफ से धमकी मिली हुई थी कि जो कोई मेरे जमाई को दीक्षा देगा, उनको दुनाली बंदुक से उड़ा दूंगा, देने वाले और लेने वालों को। माँ चाहती थी कि कहीं पर भी दीक्षा हो जाये। बोलिमा ग्राम विहार कर गांव के सब संत परिवार पधारे। एक वटवृक्ष के विराजने के लिये माताजी ने कहा। माताजी के कहने से सब संत वटवृक्ष के नीचे विराजमान हो गए। माताजी बेटे को एक तरफ ले गई, अपने हाथ से बेटे के मुँहपति बाँधी, चद्दर ओढ़ाई और चोलपटक पहनाया और गुरुदेवों के पास में ले आई। गुरुदेव से निवेदन किया- ''गुरुदेव श्री! अब चौथमल को दीक्षा दे दो मेरी आज्ञा है। वीरमाता की बात सुनकर गुरुदेव ने चौथमल को दीक्षा प्रदान की और कविवर्य श्री हीरालालजी म.सा. के नेश्राय में शिष्य घोषित हुए। उस समय गुरुदेव श्री हीरालालजी म.सा. ने कहा- ''चौथमल तू मेरे से सवाया निकलेगा।'' वह बात सत्य साबित हुई। गुरुदेव श्री चौथमलजी म.सा. वैराग्य-अवस्था में साफ सुथरे कपड़े पहनते थे, उस समय जीवागंज जनकुपुरा में वाग्याजी रहते थे उन्होंने कहा - 'चौथमल ! तू तो Up to Date रहता है, क्या संयम पालेगा? गुरुदेव ने कहा- कपड़े से कुछ नहीं होता, मन मज़बूत है तो संयम पल जाता है।'' दीक्षा लेने के बाद गुरु-आज्ञा से पहला प्रवचन मन्दसौर जीवागंज जनकुपुरा में दिया। वाग्याजी ने कहा- म. सा. मैं अपना वचन वापस लेता हूँ और मैं यह कहता हूँ कि ''आप पूरे भारत में प्रसिद्ध संत निकलोगे और दिपोगे।''

वैसा ही हुआ गुरुदेव पूरे भारत में जैन-अजैन में दीपे। आपको उत्कृष्ट चारित्र पालन से वचनसिद्धि प्राप्त थी। जहाँ भी पधारते थे, जन-परोपकार होता था। गुरूदेव का व्यक्तित्व देखने लायक था। भव्य ललाट, आजानुबाहु सुन्दर देह मीठी वाणी दिव्य प्रभावक। जहाँ भी पधारते जाहिर प्रवचन होते थे।

गुरुदेव का कृतित्व - गुरुदेव का कृतित्व व्यापक था। गुरुदेव के ऊपर सरस्वती की कृपा थी । सुना गया कि गुरुदेव को दिन में समय नहीं मिलता था, दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर बना रहता था। वे रात्रि को जो भाव आते पेन्सिल से कागज पर उतार लेते थे। सवेरे उपाध्याय श्री प्यारचंदजी म. सा. ठीक कर लेते। ''साता कीजोजी'' आपकी कालजयी रचना है। ''मनाओ महावीर'' भी प्रसिद्ध रचना है। सातों वारों की आरती एवं कितने ही चरित्र जम्बूस्वामी का उपन्यास। आज भी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका को कंठस्थ है। गुरुदेव यहीं नहीं ठहरे, सामाजिक कुरीतियों को त्यागने के लिये जन-जन को प्रेरित किया। कोई मर जाए तो उसके पास पैसे नहीं होते। खेत, आभूषण बेचकर, गिरवी रखकर या उधार लाकर जीमण करते थे। गुरुदेवश्री ने जैन धर्मी

और अन्य धर्मी को समझाया इस प्रथा पर चोट की। कितने ही आदिवासियों को मांसाहार छुड़ाकर शाकाहारी बनाया। जैन साधु के प्रति श्रद्धा जगाई।

एक प्रसंग याद आ रहा है - 1976 की बात मेरी दीक्षा का चौथा वर्ष था। हम चार ठाणा से मुम्बई आये, मैं सबसे छोटी थी। मेरी गुरुवर्या श्री विजयकुंवरजी म.सा. और मैं चिंचपोकली के स्थानक से गौचरी के लिये निकले। बाज़ार में जरा सा आये, वहाँ सब बोहरा लोगों की दुकानें थीं। मारवाड़ी साध्वी माथा नहीं बांधती है, हमारा माथा बांधा हुआ नहीं था। उन भाइयों ने नमस्कार किया और पूछा -

"अभी चौथमलजी म.सा. कहाँ विराजमान है?" गुरुणी जी ने फरमाया - 'वे तो कभी के स्वर्गवास हो गये।' इतना सुनना था कि वे लोग रोने लगे। फिर वे बोले 'वे हमारे गुरु थे।' अंतिम चातुर्मास कोटा था, वहाँ पर भी श्री आनंदसागरजी म.सा. और आपका हर रविवार का प्रवचन रामपुरा बाजार में होता था। वह दृश्य दर्शनीय था। भगवान महावीर की वाणी घर-घर में पहुँचाने का उनका लक्ष्य था। आज भी आपके प्रवचन, चरित्र, भजन प्रासंगिक हैं।

आपका जन्म सन् 1934 कार्तिक शुक्ला, त्रयोदशी रविवार को हुआ। आपकी दीक्षा फाल्गुन सुदि तीज रविवार को वि.सवंत 1952 में हुई और स्वर्गवास कोटा में विक्रम संवत् 2007 मृगशिर सुदि नवमी रविवार को हुआा। बिल्लौदा में 29 ठाणा एक छोटे से मकान में ठहरे। आपकी पुण्यवानी से बिल्लौदा में डाका नहीं पड़ा। श्री चौथमलजी म.सा. का नाम सुनते ही डाकुओं ने डाका नहीं डाला। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक था। आपका नाम सुनते ही छत्तीस कौम दौड़ी आती थी। कृतित्व भी आपका उत्तम था। आपके शिष्य-प्रशिष्य भी अच्छे प्रभावशाली थे एवं हैं। युगपुरुष को कोटिशः वंदन-अभिनंदन ! ❖❖

सहायता का अनोखा तरीका

प्रस्तुति - श्रीमती सुनीता जैन

एक आदमी ने दुकानदार से पूछा - केले और सेव के क्या भाव लगाए हैं ? दुकानदार - केले 20 रु.दर्जन और सेव 100 रु. किलो । उसी समय एक गरीब-सी औरत दुकान में आयी और बोली मुझे एक किलो सेव और एक दर्जन केले चाहिये - क्या भाव है भैया ? दुकानदार - केले 5 रु. दर्जन और सेव 25 रु. किलो। औरत ने कहा जल्दी से दे दीजिये । दुकान में पहले से मौजूद ग्राहक ने खा जाने वाली निगाहों से घूरकर दुकानदार को देखा । इससे पहले कि वह कुछ कहता - दुकानदार ने ग्राहक को इशारा करते हुए थोड़ा-सा इंतजार करने को कहा।

औरत खुशी-खुशी दुकान से निकलते हुए बड़बड़ाई - हे भगवान्! तेरा लाख-लाख शुक्र है, मेरे बच्चे फलों को खाकर बहुत खुश होंगे । औरत के जाने के बाद दुकानदार ने पहले से मौजूद ग्राहक की तरफ देखते हुए कहा - ईश्वर गवाह है भाई साहब ! मैंने आपको कोई धोखा देने की कोशिश नहीं की, यह विधवा महिला है, जो चार अनाथ बच्चों की माँ है । किसी से भी किसी तरह की मदद लेने को तैयार नहीं है। मैंने कई बार कोशिश की है और हर बार नाकामी मिली है। तब मुझे यही तरकीब सूझी है कि जब कभी ये आए तो मैं उसे कम से कम दाम लगाकर फल दे दूँ। मैं यह चाहता हूँ कि उसका यह भरम बना रहे और उसे लगे कि वह किसी की मोहताज नहीं है। मैं इस तरह भगवान् के बन्दों की पूजा कर लेता हूँ।

थोड़ा रूक कर दुकानदार बोला - यह औरत हफ्ते में एक बार आती है। भगवान् गवाह है जिस दिन यह आ जाती है उस दिन मेरी बिक्री भी बढ़ जाती है और उस दिन परमात्मा मुझ पर मेहरबान हो जाता है। ग्राहक की आंखों में आंसूं आ गए, उसने आगे बढ़कर दुकानदार को गले लगा लिया और बिना किसी शिकायत के अपने फल लेकर खुशी-खुशी चला गया।

कहानी का मर्म - खुशी अगर बांटना चाहो तो कोई न कोई तरीका भी मिल ही जाता है । - *साभार फेसबुक*

राम मंदिर, अयोध्या प्रतिष्ठा महोत्सव 22 जनवरी 2024 कुछ संस्मरणीय यादें...

- श्री संजय बाफना जैन, ज्ञान प्रकाश योजना - राष्ट्रीय अध्यक्ष, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

दि. 6 दिसम्बर 1992 को विश्व हिन्दू परिषद एवं हिन्दू संगठन के द्वारा आव्हान अनुसार 6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में विवादित ढ़ांचा गिराने के राष्ट्रीय कार्य में मैं स्वयं सम्मिलित हुआ था, जिसकी संस्मरणीय यादें प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

देशभर में राम मंदिर को लेकर आंदोलन चल रहा था। सन् 1989 में हम लोग पहली बार अयोध्या जाने के लिए निकले थे, किन्तु उस समय हम अयोध्या नहीं पहुंच पाये, क्योंकि हमें कानपुर में ही रोक दिया गया था। उसके बाद नवंबर 1990 में भी पुनः हम पुणे से अयोध्या जाने के लिये निकले, तभी भी कर्फ्यू लगाया गया, रेलें बंद कर दी गई और हमें नजरबंद कर दिया गया। दो दिन के बाद जैन समाज के दो बंधु कलकत्ता निवासी राम कोठारी एवं शरद कोठारी को बाबरी मस्जिद पर भगवा लहराने के बाद गोली मार दी गयी। इस प्रकार भगवान राम मंदिर के लिये उनका बलिदान हुआ और वे शहीद हो गये।

इसके बाद दिसंबर सन् 1992 में देशभर में राम मंदिर को लेकर जबरदस्त लहर चल रही थी। लोगों में जोश था, श्री लालकृष्ण आडवाणीजी की रथयात्रा, श्री अशोक सिंघल, श्री विनय कटियार, साध्वी ऋतम्भराजी, उमा भारतीजी इनके नेतृत्व एवं भाषणों से देशभर में मंदिर को लेकर वातावरण बना हुआ था, उत्साह था, उमंग थी और कुछ कर गुजरने का जुनून था। जगह-जगह बैठकें चल रही थी, नियोजन हो रहे थे और तय हुआ कि 6 दिसम्बर 1992 को हमें अयोध्या पहुँचना है। हमने पूणे जिले में जनसंपर्क यात्रा निकाली। गाँव-गाँव में युवा कार्यकर्ताओं से मिलते रहे और जगह-जगह से कितने लोग आयेंगे इसकी सूची तैयार होने लगी।

मुझे शिरूर घोड़नदी तहसील की जिम्मेदारी दी गई थी। उस समय हमने ८ लोगों के लिए रिजर्वेशन करवाये, क्योंकि विगत दो बार हम लोग अयोध्या जाने में सफल नहीं हो पाये थे। गुजराती धर्मशाला में रूकने की व्यवस्था की। जैसे कि हम बताने जा रहे थे, हम तो तीर्थयात्रा दर्शन के लिये निकले हैं। इस प्रकार हम 125 लोग शिरूर तहसील से अयोध्या के लिये निकले। बाकी लोगों का तो जय श्रीराम टिकट था, साथ में प्रोफेसर की धर्मपत्नी अपने एक साल के बेटे को लेकर हमारे साथ आयी थी। जोर-शोर से हम वहां पहुंचे। उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह जी के कारण रास्ते में कुछ रूकावटे नहीं आयी। हमने साथ में कुछ साहित्य और कैमरे आदि भी रख लिये थे।

फिर वह क्षण 6 दिसम्बर 1992 आ गया और जो तैयारी की थी उसके अनुसार हम विवादित ढ़ांचे के पास गये। युवावस्था थी, जोश था और उस पर चढ़ गये। उधर दूसरी तरफ आदरणीय श्री लालकृष्ण आडवाणीजी का भाषण चल रहा था। लोग जय श्रीराम के नारे लगा रहे थे। बाद में साध्वी उमा भारतीजी का जोशीला और उत्साहभरा भाषण हो रहा था। देखते-देखते हजारों लोगों के प्रयास से लाखों लोगों की उपस्थिति में वह ढ़ांचा जमींदोज कर दिया गया। सैंकड़ों वर्षों की गुलामी की ज़ंजीरें टूट गयी, वर्षों का सपना पूरा हुआ। कइयों ने जीवनभर संघर्ष किया था, कुछ लोगों का बलिदान हुआ था, वह जो सब कुछ स्वप्नवत् लग रहा था, उन सभी की तपस्या पूर्ण हुई। इस प्रकार से हम उस घटना के साक्षी बनें, जिस पर हमें आज भी गर्व महसूस होता है। वर्तमान में कुछ ही दिनों में लंबे इंतजार के बाद राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है और देश-दुनियाँ के करोड़ों लोग उसे देख रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं। चहुं ओर बस जय श्रीराम की गूंज सुनाई दे रही है। जय श्रीराम ! ❖❖

परिश्रम सौभाग्य की जननी है। देने के लिये 'दान' लेने के लिये 'ज्ञान' और त्यागने के लिये 'अभिमान' सर्वश्रेष्ठ हैं !

अच्छे के साथ अच्छे बने, पर बुरे के साथ बुरे नहीं। क्योंकि हीरे से हीरा तो तराशा जा सकता है, लेकिन कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं किया जा सकता ! ❖❖

पूज्य गुरुदेव 1008 श्री गणेशीलालजी म.सा. का संक्षिप्त जीवन परिचय

- श्री आनंद सुराणा जैन, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री, जालना (महाराष्ट्र)

वंदन उन्हें है जिन्होंने संयम की शिखा जगा दी।
वंदन उन्हें है जिन्होंने अज्ञान की निशा भगा दी।
श्रद्धा सहित वंदन-अभिनंदन है गणेश गुरु का,
जिन्होने पतझड़ में संयम की बगिया जगा दी।

पूज्य गुरुदेव श्री गणेशलालजी म.सा. का जन्म वि.सं. 1936, ई.स. 1879 को राजस्थान के बिलाडा ग्राम में ललवाणी कुल में माता श्रीमती धुलीबाई एवं पिताजी पूनमचंदजी को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह बालक इतिहास के पन्नों पर राजस्थान की धरा को बिलाड़ा की मिट्टी में पूरे भारतवर्ष में स्वर्णिम घड़ी को सजाने और धर्म की ध्वजापताका एवं भगवान महावीर के धर्म को, ज्ञान को भक्तों के दिलोदिमाग पर प्रतिष्ठित कर धर्म का परमोच्च बिंदुओं का ध्येय साक्षात् करवाने हेतु ही आपके जन्म के रूप में उनका ही साक्षात्कार हुआ है।

उस रात को एक अद्भुत बात, आकाश में था पूर्णिमा का चाँद, हो गया था अंतरिक्ष प्रकाश से भरपूर और वह धरती को देख रहा था। एक ओर चाँद पुण्यमयी माँ की कोख से अवतरित हो रहा है।

अर्थात् महान् पुरुषों का जीवन महान् ही होता है। शुभ घड़ी शुभ वेला का समय था। संध्या का सुहाना समय था। पुत्र रत्न की प्राप्ति से ललवाणी कुल अत्यंत हर्षोल्लासित था। बालक का लालन-पालन बड़े ही ठाट-बाट से हो रहा था, किंतु समय अपनी कर्मों की अनदेखी नहीं करता है। समय के साथ शिक्षा-दीक्षा का समय बीत रहा था, किन्तु बालक के भीतर एक अद्भुत अदाकारी अपना रंग दिखा रही थी। बालक अपने परिवार के व्यापार-उद्योगों की ओर न मुड़ते हुए धर्म और ज्ञान की गंगा में बह रहा था। माता-पिता धार्मिक संस्कारों के साथ उद्यमियों में अपना स्थान बनाने का प्रयास करवा रहे थे, किन्तु बालक अपनी एक अलग ही राह पकड़ रहा था।

बिलाड़ा ग्राम में खुशियों की लहर एवं ललवाणी कुल के आंगन में किलकारियाँ अपना अंजाम दिखा रही थी। बालक धीरे-धीरे धर्म के ज्ञान को अपनाकर संस्कार के आयामों से युक्त होकर कर्ममुक्त धर्म के बल को अपने मन में संजोकर उसे अपने जीवन को पुरूषार्थ का मुलम्मा पहनाकर समाज एवं प्राणी मात्र की सेवा में अपना परचम दिखा रहा था।

बालक का जीवन संसार रूपी भौतिक सुखों के लिये बना ही नहीं था। उसका जीवन तो मानव कल्याण एवं प्राणी मात्र के लिये समर्पित होने के लिये ही हुआ था। जैसे-जैसे बालक का जीवन आगे बढ़ने लगा वैसे-वैसे उनमें संसार के प्रति रुचि कम होने लगी। वह घर को छोड़कर निकल पड़े। उनकी दीक्षा सन् 1913 में नगरसोल में पूज्य गुरुदेव श्री प्रेमराजजी म.सा. के सान्निध्य में संपन्न हुई और गुरु गणेश संयम की यात्रा पर निकल पड़े। समाज में उन्हें दक्षिण केसरी के नाम से जानने लगे। उन्होंने मनमाड़, नांदेड, चौसाला आदि अनेक स्थानों पर चातुर्मास किये और प्राणीमात्र की रक्षा एवं सेवा हेतु गोशालाओं का निर्माण किया तथा अनेक गोमाताओं को अभयदान देकर गोरक्षा का बीड़ा उठाया। उन्हीं की प्रेरणा से जालना में श्री महावीर जैन गोशाला एवं श्री गुरु गणेश गोसंवर्धन प्रकल्प में कुल 5000 गायों का संवर्धन किया जा रहा है। गुरुदेव का जीवन केवल प्राणीमात्र के लिये ही समर्पित नहीं था, बल्कि मानव कल्याण एवं मानव जाति के उत्थान हेतु गुरुदेव ने अनेक कार्य किये। अपने तपोबल से कइयों के दुखी जीवन में खुशियाँ भरने का काम किया। उनकी वाणी इतनी प्रबल थी कि वह जो कहते वह होकर ही रहता था। एक दिन उपवास, एक दिन पारणा ऐसा अखंड तप उन्होने जीवन पर्यंत किया। उन्होंने पूरे भारतवर्ष में खादी का प्रसार एवं प्रचार किया और आज भी सरकार आत्म निर्भर भारत में खादी के इस्तेमाल पर विशेष जोर दे रही है। नांदेड़ के चातुर्मास के बाद जब गुरुदेव जालना आये तब उन्होंने कहा था कि मेरा अंतिम समय अब आन ही वाला है।

अंततः संथारा धारण कर दि.4 फरवरी 1962 में गुरुदेव ने देवलोक की ओर प्रयाण किया। सूरज के समान रोशन, चाँद के समान शीतल एवं नदी के जैसा समर्पित ऐसा उनका

जरूर दिखाएगी। जेल में भी वही नित्य कर्म, नवकार मंत्र का जाप, सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, पौषध करते हुए समय गुजार रहे थे। अचानक एक दिन दरबार के हाकीम श्री रणजीतसिंहजी खिमेसरा उदयपुर से जेल का अवलोकन करने आए। वह जैन संस्कारों से पल्लवित थे, तत्व ज्ञाता भी थे, श्रावक के गुणों से परिचित थे। इसलिए उन्होंने जेल में ध्यान करते हुए, सामायिक में हमीरमल को देखा और वस्तु स्थिति का पता लगाकर महाराणा साहब से आज्ञा लेकर तुरंत श्रावक हमेरमल को रिहा करवाया तथा उसके उत्कृष्ट वैराग्य भाव को देखकर, जांच कर, परख कर, महाराणा से दीक्षा के लिए आज्ञा देने की भी सिफारिश की और आज्ञा दिलवाई भी।

महाराणा की आज्ञा से मेवाड़ में यह पहली दीक्षा ही होगी, जो हमीरमल की 20 वर्ष की आयु में विक्रम संवत 1982 में मंगलवाड़ में संपन्न हुई तथा नाम हुआ श्री अंबालालजी महाराज।

यहीं से चल पड़ा उस सूरज का प्रकाश जिसने थामला में जन्म लिया, मावली में चमक पाई और मंगलवाड़ से ऊर्जा पाकर ओजस्वी, तेजस्वी स्वरूप प्राप्त कर पहला चातुर्मास जयपुर में किया और संयमी जीवन में कई उतार-चढ़ाव पार करते हुए, शास्त्रोचित, आगम ज्ञान प्राप्त कर सरलता, सौम्यता, भव्यता और दिव्यता प्राप्त कर, मेवाड़ के 750 गांवों के भक्तों के भगवान बनकर अंतिम चातुर्मास मावली में पूर्ण कर अपने दोनों अंतेवासी शिष्य कविरत्न श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. 'कुमुद' एवं सेवाभावी श्री मदनमुनिजी म.सा.'पथिक' जैसे विद्वान् संतों के कन्धों पर निश्चिंत होकर मेवाड़ संप्रदाय की गाड़ी की कमान/डोर सौंप कर, अपना अंतिम समय जानकर, सबसे छोटे संत बनकर, सबसे खमतखामणा कर, विधि सहित संलेखना-संथारा कर फतेहनगर की पावन धरती पर वह सूरज हमेशा-हमेशा के लिए अस्त हो गया। जिनकी अंतिम यात्रा में लगभग सवा लाख लोगों का हुजूम, यह निश्चित करता है कि वह लाखों लाख भक्तों के गुरु ही नहीं भगवान भी थे।

आप संगठन प्रेमी थे, जहां भी विहार करते सबसे पहले संघ की एकता और अखंडता के बारे में पूछते और जहां कहीं भी तनाव होती, तो उनका निवारण भी करवाते। श्रमण संघ के निर्माण में भी आपकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। आपने पूर्व प्राप्त पद त्यागने में कतई समय जाया नहीं किया और मेवाड़ आचार्य एवं मंत्री पद बड़े संतों की झोली में समर्पण कर दिया। श्रमण संघ की एकता का रास्ता प्रशस्त किया। उस वक्त श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी महाराज साहब की दीक्षा पर्याय केवल दो वर्ष थी। उनकी चहक, स्फूर्ति, हौसला, कार्यशैली देखकर ही पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज साहब ने अंबालाल जी महाराज साहब को निर्देशित किया कि आपका यह छोटा संत बड़ा होकर बहुत ही विद्वान् और मेधावी संत बनेगा। इसकी अच्छी शिक्षा की पूरी व्यवस्था करवाना। हुआ भी ऐसा ही उनकी भविष्यवाणी सत्य निकली अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त कर वह अंतिम भव्य और दिव्य चातुर्मास हमारे खमनोर कर सन् 2020 में कड़ियां को बढ़िया बनाने का अंतिम सपना संजोकर हमारे बीच से देवलोक गमन कर गये।

गुरु अंबेश अहिंसा के सच्चे पुजारी थे। उनका चातुर्मास कहीं और खुल चुका था। उसके बाद बदनोर का मुस्लिम समाज पूज्यश्री के चातुर्मास की विनती लेकर पहुंचा पर अजैनो की विनती को स्वीकार कर उन्होंने अहिंसा के सच्चे पुजारी होने का परिचय दिया। आपश्री की प्रेरणा से वहां बकरा ईद के दिन बकरा नहीं काटने के पच्चक्खाण हुए और आज भी वही परंपरा कायम है। ईद के दिन वहां बकरे नहीं काटे जाते। कई अबोले जीवों को अभयदान मिला। आपश्री के मांगलिक के चमत्कार के कई किस्से हैं - जैसे रायपुर में दोपहर का ध्यान करते हुए श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. अपनी जिद्द से उस कमरे में चले गए, देखते हैं कि वहां एक विशाल काला सर्पराज गुरु अंबेश का मांगलिक सुन रहा है, जो उसका नित्यक्रम था।

देलवाड़ा में मोड़ीलालजी चौहान की मृत्यु हो चुकी थी। सारी तैयारियां हो चुकी थी, मेहमानों का झमेला लगा था और अंतिम मांगलिक सुनाने गुरु अंबेश गए, कहते हैं कि वह जीवित निकले, ऐसा ही कोशीथल में श्री धुकलचंदजी मारू की भी मृत्यु हो चुकी थी। अंतिम क्रियाकर्म की तैयारी भी हो चुकी थी। गुरुदेव का विराजना वही था सो मांगलिक के लिए पधारे। मांगलिक देते-देते वह उठ बैठे और कहते हैं कि 10

वर्ष और जीवन जिया। ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे सरदारगढ़ में सगसजी बावजी देवता आपकी सेवा में रहे थे और एक बाई ने धोवन पानी बहराने में भाव रखें। कह दिया मिर्ची का पानी है। गुरुदेव ने कहा कि आहार में साग लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम यह पानी बहरा दो। उन्होंने वह पानी लेकर पीछे मुड़े ही थे कि उस श्राविका के बर्तन में मिर्ची का पानी उतना ही बचा रहा।

वे अपने भक्तों के प्रति सौहार्दपूर्ण भाव रखते थे। उनके ही आशीर्वाद से हम सब सुखी हैं, संपन्न है तथा धार्मिक गतिविधियों में भी अग्रणी है। संघ समाज का काम हम पूरे तन, मन और धन के साथ करते हैं। घर परिवार और समाज का हाल-चाल भी ऐसा पूछते थे, जैसा कोई परिजन ही हो। धर्म, ध्यान, सामायिक, संयम, तप, जप की प्रेरणा भी बहुत अच्छी तरह से दिया करते थे। सभी साधु-संतों का मान-सम्मान में भी उनकी कोई कमी नहीं रहती थी। आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषिजी म.सा. हो, उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म.सा. हो, तत्कालीन उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. हो, मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. अथवा युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर' हो तथा अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वीजी से भी वे बड़ी आत्मीयता के साथ मिलते थे। मूर्तिपूजक श्री हिमाचलसूरीजी म.सा. के साथ तो उनकी अत्यंत ही मिलनसारिता थी। कभी कोई भी वैमनस्य उन्होंने अपने जीवन में नहीं रखा।

राजस्थान, मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र इत्यादि क्षेत्रामें में विचरण किया और मुंबई कांदावाड़ी में भी उनका चातुर्मास संपन्न हुआ था। ऐसे अनेक गुणों के धारी, गुरुदेव! स्वीकार करो वंदना हमारी। आपको भवाभीनी हार्दिक श्रद्धांजलि।

❖❖

जैन विधायको से जैन समाज को अपेक्षा

- श्रमण पूज्य डॉ. श्री पुष्पेन्द्रमुनिजी म.सा.

हाल ही में संपन्न चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में-से तीन राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में जैन समाज के 20 विधायक विजयी हुए हैं। सकल जैन समाज में इससे काफी उत्साह है और आगामी चुनावों की भी उम्मीदें बढ़ गई हैं। इस अवसर पर डॉ. श्री पुष्पेन्द्रमुनिजी म.सा. ने कहा कि कई बार जैन समाज, संस्कृति, साधु-साध्वियों, मंदिरों-तीर्थों तथा जैन धर्म से जुड़े स्थानों और संस्थानों पर प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रहार होते देखे गये हैं। कई बार जैन समाज की वाजिब मांग की अनदेखी की जाती है। ऐसे में शासन और प्रशासन के शीर्ष नेतृत्व तक सही तरीके से अपनी न्यायोचित बात पहुँचाने के लिए सरकार में जैन समाज का प्रतिनिधित्व होना अति आवश्यक है।

डॉ.श्री पुष्पेन्द्रमुनिजी म.सा. ने बताया कि जैन विधायकों से जैन समाज को बहुत सारी उम्मीदें हैं। इनमें जैन संतों के सुरक्षित विहार, प्राचीन और नवीन जैन धरोहर की सुरक्षा, इतिहास व साहित्य में जैन धर्म व समाज के योगदान के समुचित समावेश को सुनिश्चित करना आदि प्रमुख हैं। जैन समाज में भी आर्थिक दृष्टि से कमजोर आबादी है। जरुरतमंद व्यक्तियों के लिए बनीं सरकारी योजनाएं उन तक भी बिना भेदभाव पहुँचें, यह भी सुनिश्चित करना जरूरी है। विधायक समाज और सरकार के बीच सेतु का काम कर सकते हैं।

विगत कुछ वर्षों में देश के किसी न किसी हिस्से से जैन तीर्थों पर अतिक्रमण और छेड़छाड़ की खबरें पढ़ने-सुनने में आ रही हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी के साथ ऐसा कतई नहीं होना चाहिये। ऐसी घटनाएँ शून्य होनी चाहिये। देश व प्रदेश में जहां कहीं यदि जैन संतों व जैन संस्कृति पर कुठाराघात होता है तो जैन विधायकों से आशा की जाती है कि वे सबको साथ लेकर तत्काल सकारात्मक रुख दिखाते हुए समाज का साथ दें। हमारी जानकारी के अनुसार तीनों राज्यों में जैन विधायकों की सूची दी जा रही है। राजस्थान - सर्वश्री प्रतापसिंह सिंघवी, शांतिलाल धारीवाल, लादूलाल पितलिया, ताराचंद जैन, गौतम दक, रोहित बोहरा, अतुल भंसाली, अशोक कोठारी, दीप्ति सिंघवी महेश्वरी तथा मध्य प्रदेश - सर्वश्री ओमप्रकाश सकलेचा, चेतन कश्यप, सुरेंद्र पटवा, अनिल कालुहेड़ा, दिनेश बोस, देवेंद्र जैन, शैलेन्द्र जैन, अनिल जैन, विपिन जैन, जयंत मलैया एवं छत्तीसगढ़ - श्री राजेश मुणोत। ❖❖

समता-क्षमता-दक्षता और संयम से अलौकिक विभूति : मेवाड़ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री अम्बालालजी म.सा.

प्रस्तुति : ओमप्रकाश मांडोत जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस, कडियाँ (राजस्थान)

भारतीय संस्कृति में इस धरती पर अनादि काल से समय-समय पर महान विभूतियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के द्वारा अपनी आत्मा का कल्याण करने के साथ ही प्राणी मात्र के कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

धन्य है ऐसी विरली संयमी आत्मा, जिन्होंने अपनी आत्मा के कल्याण के साथ-साथ समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन कर नई राहें दिखाई। मेवाड़ की धरती पर भी ऐसी कई विभूतियों ने जन्म लिया, जिससे हम सभी गौरवान्वित महसूस करते हैं। जयेष्ठ सुदी तीज को दो महानायकों का जन्म इस मेवाड़ की धरती पर हुआ।

एक थे कर्मवीर : शूरवीर महाराणा प्रताप, जिन्होंने अरावली के पहाड़ों में डगर-डगर ठोकर खाई और घास की रोटी खाकर के भी मेवाड़ की आन-बान-शान कायम रखी तथा धर्म एवं बहन-बेटियों की इज्जत की रक्षा में अपनी जान लगा दी। दूसरे थे धर्मवीर : मेवाड़ संघ शिरोमणि पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री अंबालालजी म. सा.। उन्होंने भी अरावली पर्वत की पगडंडियों पर चलकर, पत्थरों की ठोकर सहनकर, मक्की की रोटी और राबड़ी का आहार लेकर प्रभु महावीर के शासन की भूरी-भूरी प्रभावना की और मेवाड़ की आन-बान-शान में चार चांद लगाए।

वि. सं. 1962 को एक छोटे से गांव थामला में सोनी कुल के प्यारीबाई और किशोरचंदजी के आंगन में एक सूरज ने जन्म लिया। साथ ही थोड़े समय में ही माता-पिता का वियोग सहन करना पड़ गया। दादी रामीबाईजी की झोली में हमेरमल (अंबालालजी म.सा.) की परवरिश की जिम्मेदारी आन पड़ी। उन्होंने मावली लाकर पौत्र को अच्छी शिक्षा दिलाई और सत्संग मिला हमेरमलजी के मामीसा का, जिन्होंने उस बालक के जीवन में आध्यात्मिक संस्कार कूट-कूट कर भर दिये। आध्यात्मिक और व्यवहारिक एवं शैक्षणिक ज्ञान के प्रभाव से किशोर होते ही उनकी सरकारी नौकरी, मेवाड़ गवर्नमेंट में हेड मोहरिर के पद पर लग गई। आध्यात्मिक संस्कारों के परिणाम स्वरूप बालक हमेरमल धार्मिक गतिविधियों में जी-जान से तल्लीन रहने लगा। संयोग बना मेवाड़ के एक छोटे से गांव हथियाणा में। मेवाड़ आचार्य पूज्य श्री मोतीलालजी म.सा. एवं भारमलजी म.सा. के दर्शन का। भवी आत्मा अपना स्वभाव कभी नहीं छोड़ती और अपना रंग दिखा ही देती है। संत-महापुरुष भी देखते ही ऐसी आत्मा को पहचान लेते हैं और थोड़े से संवाद में ही गहरी संवेदना और चिंतन भर देते हैं तथा मार्गदर्शन कर देते हैं।

पूज्य श्री मोतीलालजी म.सा. की काया और मुख का आभामंडल ही ऐसा था कि जो भी दर्शन करने आता, भक्त बन जाता। क्या जैन क्या अजैन। उदाहरण स्वरूप पूज्य श्री इन्द्रमलजी म.सा. एवं मगनमुनिजी म.सा. द्वारा शिष्यत्व स्वीकार करना।

पू. श्री भारमलजी म.सा. ने पू. आचार्य श्री मोतीलालजी म.सा. से परिचय कराते हुए बताया कि यह मेरा सांसारिक मौसेरा भाई है। गुरुदेव ने अपनी दूरदृष्टी से फरमाया कि सांसारिक क्यूं-धर्म के सच्चे और पक्के भाई ही बन जाओ।

इस एक वाक्य ने उस बालक के मष्तिस्क पटल पर चिंतन का इतना प्रभाव डाला कि सम्यक् वैराग्य उत्पन्न हो गया। सरकारी नौकरी त्यागकर, संयम पथ पर बढ़ने का आपने दृढ़ निश्चय कर लिया और दादी माँ तथा परिवार को अपनी इच्छा और निश्चय बता दिया। दादी माँ पर तो मानो पहाड़ ही टूट पड़ा। इकलौता सहारा उन्हें छोड़कर संयम ग्रहण करें, यह उन्हें कतई स्वीकार नहीं था। रोकने हेतु अनेकों उपायों के साथ ही उदयपुर महाराणा भोपालसिंहजी की सवारी के सामने लेटकर पुत्र को इस रास्ते से बचाकर, सांसारिक रास्ते पर लगाने की उनसे गुजारिश करने लगी। राजा, महाराजा और बड़े लोग कान के कच्चे होते हैं। उन्होंने एक तरफा सुनवाई कर बालक हमेरमल को जेल में डालने का आदेश दे दिया।

वीतरागी आत्मा जहाँ कहीं भी रहेगी, अपना कौशल जरूर दिखाएगी। जेल में भी वही नित्य कर्म, नवकार मंत्र का जाप, सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, पौषध करते हुए समय गुजार रहे थे। अचानक एक दिन दरबार के हाकीम श्री रणजीतसिंहजी खिमेसरा उदयपुर से जेल का अवलोकन करने आए। वह जैन संस्कारों से पल्लवित थे, तत्व ज्ञाता भी थे, श्रावक के गुणों से परिचित थे। इसलिए उन्होंने जेल में ध्यान करते हुए, सामायिक में हमीरमल को देखा और वस्तु स्थिति का पता लगाकर महाराणा साहब से आज्ञा लेकर तुरंत श्रावक हमेरमल को रिहा करवाया तथा उसके उत्कृष्ट वैराग्य भाव को देखकर, जांच कर, परख कर, महाराणा से दीक्षा के लिए आज्ञा देने की भी सिफारिश की और आज्ञा दिलवाई भी।

महाराणा की आज्ञा से मेवाड़ में यह पहली दीक्षा ही होगी, जो हमीरमल की 20 वर्ष की आयु में विक्रम संवत 1982 में मंगलवाड़ में संपन्न हुई तथा नाम हुआ श्री अंबालालजी महाराज।

यहीं से चल पड़ा उस सूरज का प्रकाश जिसने थामला में जन्म लिया, मावली में चमक पाई और मंगलवाड़ से ऊर्जा पाकर ओजस्वी, तेजस्वी स्वरूप प्राप्त कर पहला चातुर्मास जयपुर में किया और संयमी जीवन में कई उतार-चढ़ाव पार करते हुए, शास्त्रोचित, आगम ज्ञान प्राप्त कर सरलता, सौम्यता, भव्यता और दिव्यता प्राप्त कर, मेवाड़ के 750 गांवों के भक्तों के भगवान बनकर अंतिम चातुर्मास मावली में पूर्ण कर अपने दोनों अंतेवासी शिष्य पूज्य श्री सौभाग्यमुनिजी म. सा. एवं पूज्य श्री मदनमुनिजी जैसे विद्वान संतों के कन्धों पर निश्चिंत होकर मेवाड़ संप्रदाय की गाड़ी की कमान-डोर सौंप कर सबसे छोटे संत बनकर, सबसे खमतखामणा कर, विधि सहित संलेखना-संथारा कर अपना अंतिम समय जानकर सभी प्रकार की भलावण देकर फतेहनगर की पावन धरती पर वह सूरज हमेशा-हमेशा के लिए अस्त हो गया। जिनकी अंतिम यात्रा में लगभग सवा लाख लोगों का हजूम, यह निश्चित करता है कि वह लाखों लाख भक्तों के गुरु ही नहीं भगवान थे।

आप संगठन प्रेमी थे, जहां भी विहार करते सबसे पहले संघ की एकता और अखंडता के बारे में पूछते और जहां कहीं भी तनाव होती, तो उनका निवारण भी करवाते। श्रमण संघ के निर्माण में भी आपकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। आपने पूर्व प्राप्त पद त्यागने में कतई समय जाया नहीं किया और मेवाड़ आचार्य एवं मंत्री पद बड़े संतों की झोली में समर्पण कर दिया।

श्रमण संघ की एकता का रास्ता प्रशस्त किया। उस वक्त श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी महाराज साहब की दीक्षा पर्याय केवल दो वर्ष थी। उनकी चहक, स्फूर्ति, हौसला, कार्यशैली देखकर ही पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज साहब ने अंबालाल जी महाराज साहब को निर्देशित किया कि आपका यह छोटा संत बड़ा होकर बहुत ही विद्वान और मेधावी संत बनेगा। इसकी अच्छी शिक्षा की पूरी व्यवस्था करवाना। हुआ भी ऐसा ही उनकी भविष्यवाणी सत्य निकली अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त कर वह अंतिम भव्य और दिव्य चातुर्मास हमारे खमनोर कर सन् 2020 में कड़ियां को बढ़िया बनाने का अंतिम सपना संजोकर हमारे बीच से देवलोक गमन कर गये।

पू. गुरु अंबेश अहिंसा के सच्चे पुजारी थे। उनका चातुर्मास कहीं और खुल चुका था। उसके बाद बदनोर का मुस्लिम समाज पूज्यश्री के चातुर्मास की विनती लेकर पहुंचा पर अजैनो की विनती को स्वीकार कर उन्होंने अहिंसा के सच्चे पुजारी होने का परिचय दिया। आपश्री की प्रेरणा से वहां बकरा ईद के दिन बकरा काटने के पच्चखाण हुए और आज भी वही परंपरा कायम है। ईद के दिन वहां बकरे नहीं काटे जाते। कई अबोला जीवों को अभयदान मिला। आपश्री के मांगलिक के चमत्कार के कई किस्से हैं :- जैसे रायपुर में दोपहर का ध्यान करते हुए पूज्य श्री सौभाग्यमुनिजी म. सा. अपनी जिद्द से उस कमरे में चले गए, देखते हैं कि वहां एक विशाल काला सर्पराज गुरु अंबेश का मांगलिक सुन रहा है जो उसका नित्यक्रम था।

देलवाड़ा में मोड़ीलालजी चौहान की मृत्यु हो चुकी थी। सारी तैयारियां हो चुकी थी, मेहमानों का झमेला लगा था और अंतिम मांगलिक सुनाने गुरु अंबेश गए, कहते हैं कि वह जीवित निकले, ऐसा ही कोशीथल में श्री धुकलचंदजी मारू की भी मृत्यु हो चुकी थी। अंतिम क्रियाकर्म की तैयारी भी हो

चुकी थी। गुरुदेव का विराजना वही था सो मांगलिक के लिए पधारे। मांगलिक देते-देते वह उठ बैठे और कहते हैं कि 10 वर्ष और जीवन जिया। ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे सरदारगढ़ में सगसजी बावजी देवता आपकी सेवा में रहे थे और एक बाई ने धोवन पानी बहराने में भाव रखें। कह दिया मिर्ची का पानी है। गुरुदेव ने कहा कि आहार में साग लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम यह पानी बहरा दो। उन्होंने वह पानी लेकर पीछे मुड़े ही थे कि उस श्राविका के बर्तन में मिर्ची का पानी उतना ही बचा रहा।

वह अपने भक्तों के प्रति पूर्ण ममता, वात्सल्य रखते थे। जो भी भक्त जाता उनके कंधे पर तीन बार थपकी लगाते और उनके आशीर्वाद से हम सब सुखी हैं, संपन्न है तथा धार्मिक गतिविधियों में भी अग्रणी है। संघ समाज का काम हम पूरे तन, मन और धन के साथ करते हैं। घर परिवार और समाज का हाल-चाल भी ऐसा पूछते थे, जैसा कोई परिजन ही हो। धर्म, ध्यान, सामायिक, संयम, तप, जप की भलावन भी बहुत अच्छी तरह से दिया करते थे। सभी साधु-संतों का मान सम्मान में भी उनकी कोई कमी नहीं रहती थी। आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषिजी महाराज साहब हो, उपाध्याय पू. श्री पुष्करमुनिजी महाराज साहब हो, तत्कालीन उपाचार्य पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज साहब हो, पू. श्री मिश्रीमलजी महाराज साहब (दोनों) हो, अन्य संप्रदाय के साधु-साध्वीजी से भी बड़ी आत्मियता के साथ वह मिलते थे। मूर्तिपूजक श्री हिमाचलसूरीजी महाराज साहब के साथ तो उनकी अत्यंत ही मिलनसारिता थी। कभी कोई भी वैमन्यस उन्होंने अपने जीवन में नहीं रखा।

राजस्थान, मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र इत्यादि क्षेत्र स्पर्शन किया और मुंबई कांदावाड़ी में भी उनका चातुर्मास संपन्न हुआ था। ऐसे अनेक गुणों के धारी गुरुदेव, स्वीकार करो वंदना हमारी। आपको हार्दिक श्रद्धांजलि। ❖❖

बुध्दिमान कौन ?

जो बात के मर्म को तुरन्त समझ लेता है, सुनने योग्य बातों को एकाग्रचित्त हो सुनता है और व्यर्थ की बातों में रुचि नहीं रखता, खूब सोच विचार करके ही कोई काम शुरू करता है और हाथ में लिए काम अधूरा नहीं छोड़ता और जो बिना पूछे किसी को सलाह नहीं देता, वही बुद्धिमान है।

जो नष्ट हुई वस्तु के लिए शोक नहीं करता, जो विपत्ति पड़ने पर धैर्य और विवेक का साथ नहीं छोड़ता, जो पराई वस्तु का लालच नहीं करता, सदा शुभ कर्म करके अपने पुरूषार्थ से ही कोई वस्तु प्राप्त करता है और जो सफल होकर इतराता नहीं, वही बुद्धिमान है।

जो यश और आदर-सम्मान मिलने पर अभिमानी नहीं होता, आदर न मिलने पर अप्रसन्न नहीं होता, जो अपनी विद्या का अहंकार नहीं करता और अपने धन का दुरूपयोग नहीं करता, जो गहन-गंभीर और उदार स्वभाव रखता है और किसी के प्रति वैर भाव नहीं रखता, वही बुद्धिमान है।

जो अपने द्वारा किए गए उपकार और दूसरे के द्वारा अपने प्रति किए गए अपकार को याद नहीं रखता, जो अपनी बुराइयों और दूसरों की भलाइयों को भूलता नहीं, जिसके साथ रहने से किसी का अहित नहीं होता बल्कि भला ही होता है और जो किसी भी समस्या को ठीक ढंग से सुलझा लेता है, वही बुद्धिमान है।

जो मर्यादा का पालन करता है, जो नीति के विपरीत आचरण नहीं करता, जो किसी भी विषय पर तर्क और युक्ति कर सकता है, जो अद्भुत बातें जानता है, जो शक्ति के अनुसार काम करता है, जो इशारे में ही बात को समझ लेता है, जो विनम्र और अंहकार रहित है और जानते हुए भी समझता है कि कम जानता है, वही बुद्धिमान है।

जो सही बात कहने में संकोच नहीं करता और सच बात को भी मधुर ढंग से कहता है, जो कटु सत्य नहीं बोलता और प्रिय असत्य भी नहीं बोलता, जो अपनी प्रशंसा और दूसरे की निन्दा नहीं करता, जो अपने हित के लिए किसी का अहित नहीं करता और जो किसी भी लालच, भय या बाधा से, न्याय मार्ग से विचलित नहीं होता, वही बुद्धिमान है।

जो हर समय आत्म चिन्तन-मनन में लगा रहता है वही सर्वश्रेष्ठ, वही बुद्धिमान है।

- उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. के अनमोल वचन से

बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना

प्रस्तुति - श्री गौतम खारीवाल, पुरुषवाकम, चेन्नई (तमिलनाडु)

अंग्रेजों को गए तो लगभग 76 वर्ष हो गये किंतु उन्होंने हमारी भारतीय संस्कृति को अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के माध्यम से इतना प्रदूषित कर दिया कि जितनी धूमधाम से उनकी उपस्थिति में हमारे पूर्वजों ने एक जनवरी को नए वर्ष के रूप में नहीं मनाया होगा उससे कई गुणा अधिक जोश, उमंग और उत्साह से हम लोग मनाते हैं। **हमारा अपना नव वर्ष कब आता है इसका उन्हें बिलकुल भी भान ही नहीं है।** एक जनवरी को ईसाई लोग इसे एक त्यौहार के रूप में क्यों मनाते हैं इसकी भी हमें जानकारी नहीं है।

क्या वास्तव में अंग्रेजी रोमन कैलेंडर के अनुसार भी एक जनवरी, नये वर्ष का पहला दिन है? क्रिसमस त्यौहार ईसामसीह के जन्म दिन के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि ईसामसीह का जन्म 25 दिसंबर को हुआ था? नये वर्ष के दिन की या ईसामसीह के जन्म दिन की या क्रिसमस की जानकारी बिलकुल नहीं होते हुए भी हम इन त्यौहारों को, जो हमारे देश के है ही नहीं, उन्हें बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इन्हें मार्गदर्शन देने वाले, जोकि प्रवचन देकर इनका जीवन सुधारने वाले है; वे भी इन दिनों को कई वर्षों से इन्हीं की राह पर चल **नव-वर्ष पर महामांगलिक आयोजित करवाते हैं। जिसका प्रचार-प्रसार भी विशेष रूप से किया जाता है।**

देश, समाज, धर्म की विडंबना है कि किसी भी विषय को जाने समझे बिना, बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना की तरह नाचने लगते हैं। इनकी बुद्धि एवं तर्क पर तरस तो तब आता है, जब रात्रि के बारह बजे महामांगलिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। कोई इनसे पूछे कि मांगलिक और महामांगलिक में क्या अंतर है? कुतर्क यह रहता है कि हमने रात में आयोजन इसलिए किया ताकि जैन परिवारों के बच्चे रात में क्लब, होटल आदि में न जाकर यहां आएंगे। थोड़ी सी जानकारी हम नव-वर्ष और ईसामसीह के जन्मदिन की लेने का प्रयास करेंगे।

दुनियां के अधिकतर देश एक जनवरी को नया वर्ष मनाते हैं लेकिन पहले 25 मार्च से नया वर्ष प्रारंभ होता था, अभी भी दुनियां के सारे देशों में एक जनवरी से नये वर्ष की शुरुआत नहीं मानी जाती है। पांच सौ वर्ष पहले तक ईसाई बाहुल्य देशों में 14 मार्च और 14 दिसंबर को नया वर्ष मनाया जाता था। एक जनवरी को नया वर्ष मनाने की प्रथा पहली बार 34 ईशा पूर्व रोमन राजा जुलियस सीजर ने की थी। रोमन साम्राज्य में कैलेंडर का प्रचलन रहा था। पृथ्वी और सूर्य की गणना के आधार पर रोमन राजा नूमा पोपिलुस ने एक नया कैलेंडर लागू किया। यह कैलेंडर दस महीने का था क्योंकि तब एक वर्ष को लगभग तीन सौ दस दिनों का माना जाता था। तब एक सप्ताह भी आठ दिनों का माना जाता था। नूमा ने मार्च की जगह जनवरी को वर्ष का पहला महीना माना। जनवरी नाम रोमन देवता जैनुस के नाम पर है। जैनुस रोमन साम्राज्य में प्रारंभ का देवता माना जाता था, जिसके दो मुंह हुआ करते थे। मार्च को पहला माह रोमन देवता मार्स के नाम पर माना गया था लेकिन मार्स युद्ध का देव था। नूमा ने युद्ध की जगह शुरुआत के देवता के महीने से वर्ष की शुरुआत करने की योजना की। हालांकि 153 ईसा पूर्व तक एक जनवरी को आधिकारिक रूप से नये वर्ष का पहला दिन घोषित नहीं किया गया। 46 ईसा पूर्व रोमन शासक जुलियस सीजर ने नयी गणनाओं के आधार पर एक नया कैलेंडर जिसमें बारह महीने थे, पृथ्वी को सूर्य के चक्कर लगाने में 365 दिन और 6 घंटे लगते है इसलिए 310 से बढ़ाकर 365 दिन कर दिए। साथ ही हर चार वर्ष पश्चात् फरवरी के 29 दिन कर दिए। जिससे हर वर्ष में बढ़ने वाला एक दिन भी संतुलित हो जाए। वर्ष 45 ई.पू. की शुरुआत एक जनवरी से की गई। वर्ष 33 ई. पू. में जुलियस सीजर की हत्या कर दी गई। उनके सम्मान में सातवें महीने महारानी टिलिस का नाम जुलाई और आठवें महीने सेक्सटिलिस का नाम अगस्त कर दिया गया। इस कैलेंडर का नाम जुलियन कैलेंडर था। रोमन साम्राज्य जैसे जैसे समाप्त होने लगा, ईसाई धर्म का प्रसार उतना ही बढ़ता गया। ईसाई धर्म के लोग 25 मार्च या 25 दिसंबर से अपना नया वर्ष मनाना चाहते थे। ईसाई मान्यताओं

के अनुसार 25 मार्च को विशेष दूत गैब्रियल ने ईसामसीह की मां मेरी को संदेश दिया कि उन्हें ईश्वर के अवतार ईसामसीह को जन्म देना है। 25 दिसंबर वर्ष का बड़ा दिन है, सूर्योदय और सूर्यास्त का काल इस दिन से बढ़ना शुरू होता है जिसे उत्तरायण कहते हैं। इस दिन को ईसामसीह के जन्मदिन के रूप में मनाया जाने लगा। बाइबल में ईसा मसीह के जन्मदिन की कोई निश्चित तारीख नहीं दी गई है। न्यू कैथोलिक इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार भी "मसीह के जन्मदिन की कोई तारीख सही हो इसकी जानकारी नहीं है।"

"मसीह का जन्म किस दिन हुआ था इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।- इनसाइक्लोपीडिया ऑफ अर्ती क्रिश्चियनिटी। बाइबल सीधे सीधे यह नहीं बताती कि यीशु का जन्म कब हुआ था।" लेकिन ईसाई धर्म का विस्तार जैसे जैसे यूरोप में होने लगा और यूरोपियन 25 दिसंबर को विंटर फेस्टिवल के तौर पर ईशा जन्म के पहले बड़े पर्व के रूप में मनाते चले आ रहे थे तो उसका कारण यीशु के मरणोपरांत चौथी शताब्दी में यह निर्णय लिया गया कि 25 दिसंबर को ईसा का जन्म दिन मनाया जाएगा और फिर उन्होंने ईसा के जन्मस्थल को ढूंढना शुरू किया और उसे ईसाईयों का प्रथम गिरजाघर माना गया। उपरोक्त सारी बातों से भारत के किसी धर्म, सभ्यता, संस्कृति का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है। फिर भी हम गुलाम प्रवृति के लोग अपने पर्वों को दकियानूसी बताकर इनके तथाकथित त्यौहार, जो वास्तव में उनका भी नहीं है, उन्हें धूमधाम से मनाते है। **सबसे दुखद बात तो यह है कि हमारे मार्गदर्शक, धर्मगुरु इन लोकैषणा वाली बातों से ग्रसित होकर महामांगलिक के रूप में बढ़ावा देकर समाज को दिग्भ्रमित करते हैं।** श्रावक-श्राविकाओं को इस विषय पर चिंतन कर स्वयं निर्णय लेकर 'अम्मा पिया' की भूमिका, अपना दायित्व निभाने का यह अवसर है, अवश्य निभाएंगे इसी विश्वास के साथ। ❖❖

समय

प्रस्तुति - निधि दिनेश लोढ़ा जैन, वर्ली, मुंबई (महाराष्ट्र)

समय को अपने आप में निवेश करो। हर रोज स्वयं को चेक करें कि क्या हम कल से आज बेहतर हुए हैं, क्या हमारी सोच विकसित हुई है? पुराने जमाने में विकर्षण (Distractions) बहुत कम थे। आदमी बोर होता था तो कोई किताब पढ़ लेता था या खुली हवा में थोड़ा घूमकर आ जाता था। पहले टी.वी. पर पिक्चर केवल रविवार को आती थी लेकिन आज 24 घंटे आदमी Youtube पर पिक्चर देख सकता है। समय की कीमत पहचानना बहुत जरुरी है उसके लिए ध्यान करना अत्यंत आवश्यक है। प्रतिदिन सामायिक तो करली, प्रतिक्रमण भी कर लिया परंतु हमारी सोच बदली या नहीं? प्रकृति की तरह उदारता हमारे में घटित हुई या नहीं।

पहले दोस्त-रिश्तेदारों से लोग कभी-कभी मिलते थे लेकिन आज फेसबूक, इंस्टाग्राम और व्हाटसऐप्प के माध्यम से हर रोज जुड़े रहते हैं। 50-100 व्हाटसऐप्प ग्रुप हैं। जन्मदिन, होली, दिवाली ही नहीं क्रिसमस, हेलोवीन, करवा चौथ सब की शुभकामनाएँ भी फोटो लगाकर भेजते हैं। कहीं हमारा समय हम ऐसे ही गँवा तो नहीं रहे। क्या हम 20-25 मिनिट शांति से बैठकर ध्यान करने का समय निकाल पा रहे हैं या अपना समय दुनियां को आकर्षित करने में ही पूरा कर रहे हैं। पहले तो पिक्चर देखने के लिए पैसा देना पड़ता था तो लोग कभी-कभी जाते थे पर अब OTT Platform - Netflix, Hotstart, Amazon Prime आदि पर सब नई पिक्चर आ जाती है तो लोग सोचते हैं Subscription तो लिया हुआ ही है, फ्री बैठे हैं तो पिक्चर देख ही लेते हैं पर यह नहीं पता कि जैसा भी Content हम देखते हैं, वो हमारे Conscious Mind को प्रभावित करता है, वो जाने-अनजाने में हमारी सोच में बदलाव लाना शुरु करता है। फ्री का किसी से कुछ ना लो। अपने समय को किसी रचनात्मक कार्य में लगा दो।

दूसरो के कपड़े, दूसरो की गाड़ी की बात करने से कुछ नहीं मिलेगा। बस अपने आपको बेहतर बनाते चलो। सिर्फ धार्मिक बनना है या आध्यात्मिक रूप से विकसित होना है? हर क्रिया के साथ उसके अर्थ को गहरे से समझें, ध्यान करने से चीजे गहराई से समझ आने लगेंगी । ❖❖

जैन धर्म में राम

प्रस्तुति - श्री मुन्नालाल जैन, दिल्ली

सनातन परम्परा में सृष्टि की रचना आज से 1,96,08,53,124 वर्ष पूर्व की मानी गई हैं। तब से लेकर अद्यतन सनातन परम्परा का अपना इतिहास, साहित्य मान्यताएं, विश्वास, पूजा पद्धति, आराधना, रीति-रिवाज और विभिन्न मत मतांतर रहे हैं। इन सबको वैदिक धर्म के नाम से जाना जाता है। जिसके अंतर्गत चार वेद, अठारह पुराण, एक सौ आठ उपनिषद्, ब्राह्मण्यक व आरण्यक, नितियों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत व गीता आदि धार्मिक अनुष्ठानों हेतु उपलब्ध रहे।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन चरित्र को प्रकाशित करने के लिए सबसे पहले भगवान वाल्मीकिजी ने संस्कृत भाषा में सर्वप्रथम रामायण की रचना की। उसी के आधार पर आगे अनेक भाषाओं में रामायण की रचना की गई, इनमें प्रमुख हैं महाकवि तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरित मानस, आध्यात्मिक रामायण, आनन्द रामायण, बंगाली में कृतिदास, कश्मीरी रामायण, मराठी में भावार्थ रामायण, गुजराती में रामायण सार, तमिल में कम्बन कृत तमिल रामायण, तेलुगू में द्विपद रामायण और कन्नड़ में पम्प रामायण की रचनाएं हुई। इसके साथ ही विदेशों में भी भगवान राम के जीवन को प्रदर्शित करने हेतु राम लीलाओं का मंचन किया जाता है जिनमें जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, थाईलैंड व मारिशस प्रसिद्ध हैं।

रामानंद सागर ने रामायण के आधार पर विश्वप्रसिद्ध टी.वी सीरियल बनाएं। आधुनिक युग में मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत नामक काव्य ग्रंथ लिखा और नरेंद्र कोहली ने आठ भागों में रामायण की मनोवैज्ञानिक आधार पर रचना की।

वैदिक परंपरा के अतिरिक्त विश्व में तथा भारतीय संस्कृति में बौद्ध और जैन धर्म की विचारधाराओं का भी विशेष प्रभाव रहा है। बौद्ध दर्शन में दशरथ जातक कथाओं के माध्यम से श्रीराम के पावन चरित्र का वर्णन मिलता है।

भगवान राम भारतीय अस्मिता के कण-कण में, रोम-रोम में समाया हुआ है फिर जैन धर्म में भी भगवान राम को पूज्य महापुरुष मानकर अपने साहित्य का अंग बनाया तथा अनेक जैन आचार्यों ने, साधु-साध्वियों ने, कवियों ने, लेखकों ने विद्वान महापुरुषों ने भगवान श्रीराम के चरित्र को विभिन्न रुपों में प्रस्तुत किया है। इसमें सबसे प्रथम आचार्य विमलसूरिजी म.सा. हुए जिन्होंने वीर निर्वाण के 530 वर्ष पश्चात पउम चरिअं ग्रंथ सामने आया। जबकि अधिकांश विद्वान विमलसूरिजी की इस रचना को वीर निर्वाण से 800-900 वर्ष के बाद की मानते हैं।

जैन आम्नाय में राम का मूल नाम पदम् नाम से प्रसिद्ध है इसलिए आचार्य रविसेण ने श्रीराम के जीवन चरित्र को पदम् पुराण के नाम से लिखा। आचार्य स्वयंभू ने अपभ्रंश भाषा में पउम चरिअं काव्य ग्रंथ लिखा। देवगणिजी म.सा. ने राम चरित्र नामक ग्रंथ की रचना कर भगवान राम के भव्य जीवन चरित्र को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। तुलसीदास के समकालीन जैन कवि श्री बनारसीदास द्वारा रचित रामायण काफी प्रसिद्ध हुई। इतिहास में ऐसा वर्णन आता है कि महाकवि तुलसीदास ने अपनी रचना रामचरित मानस को कवि बनारसीदास के पास संशोधन के लिए भेजा था और जो संशोधन बनारसीदासजी ने किये वो तुलसीदासजी ने अपनायें इसी कारण तुलसीदास रचित रामायण में जैन धर्म के सिद्धांतों का भी पुट दृष्टिगोचर होता है। जैन धर्मावलंबियों ने रामायण की हिन्दी भाषा में भी रचना की है। सबसे पहले श्री केसराजजी द्वारा लिखित जैन रामायण तथा जैन कवि प्रवर्तक प. रत्न श्री शुक्लचंन्द्रजी म.सा. द्वारा रचित शुक्ल जैन रामायण बहुत रुचि से पढ़ी और पढ़ाई जाती हैं। तेरापंथ के महान् आचार्य श्री तुलसीजी म.सा. द्वारा रचित अग्नि परीक्षा भी बहुत प्रसिद्ध रचना है।

जैन रामायण का आधार सनातन धर्म की मान्यताओं के आधार पर न होकर सर्वज्ञ भगवन्तों के मुखारविंद से निर्झित वाणी के आधार पर है, क्योंकि सनातन परम्परा में कल्पना का भी सहारा लिया जा सकता है, परन्तु सर्वज्ञ की वाणी कभी अन्यथा नहीं हो सकती है।

जैन इतिहास के अनुसार प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल में तरेसठ श्लाघा महापुरुषों का जन्म होता है, उसमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलदेव, नौ वासुदेव और नौ प्रतिवासुदेव होते हैं।

इस अवसर्पिणी काल में प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ हुए हैं, जिनका इक्ष्वाकु वंश रहा है। तीर्थंकर अजितनाथ, तीर्थंकर अभिनन्दन, तीर्थंकर सुमतिनाथ व तीर्थंकर अनन्तनाथ भी अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश में ही उत्पन्न हुए। महाराज दशरथ इक्ष्वाकु वंश में अयोध्या में ही पैदा हुए इनका अयोध्या के सिंहासन पर जैन धर्म के बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत स्वामी के शासनकाल में हुआ। जैन मान्यता के अनुसार अनरण्य राजा ने मात्र एक मास की आयु के दशरथ का राज्याभिषेक कर इनको राजा बनाया था।

इन्हीं महाराजा दशरथ के श्रीराम सबसे बड़े पुत्र थे। अतः यह सिद्धस्थ तथ्य है कि राम जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के वंशज थे। भगवान राम की माताश्री कौशल्या, राजा सुकौशल की एवं माता अमृतप्रभा की लाडली बेटी थी जो जैन धर्म में पूर्ण आस्था और विश्वास रखती थी। वही जैन संस्कार उसने अपने सुपुत्र राम में डालें जिनका दिग्दर्शन हम राम के जीवन चरित्र में देख ही रहे हैं।

जैन रामायण के अनुसार रावण का वध राम ने नहीं बल्कि लक्ष्मण ने किया, क्योंकि वासुदेव द्वारा ही प्रतिवासुदेव का वध किया जाता है। जीवन के अंत में भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण के मोह में अर्ध पागलपन के दिन व्यतीत किए। उनकी इस अवस्था को देखकर इनके सारथी कृतान्तवदन जो कि सौधर्म विमान में देव बन गए थे, अयोध्या में आकर राम के मोह को भंग किया, जिससे राम को बोधि प्राप्त हुई और राम ने तत्कालीन तीर्थंकर भगवान मुनि सुव्रतस्वामी के पास दीक्षा ग्रहण कर आपनी आत्मा का उद्धार किया तथा तब आराधना कर साठ वर्ष का मुनि जीवन यापन करते हुए समस्त कर्मों की निर्जरा कर अन्त में सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होकर सिद्ध भगवान हुए और सिद्ध सिला पर शैलेषी अवस्था में ज्योत में ज्योत रुप में समा गए।

जैन दर्शन के अनुसार रावण राक्षस नहीं था बल्कि राक्षस नाम का एक वंश था जो विद्याधर नाम से प्रसिद्ध था उसमें इसका जन्म हुआ था। राक्षस वंश की उत्पत्ति तीर्थंकर अजितनाथ के समय में हुई थी। रावण का बाल्यकाल का नाम दशानन था। मुख दस नहीं थे बल्कि दसानन के गले में एक बहुत ही चमकता हुआ हार था, जिसमें नौ रत्न थे। उन पर दसानन के मुख की परछाई पड़ी तो उसके दसा मुख दिखाई देने लगे, तो ऐसा माना जाने लगा कि रावण के दस मुख थे, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। ऐसा माना जाता है कि रावण जैन धर्म के आगामी काल में तीर्थंकर होंगे और धर्म तीर्थ की स्थापना करेंगे।

इसी प्रकार हनुमानजी के बारे में जैन रामायण में वर्णन आता है कि वे बंदर की सन्तति नहीं थे बल्कि वनों में पर्वतों पर रहने वाला वानर नाम का एक वंश था, जिसकी उत्पत्ति तीर्थंकर श्रेयांसनाथ के काल में हुई थी, जिसका मूल पुरुष श्रीकण्ठ था, में हुआ था। हनुमानजी ने भी दीक्षा ग्रहण कर सिद्ध गति को प्राप्त किया था। ❖❖

खिलौना

तीन वर्ष की नन्ही शेफाली आंगन में दौड़ रही थी, पीछे-पीछे छोटा युवराज भी उसे पकड़ने के लिए हंसते हुए भाग रहा था। तभी युवराज गिर गया, उसके रोने की आवाज सुनकर एक तरफ से मालकिन और दूसरी तरफ से आया दोनों दौड़ती हुई आई और उसे चुप कराने लगी।

उसे रोता देख शेफाली खामोश हो गई। मालकिन ने प्यार से पूछा, क्या हुआ और फिर मेरा राजकुमार कहकर युवराज को चुप कराने लगी। यह रोज की ही बात थी। मालकिन आया से कहती, तू शेफाली को ले आया कर। युवराज बहुत खुश रहता है उसके साथ खेलकर।

साल बीत गए आज भी यही हुआ, युवराज खेलते-खेलते गिर गया और शेफाली अपने बहते आंसुओं को पौंछकर कहने लगी - मैं युवराज के लिए एक खिलौना ही तो थी, कल भी और आज भी। ❖❖

हौंसले की उड़ान

प्रस्तुति - श्रीमती नीताजी बाबेल जैन, प्रांतीय अध्यक्षा, राजस्थान प्रांत

आज स्कूल में शहर की Lady SDM आने वाली थी क्लास की सारी लड़कियां खुशी के मारे फूले नहीं समा रही थी। सबकी बातों में सिर्फ एक ही बात थी SDM और हो भी क्यों न, आखिर वो भी एक लड़की थी। पर मेरी तरफ से जब सब लड़कियां व्यस्त थीं एस.डी.एम की चर्चाओं में, एक लड़की सीट की लास्ट बेंच पर बैठी पेन और उसके कैप से खेल रही थी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि कौन आ रहा है और क्यों आ रहा है? वो अपने में मस्त थी, वो लड़की आरुषि थी। आरुषि पास के ही एक गांव के एक किसान की एकलौती बेटी थी। स्कूल और उसके घर का फासला लगभग 10 किलोमीटर का था, जिसे वह साइकिल से तय करती थी। स्कूल में बाकि की सहेलियां उससे इसलिए ज्यादा नहीं जुड़कर रहतीं क्योंकि वो उनकी तरह रईस नहीं थी, लेकिन उसमें उसका क्या दोष था? खैर उसकी जिंदगी सेट कर दी गयी थी इंटरमीडिएट के बाद उसे आगे नहीं पढ़ाया जा सकता था क्योंकि उसके पापा पैसे सिर्फ एक जगह लगा सकते थे, शादी में और या तो आगे की पढाई में। उसके परिवार में कोई भी मैट्रिक से ज्यादा पढ़ा नहीं था। बस यही रोड़ मैप उसके आँखों के सामने हमेशा घूमता रहता है कि ये क्लास उसकी अंतिम क्लास है और इसके बाद उसकी शादी कर दी जाएगी, इसीलिए वो आगे सपने ही नहीं देखती थी और उस दिन एस. डी.एम. के आने की बात का उस पर कोई असर नही हुआ था। ठीक 12 बजे एस.डी.एम. अपने स्कूल में आयी, यही कोई 24-25 साल की लड़की, नीली बत्ती की अम्बेसडर गाड़ी और साथ में 4 पुलिस वाले। 2 घंटे के कार्यक्रम के बाद एस. डी.एम. चली गयी लेकिन आरुषी के दिल में बहुत बड़ी उम्मीद छोड़कर गयी। उसे जीवन से अब प्यार हो रहा था। जैसे उसके सपने अब आजाद हो जाने चाहिए।

उस रात आरुषि नई-नई पायी। वह अब उड़ना चाहती थी फिर अचानक पापा की गरीबी उसके सपनों और मंजिलो के बीच में आकर खड़ी हो जाती है। वह घर वापस गयी और रात खाने के वक्त सब मम्मी और पापा को बता डाला, पापा ने उसे गले से लगा लिया। उनके पास छोटी सी जमीन का एक टुकड़ा था, कीमत 50,000 रुपये की होगी। आरुषि की शादी के लिए उसे रखा गया था, पापा ने कहा कि मैं सिर्फ एक ही चीज पूरी कर सकता हूँ, तेरी शादी के लिए हो या तुम्हारा सपना। आरुषि अपना सपनों पर दांव खेलने को तैयार हो गयी। इंटरमीडिएट के बाद उसने बी.ए. में दाखिला लिया क्योंकि ग्रेजुएशन में इसकी फीस सबसे सस्ती थी। पैसे का इंतजाम पापा ने किसी से मांग कर दिया। ये उसकी मंजिल नहीं थी उसकी मंजिल तो कही और थी, उसकी तैयारी शुरू की। सबसे बड़ी समस्या आती किताबों की, तो उसके लिए नुक्कड़ की एक पुरानी दुकान का सहारा लिया, जहाँ पुरानी किताबे बेचीं या खरीदी जाती थी। ये पुरानी किताबें उसे आधी कीमत में मिल जाती थी, वो एक किताब खरीदकर लाती और पढ़ने के बाद उसे बेचकर दूसरी किताबें। कहते हैं न कि जब परिंदों के हौसलों में शिद्दत होती है तो आसमान भी अपना कद झुकाने लगता है। आरुषि की लगन को देखकर उस दुकान वाले अंकल ने उसे किताबें मुफ्त़ में देनी शुरू की और जो किताबें उनके पास नहीं होती थी उनको वह खुद नई खरीदकर उसे दे देते थें कहते थे कि बिटिया जब बन जाओ तो सूद सहित वापस कर देना। कुछ भी हो आरुषि इस यकीन को नहीं तोडना चाहती थी। ग्रेज्यूशन के 2 साल पूरे हो गए और उसकी तैयारी लगातार चलती रही। सब ठीक चल रहा था कि अचानक उसकी माँ की तबीयत खराब हो गयी, इलाज के लिए पैसे की जरूरत थी लेकिन पहले से ही घर कर्ज में डूब चूका था। अंत में पापा ने जमीन गिरवी रख दी थी और इसी तरह उसने ग्रेजुएशन के तीसरे वर्ष में दाखिला लिया। समस्याओं का निदान नहीं हो रहा था। आरुषि कब तक अपने हौसलों को मजबूत बनाने की कोशिश करती। एक दिन माँ से लिपटकर वह बहुत रोई और एक ही बात पूछती “माँ हमारे कभी अच्छे दिन नहीं आएंगे?” “माँ ने उसे हिम्मत दी और फिर से उसने कोशिश की।”

कहते हैं न कि दुश्मन कभी परजित नहीं होते या तो

विजयी होते हैं और या वीरगति को प्राप्त होते हैं। 23 जून हां ये वही दिन था जब आरुषि ने प्रारंभिक परीक्षा पास की थी। अब बारी मुख्य परीक्षा की थी और आरुषि के हौसले अब सातवें आसमान को छू रहे थे। तीन साल की लगातार कठिन परिश्रम का फल था, आरुषि ने मुख्य परीक्षा भी पास कर ली। अब वह अपने सपने से सिर्फ एक कदम दूर खड़ी थी, पीछे मुड़कर देखती तो उसे सिर्फ तीन लोग ही नजर आते - माँ, पापा और दुकान वाले अंकल।

आखिरकार इंटरव्यू हुआ और अंतिम रूपांतर में आरुषि ने सफलता हासिल की। आरुषि को जैसे यकीन नहीं हो रहा था। माँ, पापा तो अपने आंसुओं के सैलाब को रोक नहीं पा रहे थे। आरुषि अपने घर से तेजी से निकल कर गयी, उन्हीं आंसुओं के साथ, आखिर किसी और को भी तो उसे धन्यवाद देना था। सीधे जाकर दुकान वाले अंकल के पास रुकी, अंकल ने उसे गले से लगा लिया और खुद भी छटपटा गए।

ये जीत सिर्फ आरुषि की जीत नहीं थी। जीत में शामिल थी माँ की ममता, पिता के हौसले और दुकान वाले अंकल का आरुषि पर यकीन। ❖❖

चिंतन के क्षण

प्रस्तोता : डॉ. भद्रेशकुमार जैन, चेन्नई (सोजतसिटी)

हे जीव! तूं किसे अपना मान रहा है? तेरा तन भी तेरा नहीं है। मोह के वशीभूत जिन्हें तूं अपना मान रहा है, वे घर की चोखट या श्मशान तक ही तुझे पहुँचा पाएंगे, परलोक की यात्रा तो तुझे एकाकी ही करनी है। तेरा धन, महल, व्यवसाय, प्रियजन सब यहीं रह जाएंगे। जिन तूं 18 पापों का सेवन कर रहा है, उनके परिणाम तुझे अकेले ही भोगने पड़ेंगे। अतः मोह का परित्याग कर तथा 18 पापों का वर्जन कर, देह को नश्वर समझते हुए निजात्मा में ही रमण कर!

हे जीव! तुमने मोह, स्वार्थ, उन्मादवश कितने जीवों का हनन किया, कितनों को सताया, कितनों को पीड़ा पहुँचाई किंतु अब तेरी स्वयं की ही देह कृश एवं जर्जरित हो गई। अब तेरी ही इन्द्रियाँ शिथिल हो गई। तेरी इन्द्रियों के विषय-विकारों ने ही तुझे बर्बाद किया है। समय रहते चेत जा, सचेत हो, विषय-विकारों का परित्याग कर और जिनेश्वर देव का स्मरण कर, उन्हीं के बताए मोक्ष-मार्ग का अनुकरण कर, यही तेरी आत्मा के लिए श्रेष्ठ तथा इहभव हितकारी एवं परभव सुखकारी है।

हे जीव! शुभ अशुभ में तथा अशुभ शुभ में परिणत होता आया है। आज सशक्त है, कल वह निर्बल है। आज बाल है, कालान्तर में वह युवा है, जो युवा है, वह कालान्तर में प्रौढ़ावस्था को प्राप्त कर वृद्ध बनेगा तथा जो वृद्ध है, वह कालान्तर में मरणधर्मा बनेगा। इस देह का अभिमान मत कर। जिस देह को तूं नहलाता है, शृंगारित करता है, वह देह मल-मूत्रादि अशुचि का भण्डार है । इस देह-व्यामोह का परित्याग कर, धर्म की शरण स्वीकार कर । धर्म ही तेरा त्राण तथा रक्षक है ।

हे जीव! सुदेव-सुगुरु-सुधर्म की शरण ही सच्ची शरण है। धर्म के सतत आचरण से आत्मा धीरे-धीरे कर्म भार से मुक्त हो, निर्मल बनती है। धर्म से ही आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है। धर्म बाल्यावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था में सदैव करणीय है। बुढ़ापे में धर्माचरण की मत सोच! वृद्धावस्था में तो तेरी देह शिथिल हो जाएगी। आँखें देखना, कान सुनना बन्द कर देंगे, हाथ-पैर अक्षम हो जाएंगे। अतः इन्द्रियों के सशक्त रहते, धर्म में सदा रमण कर, पंच परमेष्ठी का स्मरण कर!

हे जीव! आत्मा सदा अमर है। आत्मा ही तेरा मित्र, आत्मा ही तेरा शत्रु, आत्मा ही वैतरणी नदी एवं आत्मा ही कामधेनु है। सुख-दु.ख, सम्पत्ति-विपत्ति कर्माधीन है। अपने किए हुए कर्मों का ही तूं फल पा रहा है। अतः उद्विग्न मत बन, चित्त में सदा समता भाव रख । आज धूप है तो कल छाँव भी होगी ।

बाहर तो एक सूर्य का प्रकाश है, तेरे भीतर हजारों हजार सूर्यों का प्रकाश है, आवश्यकता है आत्म-ज्योति को प्रकट करने की। आत्म-जागरण एवं सम्यक् धर्माचरण से ही हे जीव! मोक्ष मिलता है ।

❖❖

जैनों को सही जनगणना क्यों करानी चाहिए ?

प्रेषक - श्री हंसकुमार जैन, बामनौली

जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों और उप-सम्प्रदायों अर्थात् दिगंबर, श्वेतांबर आदि जैनों को निम्नलिखित कारणों से एकजुट होकर जनगणना करानी चाहिए, क्योंकि जनतंत्र में संख्या का खास महत्व हैं।

1. प्राचीन तीर्थ स्थलों और संपत्तियों की सुरक्षा एवं संस्कृति की रक्षा करने के लिए। **2.** सटीक जनगणना कर डेटा प्राप्त करना व जरूरत पर उपयोग करने के लिए। **3.** सभी भाषाओं में समृद्ध जैन दर्शन के साहित्य का संरक्षण करने के लिये। **4.** आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की सहायता करने के लिये। **5.** पुरातत्व, अंतरिक्ष, भूगोल, खगोल शास्त्र आदि के क्षेत्र में महावीर वाणी की प्रासंगिकता और जैनियों के योगदान पर शोध, जैन दर्शन को जीवन दर्शन स्थापित करने के लिये। **6.** राजनीतिक एवं व्यापारिक मजबूती प्राप्त करने के लिए। **7.** शासन,प्रसाशन, राजनैतिक ढाँचे में पहचान बनाने के लिए।

कुछ चौंकाने वाले तथ्य : 1. जैनियों की जनसंख्या एक समय लगभग 60 करोड़ थी और 2011 की जनगणना के अनुसार, यह 44,51,753 है जो भारत की कुल जनसंख्या का 0.37% है। **2. जन सांख्यिकीय प्रवृत्ति :** 1961 में जैन जनसंख्या, भारत की कुल जनसंख्या का 0-46% थी, जो 2011 में घटकर 0-37% हो गई। इसके और भी कम होने की संभावना है। **3.** 1961-71 के बीच-जैनियों की जनसंख्या वृद्धि 28.48% थी जो वर्तमान में 5.37% है, जो राष्ट्रीय औसत 17.72% के मुकाबले सबसे कम वृद्धि है, जिसमें हिंदुओं की वृद्धि दर 16.76%, मुसलमानों की 24.65%, ईसाइयों की 15.53% है। सिख 8.42%, बौद्ध 6.13%।

4. जैनियों की साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत 72-98% के मुकाबले 94.88% है। **5.** जैनों में बाल लिंग अनुपात (0-6 वर्ष) सबसे कम है। 1000 लड़कों के मुकाबले 899 लड़कियाँ हैं। **6.** भारत की औसत प्रजनन दर 2-17% है जबकि जैनियों में 1.46% प्रति दम्पति है। **7.** अधिकतम उम्र 60 वर्ष से ऊपर। राष्ट्रीय औसत 8.95% के मुकाबले 12.78%। **8.** बच्चों की जनसंख्या 0-14 राष्ट्रीय औसत 30-76% जबकि जैनो में 20.70%। **9.** जैन युवा आबादी 11.7% से घटकर 6.2% हो गई, जबकि अन्य धर्मों में, यह 2001 और 2011 की जनगणना के आंकड़ों की तुलना में ऊपर की ओर है। **10.** जैनियों का कोई अपराध का रिकॉर्ड नहीं के बराबर हैं। जैन शांतिप्रिय और कानून का पालन करने वाले हैं।

11. यदि जनसंख्या में गिरावट का यही क्रम जारी रहा तो भारत में जैनियों की कुल जनसंख्या 2061 में 8 लाख रह जाएगी, यानी वर्तमान गणना से 68% कम। उपरोक्त आंकड़ों से पता चलता है कि जैनियों में सबसे अधिक दीर्घायु और सबसे कम प्रजनन क्षमता है। समृद्धि और परंपरा पर चलने की कमी ने डेनमार्क, नॉर्वे और कुछ यूरोपीय देशों जैसे भौतिक रूप से सफल समाज को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ रहा है, जहां अब अपने समाज को चलाने के लिए प्रवासियों पर निर्भर रहना पड़ता है। यदि हम चेतावनी के संकेतों के प्रति अनभिज्ञ रहे तो ऐसा प्रश्न सामने आ सकता है। एक समय आएगा जब जैन आबादी नगण्य हो जाएगी। और हम अन्य धर्मों की श्रेणी में आ जाएंगे। जैनियों की उपस्थिति के बिना, जैन दर्शन अस्तित्व में नहीं रहेगा और महावीर के मंत्र, अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह विलुप्त हो जाएंगे। आर्थिक रूप से मजबूत समुदाय में कम प्रजनन दर, उच्च साक्षरता और समृद्ध समाज के विरुद्ध काम कर रही है। इसलिए, मेरे प्यारे जैन भाइयों, आइए हम एकजुट हों एवं सही जनगणना कराये एवं अपनी प्राचीन मूर्तियों, पूजा स्थलों, गुफा मंदिरों, चित्रों को नष्ट किए जाने, विरूपित किए जाने, कब्जा किए जाने से पहले उनकी सुरक्षा के लिए प्रयासों की योजना बनाये, जिससे हमारी सामूहिक सम्पति, संस्कृति, साहित्य एवं शिक्षा की रक्षा कर सके। आइए हम अपने युवाओं, बच्चों को हमारे धर्म को समझने और ईमानदारी से अपनाने में मदद करें और उन्हें जैन कहलाने के लिए इच्छुक और गौरवान्वित महसूस करावे। हम अपने तीर्थंकरों के शांति और समता के सार्वभौमिक संदेश को कायम रखने का प्रयास करें। क्षुद्र झगड़ों से रहित और गहरे सौहार्दपूर्ण एकजुटता के लिए वातावरण बनाये। ❖❖

परमेष्ठी-वन्दन (स्वरूप दर्शन)

रचयिता : श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली

अरिहंत-तीर्थ के जो हैं प्रवर्तक, धर्म के आधार हैं,
लोक हितकारी अनन्ता, गुण के जो आगार हैं ।
विलग दोषों से सभी, सर्वज्ञ हैं वीतराग हैं,
प्रीति अर्हन् देव की, अर्हन् गुणानुराग है ।।

सिध्द- तोड़कर कर्मों के दल को, हो गये कृतकृत्य हैं,
निज रूप रमते जहाँ, आनन्द सिन्धु नित्य हैं ।
अविकारी, अविनाशी, निरंजन और देहातीत हैं,
सिद्ध प्रभु का ध्यान हो तो साधना का गीत है ।।

आचार्य-विमलतम आचार धारा, में रमण है सर्वदा,
रत्नत्रय से है विभूषित, दिव्य जिनकी संपदा ।
तीर्थ के जो हैं प्रवक्ता, साधना आदर्श है,
आचार्य की अनुपालना, आचार का उत्कर्ष है ।।

उपाध्याय-जिन कथित उस धर्म के,जो योग्य हैं तत्त्वार्थ में,
साधना के हैं शिखर, अनुरक्त हैं परमार्थ में ।
उपदेश सम्यक् दे सदा, महिमा बढ़ाते धर्म की,
उपाध्याय भगवन् से मिली,वह ज्योति होती परम की।।

साधु - आत्मार्थ की शुभ साधना में, जो बने अणगार हैं,
श्रुतज्ञान से व्रत पालना, जिनको सहज स्वीकार है ।
इन्द्रियजयी, समभाव के, सेवा-विनय के कुंज हैं,
जो देशना उनसे मिले, वह प्रेरणा का पुंज है ।।

भाव जागृति-अज्ञानता में भोगता हूँ, दुःख अनादिकाल से,
कोई बचाता है नहीं, संसार माया जाल से ।
मैं ग्रहण करता अहो ! परमेष्ठी तेरी शरण को,
भाग्य से अब मिल गया, जलपोत मेरे तरण को ।।

चिन्तामणि से भी मुझे, बहुमूल्य मणि है मिल गये,
जो सुख मिले चिन्तामणि से लोक तक ही रह गये ।
परमेष्ठी वंदन से मिले, सुख लोक अरु परलोक में,
अवसर न अब खोऊँ कहीं, दुर्लभ मिले आलोक में ।।

आज कण-कण को मिला, मानो सुधारस पान है,
भव पार करने का जगा, अब आतमा में भान है ।
परमेष्ठी वंदन के लिये, तत्पर हुआ हूँ मैं अहा !
वरना समागम क्यों हुआ है, इस अकिंचन का यहाँ ।।

वन्दना- श्रद्धा, विनय से कर रहा, वंदन सभी परमेष्ठी को,
सर्वस्व मेरा है समर्पित, लोक के इन श्रेष्ठी को ।
ये सभी आराध्य हैं, और लोक के आधार हैं,
परमेष्ठी पद की वंदना ही वंदना का सार है ।।

मंगल-करण, मंगल-शरण, मंगल इन्हीं का गान है,
मंगलों में श्रेष्ठ मंगल पांच पद का ध्यान है ।
परमेष्ठी वंदन से सभी, दूर होते द्वन्द्व हैं,
भव पार होते भव्य फिर, आनन्द ही आनन्द है ।।

(लय : शुभ केलि के आनन्द के...)

भारत के पास लगभग 1380 आयलैंड है (ऐसे स्थान जो चारों तरफ से पानी से घिरे हुए हो आयलैंड कहलाते है।) बहुत से तो ऐसे है, जहाँ तक अभी कोई निवासी नहीं है। 572 आयलैंड है अंडमान निकोबार द्वीप समूह में, 39 आयलैंड लक्ष्य द्वीप में, 26 आयलैंड महाराष्ट्र में, 23 आयलैंड केरल में, 20 आयलैंड पश्चिम बंगाल में, 15 आयलैंड तमिलनाडु में, 14 आयलैंड गोवा में, 9 आयलैंड गुजरात में, 7 आयलैंड उड़ीसा में, 7 आयलैंड आंध्र प्रदेश में है। इसके अलावा असम, मणिपुर, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कोंकण में सैंकड़ों नदी द्वीप है।

ये सब होते हुए भी हम भारतीय हर साल 67 अरब डॉलर विदेश में यह सब देखने में खर्च करते है। जबकि भारत एकमात्र ऐसा देश है, जहां सभी महाद्वीपों का मौसम पाया जाता है। यहां बर्फीली चोटियाँ, मरुस्थल, वर्षावन, सघन वन, नदी डेल्टा, पहाड़, नदियाँ, ऊंची चोटियाँ, हिल स्टेशन, सब कुछ उपलब्ध है। अगर हम चाहे तो 20 अरब डॉलर का व्यापार और पर्यटन अपने ही देश में कर सकते है।

आचार्य हस्ती के अनमोल वचन

- गुरु चरण बड़े प्रतापी बड़े प्रभावी होते हैं ।
- व्यक्ति की श्रद्धा व्यक्ति का विश्वास जगता है ।
- जितना-जितना गुरुजनों के बड़े लोगों के सान्निध्य में कोई रहता है, वह उतना ही भव-प्रपंचों, पाप कार्यों व अन्य टंटो से दूर रहेगा ।
- जहां समता और सहनशीलता है, वहां करुणा और दया निश्चित ही विद्यमान है । करुणा और दया धर्म दो अंग है ।
- अहिंसा सभी धर्मों (कर्त्तव्यों) का मूल है ।
- संवेदनशील का तात्पर्य यह है कि आज किसी अन्य प्राणी की वेदना को अपनी वेदना समझिये । फिर देखिये आपका जीवन व्यवहार बदलता है या नहीं ।
- मान किस बात का ? ये सब बातें आज हैं कल नहीं । फिर गर्व क्यों ? संसार स्वप्नवत् हैं । चार दिन की जिन्दगी में धन, पद, शारीरिक शक्ति, वक्तृत्व-कला, जाति-कुल, रूप आदि पर मान अभिमान करने वाला साधना के पथ पर गतिमान नहीं हो सकता ।
- कोई तपस्वी है, कोई ज्ञानी है, कोई ध्यानी है और भी न जाने किन-किन विशेषताओं से युक्त हैं पर भीतर में समता नहीं है तो कुछ भी नहीं, सब व्यर्थ है ।
- अपना दुःख स्वयं सहन करने का साहस जीवन की अनिवार्य अंग है और उसके लिए समत्व की साधना करनी चाहिए । समता जब जग जायेगी तो राग भी दुःख देने वाले नहीं होंगे ।
- तपस्वियों में यदि क्षमाशीलता का सौन्दर्य हो तो वे सुन्दर हैं रूपवान हैं, प्रशंसनीय, दर्शनीय, वंदनीय है ।
- जो तपस्वी जितना क्षमाशील होगा, वह उतना ही लब्धि सम्पन्न होगा ।
- आप तप नहीं कर सकते है तो व्यसन छोड़ कर भी तप-साधना में आगे बढ़ सकते हैं ।
- इच्छाओं का जितना-जितना आप निरोध करेंगे, उतने-उतने धर्म आराधना में लगेंगे ।
- यह मन, यह साधन, यह क्षेत्र, यह पुण्यशीलता प्राप्त करने के बाद भी क्यो नहीं बोध प्राप्त करते हैं । क्यों नहीं जागते ? यदि अब नहीं जागोगे तो कब जागोगे ।
- मानव जीवन में सत्य का स्थान अत्यंत ऊँचा माना गया है । महाव्रतों में इसका दूसरा स्थान है । मानवता की सच्ची परख सत्य की कसौटी पर कसे जाने से होती है ।
- सत्य के बिना व्यक्ति या समाज का कोई अस्तित्व नहीं है । सत्य के धरातल पर ही समाज का सारा ढांचा खड़ा है । सत्य विमुख समाज का स्वरूप ही नष्ट भ्रष्ट नहीं होता, वरन उसकी साख प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान भी लुप्त हो जाता है । सत्य के बिना कोई समाज नहीं चल सकता ।
- संगति ही करनी है तो धर्म प्रेमी, गुणी सज्जन निर्व्यसनी की करें, साधु संतो की करे । अच्छी संगति अच्छा फल देगी । पाप का पंथ छूट जायेगा । धर्म का पंथ जीवन कल्याण का सत्य मार्ग मिल जायेगा । एक बार कदम इस मार्ग में चलने लगे तो यहां भी सुख प्राप्त होगा और वहां भी सुख मिलेगा ।
- सुख भी डुबाता है दुःख भी डुबाता है । जगाता है तिराता है एवं पार लगाता है- ज्ञान ।

- साभार : संगीत सरिता से

भगवान् महावीर : एक परिचय

सत्य-अहिंसा-अनेकान्त के महानायक हैं-	भगवान् महावीर
आत्मा विज्ञान के उद्भट्ट विद्वान् थे	- भगवान् महावीर
अहिंसा के मॅर्धन्य व्याख्याकार थे	- भगवान् महावीर
मानवता के मसीहा थे	- भगवान् महावीर
सर्वोदय तीर्थ के प्रणेता थे	- भगवान् महावीर
विलक्षण विचारों के वीर प्रहरी थे	- भगवान् महावीर
बौद्धिक जागृति के अग्रणी चेता थे	- भगवान् महावीर
सामाजिक परिष्कार के सर्वमान्य नेता थे-	भगवान् महावीर
विश्व मंगल के पावन प्रेरणा स्रोत थे	- भगवान् महावीर
विश्व शांति के संरक्षक थे	- भगवान् महावीर
आत्मध्यान के महानायक थे	- भगवान् महावीर
समता के प्राणपुरुष थे	- भगवान् महावीर

एक रुपये के बदले 100 रुपये

प्रस्तुति : श्री जयंतिलालजी कूकड़ा जैन - प्रांतीय अध्यक्ष, गुजरात प्रांत

एक फोटोकॉपी की दुकान पर एक लड़का उम्र लगभग 22, एक लड़की उम्र लगभग 19 साल की, एक लड़का लगभग 35 वर्ष का दाखिल हुए। काफी जल्दबाजी में उन्होंने कुछ पहचान पत्र जैसे आधार कार्ड, मैट्रिक सर्टिफिकेट आदि फोटो कॉपी के लिए दिए। लड़की कुछ उदास और चिंतित थी। फोटोकॉपी वाले दुकानदार लगभग 45 की आयु के थे, उन्होंने पूछा कितनी कॉपी करनी है, किसलिए करनी है? तो लड़की के मुंह से निकला, दस-दस ही कर दीजिए पता नहीं दुबारा करने का मौका ना मिले, पता नहीं जिन्दा भी ना छोड़ें। साथ आए आदमी ने कहा, अरे तुम लोग चिंता मत करो, मैं हूँ ना तुम्हारे साथ, कुछ नहीं होगा।

सार्वजनिक स्थान होने के कारण उन लोगों ने लड़की को चुप रहने का इशारा किया, तभी अचानक दुकानदार ने लड़की से पूछा क्या बात है बेटा! तुम कुछ उदास लग रही हो? अगर कोई परेशानी हो तो मुझे बता सकती हो, मैं तुम्हारे पापा की तरह हूँ। पापा का नाम आते ही लड़की रुआंसे स्वर में बोली मैं इस लड़के से प्यार करती हूँ और शादी करना चाहती हूँ मगर मेरे घर वाले तैयार नहीं हैं। इसलिए घर से भाग कर आई हूँ, क्योंकि ये लड़का दूसरे धर्म का है। ये साथ वाले आदमी इसके चाचा जान हैं। इनका कहना है कि एक बार निकाह होने के बाद सब मान जायेंगे।

दुकानदार ने उस लड़की को चुप कराया और प्यार से पूछा कि अगर तुम्हें 100 रुपये और 1 रुपये में से चुनना हो तो क्या चुनोगे? लड़की बोली क्या अंकलजी ये भी कोई पूछने की बात है। मैं 100 ही चुनुंगी। ऐसे बोलते हुए वो लड़की चिड़िया की तरह चहक उठी।

तो उस दुकानदार ने उसे समझाया यही बात रिश्तों पर भी लागू होती है। तुम एक रिश्ते के लिए सौ रिश्तों को छोड़ कर भाग आई हो ऐसा सुनते ही जैसे लड़की को झटका लगा और उसने लड़के से कहा- मुझे अपना फोन दो, मुझे पापा से बात करनी है। लड़के ने फोन देने से मना किया और कहा कि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, हम दोनों बहुत खुश रहेगें। लड़की बोली- तुम मुझे फोन दे रहे हो कि नहीं? जब उस लड़के ने अपना फोन उस लड़की को नहीं दिया तो वह लड़की दुकानदार से फोन लेकर अपने पापा से बात करने लगी और रोते हुए कहा कि पापा आप मुझे लेने आ सकते हो, कहकर फोन दुकानदार को दे दिया। दुकानदार ने फोन पर अपना पता बता दिया और कहा कि जब तक आप नहीं आ जाते, आपकी बिटिया मेरे पास सुरक्षित है।

उन दोनों लड़कों ने जब सब बात सुनी तो भागने लगे तब लड़की बोली- भाग क्यों रहे हो, तुम तो बहुत प्यार करते हो मुझसे? लड़का तब भी नहीं रुका और उसका सामान लेकर भागने लगा तो लड़की बोली- पकड़ो इन्हें, मेरे बैग में बहुत से गहने हैं जो मैं घर से लाई थी तो आस-पास के लोगों ने उन दोनों को पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया।

शाम तक उस लड़की के पापा आकर उस लड़की को अपने साथ घर ले जाने लगे तो लड़की ने दुकानदार को कहा अंकलजी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! मैं एक रिश्ते के बदले सौ रिश्तों को लेकर जा रही हूँ।

उस भले दुकानदार के कारण ये लड़की तो बच गई मगर ना जाने कितनी ही लड़कियाँ हर रोज एक रिश्ते के बदले में सौ रिश्तों को छोड़ देती हैं और बाद में ज्यादातर को तो एक रिश्ता भी नहीं मिलता है, क्योंकि कई तो मृत्यु को भी प्राप्त हो जाती हैं। सोचने वाली बात है, सोचना जरूर कि तुम्हारी एक सोच कितनों की जान बचा सकती है और यही पुण्य का कार्य तुम्हारे परिवार, बाल-बच्चों और वंश को आगे बढ़ाएगी और अच्छा बनाएगी। ❖❖

अष्ट धर्म प्रभावक

आगम में ८ प्रभावक बताये हैं - १. ज्ञानी, २. वक्ता, ३. तपस्वी, ४. भविष्यवक्ता, ५. वाद-विवाद पटु, ६. दीक्षार्थी, ७. कवि, ८. ब्रह्मचारी ये शासन की अच्छी प्रभावना कर सकते हैं ।

ये बिजनेस है

- श्री आनंदजी मेहता जैन - प्रांतीय अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल

पापा कहते थे नौकरी=ना करी। इतनी किस्मत और इतना दिमाग लेकर पैदा नहीं हुए है कि सरकारी वेतन उठाने लायक हो सकें, तो सच में नौकरी नहीं करनी चाहिए। बड़ी निर्दयी होती है ये प्राइवेट नौकरी। जब खुश करने पर आती है तो सरकारी नौकरी और बंदे की योग्यता से भी कहीं ज्यादा बड़ा पैकेज देती है, बोनस देती है, पार्टी देती है, घुमाती-फिराती है, यहाँ तक कि मन मुताबिक छुट्टी भी देती है।

लेकिन जब छीनने पर आती है तो ये भी नहीं देखती कि किसी के बच्चे हैं, परिवार का खर्च है, कोई घर से दूर आकर दिन-रात घिस-घिस कर काम कर रहा है, जिससे कि खुद को साबित कर सके, किसी का लोन चल रहा है, किसी के बच्चे की थैरेपी है, कोई अपने गांव में रह रहे पिता से कह कर आया कि मेरे भाई-बहन की पढ़ाई की चिंता मत करना, अब मैं कमाने लगा हूँ। प्राइवेट नौकरी ऐसा कुछ नहीं देखती, ना इसे फर्क पड़ता है आप जिएं या मरें, इसके लिए सब **'नथिंग पर्सनल, इट्स बिजनेस'** वाला हिसाब है।

आप हर रोज की तरह ऑफिस जाते हो, लेपटॉप खोलकर काम करते हो, साथियों के साथ चाय पीने जाते हो और जब वापस आते हो तब तक आपकी नौकरी चली जाती है। किसी को फर्क नहीं पड़ता कि आपने रात के एक बजे भी काम किया है। आप सुबह दो घंटे मेट्रो में सफर कर जल्दी ऑफिस पहुँचे हो, आपने संस्था का नाम बढ़ाने में अपनी नींदें और चैन कुर्बान किया है। बस एक फोन कॉल और सब खत्म।

ये सही है कि जिसने पेट दिया है वो इसे भरने का जरिया भी देता है। कोई भूखा नहीं मरता। एक काम गया तो दूसरा मिलेगा, मगर उस समय लगता है कि सब खत्म। आपकी टीम जो परिवार जैसी रही है। सुख-दुःख में एक दूसरे का हाल पूछा, दिन के कई घंटे साथ बिताए, साथ हंसे-रोए, खाना-पीना, चाय-कॉफी साथ किया और एक दिन पता लगता है कि आज के बाद हम साथ नहीं हैं। पूरी टीम खत्म, सब अलग-अलग रास्ते निकलेंगे। मगर इससे किसे फर्क पड़ता है? ये सब तो बिजनेस है।

खैर सदमा था उबर रहे हैं। जब-जब टूटे हैं तो बेहतर होकर ही उठे हैं। इस बार भी उठेंगे पहले से ज्यादा मजबूत होकर। बाकी टीम बहुत शानदार रही। पहली बार इतना बढ़िया सेटअप देखा था, हर तरफ लोग इंग्लिश में बतिया रहे, मेरे लिए सब नया था, पैर कांपते थे, किसी से बात करने का मन नहीं होता था। लगता था जल्दी-जल्दी काम निपटाकर रूम पर भागे, लेकिन वहाँ भी अकेले। ये टीम ही थी, जिसे पता था मैं लंच या चाय के लिए नहीं जाता; मगर फिर भी हर बार पूछती थी, सबने इतना पूछा कि मुझे अब आदत होने लगी थी, सबके साथ चाय ब्रेक के लिए जाने की। दोस्त बनने लगे थे, ऑफिस में काम करते हुए मजा आने लगा था, लेकिन तभी सब बिखर गया।

नौकरी फिर आएगी, नहीं आएगी तो नौकरी की वजह से अधूरे पड़े तीन नॉवेल पूरे करेंगे, या फिर कुछ अपना काम करेंगे। लेकिन इतने अच्छे साथी छूट गए इसका दुःख हमेशा रहेगा। खैर जिंदगी है, ऐसे हादसों को भुलाकर आगे बढ़ना ही पड़ता। हम सभी साथी आगे बढ़ेंगे, जिंदगी में फिर से कुछ अच्छा करेंगे और इससे आगे और अच्छे लोगों को अपने साथ जोड़ेंगे।

नौकरी लेने के बावजूद नौकरी देने वाले का शुक्रिया इतने अच्छे साथी और इतनी अच्छी यादें देने के लिए। वो कहते हैं ना, **'लव यू गाइज'** मिलते रहेंगे। ❖❖

परिश्रम सौभाग्य की जननी है। देने के लिये 'दान' लेने के लिये 'ज्ञान' और त्यागने के लिये 'अभिमान' सर्वश्रेष्ठ हैं।

अच्छे के साथ अच्छे बने, पर बुरे के साथ बुरे नहीं। क्योंकि हीरे से हीरा तो तराशा जा सकता है, लेकिन कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं किया जा सकता। यदि कड़ी मेहनत आपका हथियार है तो सफलता आपकी गुलाम हो जाएगी।

जय जिनेन्द्र ! ❖❖

दिसम्बर 2023 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैयावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति अक्टूबर माह में भी गति प्रदान की गई है। वर्तमान में चातुर्मास चल रहे हैं और हर प्रांत की वैयावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैयावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैयावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमेन श्री अशोकजी रांका, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.रतनचंदजी सिंघवी ने जानकारी देते हुए बताया कि सितम्बर माह की भाँति इस अक्टूबर माह में भी लगभग 100 के आस-पास सक्षम संघों ने सेवादारों को मासिक वेतन प्रदान किया है। राष्ट्रीय वैयावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 10,32,500 रुपये की धनराशि वेतन के रूप में प्रदान की है। 49,600 रुपये की धनराशि से व्हील चेयर खरीदे गये तथा दवाईयों हेतु 72,120 रुपये की धनराशि खर्च हुई। इस प्रकार कुल 11,51,500 रुपये की धनराशि वैयावच्च गतिविधियों में अक्टूबर माह में खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमेन श्री अशोकजी रांका, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी राजावत, राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती मनीषाजी कागरेचा, योजना के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी ने सभी दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए वैयावच्च सेवा में रुचि रखने वाले सभी महानुभावों से योजना में अधिकाधिक सहयोग देने की अपील की है। वैयावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचन्दजी सिंघवी द्वारा साधु-साध्वीवृन्द के प्रति सेवा कार्यों को जहां मुक्त हस्त से पूरा किया जा रहा है वहीं आप पूज्यवर्ग की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानते हैं, उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी को इस पुण्यात्मक कार्य से जोड़ने के लिए अपनी एवं अपनी टीम की ओर से आभार प्रकट किया।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल सदस्य श्रीमान् कांतिकुमारजी लोढ़ा जैन के पिताजी श्रीमान् हरकचंदजी लोढ़ा जैन का स्वर्गवास

वैजापुर (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल सदस्य, समाजसेवी श्रीमान् कांतिकुमारजी लोढ़ा जैन के पिताजी धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, श्रीमान् हरकचंदजी लोढ़ा जैन का 86 वर्ष की आयु में 08 जनवरी 2024 को देवलोकगमन हो गया। आप सदैव समाजसेवा, साधु-साध्वीवृंद की सेवार्थ तत्पर भावना और संघ हित के कार्यों में व्यस्त रहते थे। आपने स्वयं जैसे आध्यात्मिक, धार्मिक एवं समाजसेवा के प्रति समर्पण के भाव अपनी संतानों को प्रदान किये। इसी परिणाम है कि आपके सभी सुपुत्र सदैव आपके द्वारा प्रदत्त संस्कारों से आप ही की तरह समाज सेवा के प्रति निस्वार्थ भाव से अपना तन-मन-धन प्रदान करते हैं। ऐसी पुण्य आत्मा का जन्म आज के समय में विरल ही होता है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपकी पुण्य आत्मा की शांति के लिए वीर प्रभु से कामना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है और आपके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

प्रेषक : जसंवत जैन, दिल्ली

समाचार प्रकाश

आचार्य भगवंत की पावन सन्निधि में ऑन लाईव ध्यान-साधना शिविरों का आयोजन

नई दिल्ली : आचार्य भगवन् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के आशीर्वाद से दिनांक 10 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2023 तक ऑनलाईव ध्यान-साधना शिविर का आयोजन भारत के 11 शहरों में हुआ। जिसमें जम्मू, भठिण्डा, आदीश्वर धाम, कुप्पकलां, जैन भवन-दिल्ली, उदयपुर, भीलवाड़ा, दुर्ग, सरस्वती विद्या केन्द्र, नाशिक, पुणे, मुम्बई, सूरत आदि जगह पर क्रमशः एक दिवसीय, चार दिवसीय, दस दिवसीय, 21 दिवसीय का शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में 68 साधु-साध्वीवृंद एवं 494 श्रावक-श्राविका सम्मिलित हुए। जूम ऐप के माध्यम से सब जगह लाईव ध्यान-साधना सम्पन्न हुई। शिविरार्थियों के अनुभव प्रशंसनीय रहे।

जैन भवन-नई दिल्ली : ध्यानयोगी, परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म. के परम पावन सान्निध्य एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान आनन्दमलजी छल्लाणी जैन सा. की शुभकामनाओं से जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला शाखा के तत्वावधान एवं राष्ट्रीय व प्रान्तीय महिला शाखा दिल्ली प्रदेश के समर्पित सहयोग से जैन भवन-नई दिल्ली में चार दिवसीय आत्म-ध्यान शिविर का भव्य आयोजन 10 से 13 दिसम्बर 2023 तक किया गया। आत्म-ध्यान की साधना न केवल आत्मशोधन की साधना है अपितु अपने भावों को निर्मल, समुज्ज्वल एवं प्रफुल्ल बनाए रखने की भी उत्कृष्ट एवं महत्ती साधना है। कोई भी साधक आत्म-ध्यान को छोड़कर अर्हम् को पाने की ओर अग्रसर होने लगता है, जीवन में संतुष्टि के भावों को पाने लगता है, संक्षेप में, ध्यान साथक राग-द्वेष से विलग होकर निज में रमण करने की प्रवृत्ति से जुड़ता है।

इस अवसर पर श्रमणी सूर्या, उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी महासाध्वी पू. डॉ. सरिताजी म.सा. आदि ठाणा का सुखद संयोग भी साधकों को प्राप्त हुआ। इस चार दिवसीय आत्म-ध्यान-साधना शिविर में प्रथम दिवस लगभग 60 तथा बाकी दिनों में लगभग 40 आत्मार्थी साधकों ने भाग लियाा जिसका सफल संचालन लुधियाना से पधारे श्री राजकुमारजी जैन एव श्री रेणूजी जैन द्वारा किया गया। सभी साधकों ने इस ध्यान को अपने जीवन का महत्वपूर्ण एवं चिर-स्मरणीय प्रसंग बताते हुए ऐसे ध्यान शिविरों की वर्तमान समय में आवश्यकता पर जोर दिया।

जैन भवन में इस आत्म-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जयप्रकाशजी ललवाणी जैन के कुशल संयोजन में हुआ। जैन भवन में सभी शिविरार्थियों के ठहरने की व्यवस्था, भोजन की व्यवस्था सराहनीय रही, जिसकी शिविर हेतु पधारे हुए सभी शिविरार्थियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दिल्ली प्रदेश महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती शीलाजी जैन ने इन चार दिवसों में जहां निःस्वार्थ भावों के साथ अपनी सेवाएं दीं वहीं उन्होंने इसे पुण्य एवं कर्म निर्जरा का उत्तम मार्ग बताते हुए स्वयं को ऐसे सेवा कार्यों से जोड़ने का अवसर प्राप्त होने पर आनन्दानुभूति प्रकट की। चार दिवसीय ध्यान साधना शिविर में सहयोग प्रदान करने हेतु जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महावीरप्रसादजी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन, श्री मोहनलालजी जैन (प्रशान्त विहार), राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन के अलावा राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवन्तजी जैन, रा. कार्य समिति सदस्य श्री जे. पी. ललवानी जी, राष्ट्रीय महिला प्रमुख मार्गदर्शक श्रीमती नीलमजी ओसवाल जैन, राष्ट्रीय महिला प्रचार-प्रसार मंत्री श्रीमती सुषमाजी जैन, रा. कार्य. समिति सदस्या श्रीमती कौशलजी जैन एवं जैन भवन के महाप्रबंधक श्री अनिलकुमारजी श्रीवास्तव, जैन भवन स्टॉफ के सभी कर्मियों को दिल्ली प्रदेश महिला शाखा द्वारा जैकेट्स भी प्रदान की गई।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने कहा कि आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. भविष्य में भी ध्यान शिविर का आयोजन करेंगे तो उसकी पूरी व्यवस्था जैन भवन, नई दिल्ली में की जाएगी।

प्रेषक : संतोष जैन, शीला जैन

प्रचर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. का जन्मोत्सव मनाया

नई दिल्ली : दिनांक 01 जनवरी 2024 को नववर्ष पर गुरु पुष्कर-देवेन्द्र के विद्वान् शिष्य प्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. का जन्मोत्सव, उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रमेशमुनिजी म.सा., साहित्यकार डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा., सेवाभावी श्री दीपेशमुनिजी म.सा., नवदीक्षित पू. श्री पार्श्वेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं महासाध्वी श्री मंगलज्योतिजी म.सा. आदि ठाणा के पुनीत सान्निध्य में सर्वप्रथम प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के प्रसंग पर सामूहिक पार्श्व जाप का आयोजन डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म. सा. के द्वारा कराया गया। तत्पश्चात् गुरु पुष्कर संयम शताब्दी पर पुष्कर चालीसा का मंगल गान गाया गया।

समारोह की अध्यक्षता जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, विशेष अतिथि राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कांतिलालजी बोथरा, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजयजी बाफना के अलावा श्री जोगीरामजी जैन, पार्षद श्री योगेशजी वर्मा, समाजसेवी श्री सुरेन्द्रजी छाजेड़, श्री भूपेन्द्रजी जैन, श्री सुभाषजी पारख, श्री करतारसिंहजी ओसवाल, श्री प्रशांतजी जैन, श्री राजेन्द्रजी नाहर, श्री अम्बालालजी लोढ़ा, श्री आनंददेवजी जैन, डॉ. नागेशजी जैन एवं दिल्ली, हरियाणा के अनेक पदाधिकारीगण ने उपस्थित होकर अपने-अपने श्रद्धाभाव व्यक्त किये। सभी ने पूज्य प्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए आपके 70वें जन्मोत्सव की शुभकामनाएं समर्पित की।

इस अवसर पर डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा से जीवदया हेतु लगभग दो लाख पचास हजार की राशि समर्पित की गई, जिसमें अशोक विहार जैन सभा, महिला तथा चंदनबाला मण्डल का विशेष योगदान रहा। श्री राजेन्द्रजी नाहर जैन द्वारा सामायिक बैग प्रभावना, श्रीमती संगीताजी सुरेन्द्रजी छाजेड़ द्वारा गौतम प्रसादी एवं नवकार तीर्थ के श्री प्रशांतजी जैन, श्री डी.सी. छाजेड़, श्री राजकुमारजी सुनीलजी भण्डारी, श्री महेन्द्रजी डोसी एवं जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली तथा श्री एस. एस. जैन सभा द्वारा सामूहिक ''आदर की चादर'' अर्पित की गई। महिला मण्डल, चंदनबाला मण्डल, विभिन्न संस्थाओं की ओर से सामूहिक भजन प्रस्तुत किये गये। अंत में चारों आचार्यों के जयकारों के साथ उपाध्यायश्रीजी एवं डॉ.श्री राजेन्द्रमुनिजी ने मंगलपाठ प्रदान किया गया, इस प्रसंग पर जरूरतमंदों को कम्बल वितरण किये गये। **प्रेषक : पदम पटवा, महामंत्री**

युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर' का स्मृति दिवस सोत्साह सम्पन्न

अहमदाबाद (गुजरात) : श्रमणसंघीय प्रथम युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर' का 40वाँ स्मृति दिवस एवं आचार्य सम्राट् श्री देवेंद्रमुनिजी म.सा. की अग्रज भगिनी महाश्रमणी श्री पुष्पावतीजी म.सा. का जन्म दिवस दिनांक 06 दिसंबर 2023 को महावीर भवन में विश्व संत उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म.सा. की सुशिष्या एवं श्रमणसंघीय आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासाध्वी श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में लोकाकृति लोगस्स जाप एवं सामायिक-साधना के साथ सोत्साह मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में महासती डॉ. श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. एवं डॉ श्री अर्पिताजी म.सा. ने लोकाकृति लोगस्स जाप करवाया, जिसमें करीब 90 साधकों ने भाग लेकर तीर्थंकर परमात्मा की भक्ति की और अपूर्व आनंद उठाया। सभा का संचालन श्री निहालचंदजी लोढ़ा ने किया। प्रवचन के पश्चात् प्रभावना के लाभार्थी श्रीमान् विमलचंदजी मोदी परिवार एवं श्रीमान् महावीरचंदजी नाहटा परिवार रहे। **प्रेषक : संजीव कुमार नाहटा**

प्रवर्तक रतनमुनिजी म.सा. के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा-सुमन अर्पण

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : छत्तीसगढ़ प्रवर्तक श्री रतनमुनिजी म.सा. का प्रथम स्मृति दिवस हर्ष-उल्लास के वातावरण में उपप्रवर्तक डॉ. श्री सतीशमुनिजी म.सा., महासाध्वी श्री विजयप्रभाजी म.सा., श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. 'प्रियदा', के पावन सान्निध्य में मंगल साधना केन्द्र, गुरु रतन धाम में सानंद मनाया गया। विभिन्न क्षेत्रों से गुरुभक्त परिवार इस पुनीत प्रसंग पर विशेष रूप से उपस्थित हुए। डॉ. श्री सतीशमुनिजी म.सा. ने कहा कि जहां गुरु नहीं, वहां जीवन शुरु नहीं। कार्यक्रम के लाभार्थी श्रीमती शायरदेवी, विमलचंदजी, उत्तमचंदजी, सार्थक भंडारी परिवार रहे। एक शाम गुरु रतन के नाम भक्ति संध्या का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में श्रमणसंघ स्वाध्याय मंडल दुर्ग के सदस्यों का विशेष रूप से सराहनीय योगदान रहा। **प्रेषक : नवीन संचेती**

नववर्ष में हम सभी अपनी दृष्टि परिवर्तित करें - आचार्य शिवमुनि

सूरत (गुजरात) : जीवन में आनंद उल्लास उमंग हो। सभी जीवों के प्रति करूणा दया की भावना, सबका मंगल हो, कल्याण हो, शुभ हो। सभी को सुख शांति समृद्धि मिले, इसी आशा और विश्वास के साथ नए वर्ष की शुरूआत् हो। इसी मंगल मनीषा हेतु बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन आचार्य भगवन् से नववर्ष 2024 का मंगलपाठ व मंगल आशीर्वाद ग्रहण करने अवध संगरीला के बैंक्वेट हॉल में उपस्थित हुए। इस अवसर पर आचार्य भगवन् ने नववर्ष का संदेश प्रदान करते हुए फरमाया कि इस नववर्ष प्रातःकाल की मंगल बेला में आप यहाँ आए आपका जीवन धर्ममय हो, शुभ हो, कल्याणमय हो। भूतकाल की बातें छोड़ भविष्य की चिंता न करते हुए वर्तमान में हम अपने जीवन को प्रतिपल, प्रतिक्षण आनंद, सुख, शांति और सौभाग्य से कैसे भर सकते है। पूरा वर्ष जो कुछ आपने किया, भविष्य में जो होगा वह होकर रहेगा। वह आपके और मेरे हाथ में नहीं है। वर्तमान का यह क्षण आपके हाथ में है, यह पल क्षण इसकी अनुभूति आपके पास है। इस क्षण में आप अनंत-अनंत कर्मों की निर्जरा कर सकते हो और कर्मों का बंधन भी कर सकते हो। वर्तमान सुधर गया तो आपका भविष्य भी सुधर जाएगा। आपका आने वाला समय धर्ममय हो ऐसी मैं नववर्ष पर प्रार्थना करता हूँ।

वर्तमान में जीने के लिए आपको दृष्टि बदलनी होगी। जीवन में आप किसको महत्व देते है। आज की दुनिया पर्सनैलिटि डवलपमेंट की बात करती है। आत्मा की ओर कोई ध्यान नहीं है। जो सत्य है, शाश्वत है उसकी चर्चा ही नहीं करना चाहते। कोई बात ही नहीं करते है। अपने बच्चों को अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया पढ़ने भेज रहे है, क्या वह सुखी हो गया?

धर्म आपके जीवन में झलकना चाहिए, तुम्हारे उठने, बैठने, बात करने, चलने में धर्म होना चाहिए। ध्यान आपके जीवन का अंग बनना चाहिए। जहाँ सुख है, आनंद है, वहाँ हम ढूंढ ही नहीं रहे है और बाहर ढूंढ रहे है। शांति भीतर है यह आपकी भूल है, यह एक ही भूल है जीव ने अपनी शक्ति मन को दी है, बुद्धि को दी। इस कारण आपका मन बलवान हो गया है। मन को खाली करना है। मन चंचल है उसको जानों, देखो और जानो धीरे-धीरे विचार कम हो जायेंगे। हम अपने आपको भूल गए है। सत्य की खोज करो, सत्य पर विश्वास करो। सत्य आपके पास है, सत्य भीतर है। अनन्त ज्ञान, दर्शन, अनंत सुख आपके पास है। दो घंटे अपने को दीजिए, ध्यान कीजिए।

नववर्श में आप दो संकल्प लें। परिवार में सभी व्यक्ति एक समय का भोजन और भजन एक साथ बैठ कर करें, आपका घर स्वर्ग बन जाएगा। परिवार समाज में सुख, शांति हो विश्व के सभी मानव सुख शांति में जिएं। जीवन में शांति चाहते है तो कुछ चीजों को एक्सेप्ट कर, कुछ चीजों को इग्नोर कर दो। 2024 में हम 24वें तीर्थंकर परमात्मा प्रभु महावीर से प्रेरणा ले सकते है। यह वर्ष भगवान् महावीर का 2550वाँ निर्वाण कल्याणक वर्ष हैं। इस वर्ष में हम भगवान की सहजता, सरलता, संयम त्याग को अपने जीवन में अपनाएं। भगवान की तरह दया, करूणा, परोपकार हमारे जीवन में भी आये। आचार्य भगवन् के संदेश से पूर्व अवध संगरीला के बैंक्वेट हॉल में नए वर्ष का प्रोग्राम पूज्य गुरुदेव श्री शिरीषमुनिजी म.सा. ने अपने मुखारविंद से नवकार मंत्र का मधुर गान के साथ प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् परम पूज्या महासाध्वी श्री नंदनीजी म.सा. ने नववर्ष पर प्रेरणादायी उद्‌बोधन दिया। परम पूज्या महासाध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. एवं महासाध्वी श्री सुकीर्तिजी म.सा. ने मधुर एवं कर्णप्रिय भजन सुनाएं। प्रमुख मंत्राी श्री शिरीषमुनिजी म.सा. ने भी सभा को सम्बोध्ति किया। अनेक श्रद्धालुओं के साथ विशेष रूप से इचलकरंजी श्रीसंघ, कामरेज श्रीसंघ, टीकमनगर सूरत श्रीसंघ, नववर्ष मंगल पाठ सुनने हेतु उपस्थित था। आचार्य भगवन ने इस अवसर पर उपप्रवर्तनी महासाध्वी श्री निर्मलाजी म.सा. का वर्ष 2024 का चातुर्मास इचलकरंजी श्रीसंघ को, महासाध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. का चातुर्मास आदिनाथ सोसायटी पुणे श्रीसंघ को तथा महासाध्वी श्री सुकृतिजी म.सा. का चातुर्मास कामरेज श्रीसंघ को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का आगार करते हुए प्रदान किया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन ने किया। प्रवचन के पश्चात् सभी के लिए शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से प्रभावना का वितरण किया गया।

प्रेषक : श्री शमितमुनिजी म.सा.

डॉ. श्री मणिभद्रमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में दिव्य सत्संग-प्रवचन

नई दिल्ली : कोहाट एन्क्लेव में दि. 02.01.2024 को नेपाल केसरी मानव मिलन संस्थापक डॉ. श्री मणिभद्रमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में दिव्य सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में डॉ. मणिभद्रमुनिजी म.सा. ने कहा कि जीवन को सुखमय बनाने के लिए एक सिद्धांत पर गाँठ बाँध लेनी जरुरी है कि जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है। अपर्याप्त के लिए परेशान होने वाला व्यक्ति, उससे भी हाथ धो बैठता है। इस कार्यक्रम की प्रमुख अतिथि पंजाब केसरी की निदेशका केसरी क्लब की चेयरपर्सन किरणजी चोपड़ा ने कहा कि बुजुर्गों का सम्मान हमें सौभाग्य से मिलता है। इस सेवा से किसी को वंचित नहीं रहना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन ने किया। कार्यक्रम में डॉ. बजरंगलालजी गुप्ता, किरणजी चोपड़ा, कुसुमजी जैन का सम्मान किया गया। प्रेषक : जितेन्द्र जैन, प्रांतीय अध्यक्ष

जैन धर्म की चारों सम्प्रदायों के पदाधिकारियों की सभा का आयोजन

नई दिल्ली : दिनांक 22.01.2024 को श्रीराम की पावन जन्म भूमि अयोध्या में नवनिर्मित भव्य मंदिर में श्रीराम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में निवासरत जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों के विशिष्ठ महानुभावों की एक आवश्यक सभा तेरापंथ भवन, नई दिल्ली में दि. 03.01.2024 को संपन्न हुई। जिसमें सभी ने एकमत से अपनी सहमति प्रस्तुत की कि हम सभी प्राण प्रतिष्ठा के समारोह में हर प्रकार का सहयोग प्रदान करेंगे।

इसमें श्वेताम्बर स्थानकवासी दिल्ली प्रदेश के विभिन्न दायित्वों पर कार्यरत निम्नलिखित महानुभावों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तथा अपने बहुमूल्य विचारों से अवगत कराया। सर्वश्री प्रो. रतनजी जैन-महामंत्री जैन महासभा, सुभाषजी ओसवाल जैन चेयरमेन-जैन कॉन्फ्रेंस, अतुलजी जैन राष्ट्रीय महामंत्री-जैन कांफ्रेंस, जसवंतजी जैन राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस, संजयजी बाफना, ज्ञान प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष, जितेन्द्रजी जैन दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष, रामनिवासजी जैन, राष्ट्रीय मंत्री, संजयजी जैन-दिल्ली प्रांतीय महामंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, मुन्नालालजी जैन-राष्ट्रीय महामंत्री श्रावक समिति, श्री नरेशजी आनन्दजी जैन-अध्यक्ष श्रावक समिति दिल्ली प्रदेश व अध्यक्ष जैन महासंघ दिल्ली, श्री संदीपजी जैन 'सोनू' युवा अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश श्रावक समिति, श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन कार्यकारी अध्यक्ष श्रावक समिति दिल्ली प्रदेश, इसके अतिरिक्त विभिन्न जैन स्थानकों के पदाधिकारीगण आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। प्रेषक : संजय बाफना जैन

कहानी करोड़पति फकीर की ...

नाम घासीराम वर्मा राजस्थान के झुंझुनू जिले के सीगड़ी गाँव का एक ऐसा शख्स जो गरीबी में पढा, मित्रों के सहयोग से, माँ का जमा किया हुआ घी, बाप के पाले हुए पशु बेचकर फीस जमा कराते हुए। अमेरिका में प्रोफेसर हुए, सारी तनख्वाह गरीब और जरूतमंदों के लिए भारत में लगा दी। करोड़पति हुए परंतु रहे फकीर के फकीर।

तभी 'करोड़पति फकीर' कहलाते हैं ...

प्रशंसा और प्रचार से कतई मोह नहीं, राज्यसभा में जाने का प्रस्ताव तक मिला, ठुकरा दिया । पद्मश्री के लिए आवेदन मांगा, आवेदन तक नहीं किया ...

- आज नब्बे वर्ष से ऊपर हैं, परंतु अब भी अमेरिका में अतिथि प्रोफेसर की हैसियत से काम करते हैं, कमाते हैं और भारत आकर सारा खर्च कर जाते हैं। इस हद तक कि वापसी की टिकट के लिए पैसा तक नहीं बचता । मित्रों से किराया उधार मांगकर फिर जाते हैं और पुनः आकर फिर लगा जाते हैं, खासकर बालिका शिक्षा के लिए। अब तक नौ करोड़ रुपये से अधिक का वेतन समाज को समर्पित कर चुके हैं। साभार - रोचकनामा

सुचि ग्रुप द्वारा गुजरात सरकार के साथ सेमी कंडक्टर निर्माण के क्षेत्र में 870 करोड़ रुपये के अनुबंध पर हस्ताक्षर

गुजरात में पहले सेमी कंडक्टर संयंत्र से लगभग 1200 लोगों को मिलेगा नया रोजगार

सूरत (गुजरात) : टैक्सटाइल उद्योग में आधिपत्य स्थापित करने के बाद सुचि ग्रुप के चेयरमैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन द्वारा अब गुजरात में पहले सेमिकंडक्टर संयंत्र की स्थापना की ओर कदम बढ़ाने के उपक्रम के अंतर्गत गुजरात सरकार के साथ 870 करोड़ रुपये के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

सुचि सेमिकॉन के संस्थापक एवं टैक्सटाइल उद्योग के दीर्घानुभवी श्री अशोककुमारजी मेहता जैन द्वारा गुजरात सरकार के मुख्यमंत्री श्रीमान भूपेन्द्र पटेल जी एवं अन्य शिष्ट-विशिष्ट उपस्थिति के बीच वाईब्रेन्ट गुजरात ग्लोबल सम्मिट 2024 के दौरान इस ऐतिहासिक करार पर 20 दिसम्बर 2024 को गुजरात राज्य की राजधानी गांधीनगर में हस्ताक्षर करते हुए गुजरात राज्य में पहली बार सेमी कंडक्टर संयंत्र की स्थापना के साथ एक नवीन अध्याय का शुभारम्भ किया गया है। इसके साथ ही सुचि ग्रुप ने अपने उद्यमशील अनुभव एवं कौशल के माध्यम से इस अभूतपूर्व उद्योग के गठन की ओर कदम बढ़ाया है जिसमें लगभग 1200 लोगों को नवीन रोजगार की प्राप्ति होगी।

श्री अशोककुमारजी मेहता जैन ने अपार हर्षपूर्वक एवं दृढ़ विश्वास के साथ बताया कि भारत में प्रथम स्वदेशी सेमी कंडक्टर निर्माण एवं टैस्ट (OSAT) सुविधा गुजरात की डायमण्ड सिटी में उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने आगे बताया कि हमारा लक्ष्य भारत को सेमी कंडक्टर निर्माण के क्षेत्र में जहाँ आत्मनिर्भर बनाने का है वहीं इस क्षेत्र में उच्च स्तरीय समाधान उपलब्ध कराते हुए इस तकनीक में नवीनता, सशक्त तकनीकी उन्नत्ति प्रदान कराई जाएगी जिससे कि उपभोक्ता इस अग्रणी तकनीक द्वारा अपने उत्पादों को वैश्विक स्तर प्रदान कर सकें।

गौरतलब है कि गुजरात सरकार द्वारा गुजरात राज्य को इलैक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन व मैन्युफक्चरिंग (ESDM) तथा सेमी कंडक्टर उत्पादन के सन्दर्भ में अग्रणी कदम उठाते हुए गुजरात राज्य को Electronics Manufacturing (2022-28) तथा Semiconductor Manufacturing (2022-27) के क्षेत्र में विशेष नीतियाँ बनाकर देश का ऐसा पहला राज्य बनाने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है, जो वैश्विक स्तर पर अपनी प्रतिभा स्थापित कर सके।

श्री अशोककुमारजी मेहता जैन ने इस उत्पाद के बारें में बताया कि हमारे विशेषज्ञों द्वारा अमेरिका, सिंगापुर जैसे देशों द्वारा प्रदर्शित रुचि के चलते लगभग 1,00,000 यूनिट्स रोजाना की खपत की प्रतिबद्धता जताई है। उन्होंने सूरत में निर्मित होने वाले इस उत्पाद की अनेक विशेषताओं का भी जिक्र किया। इसके साथ ही उन्होंने इसके सामाजिक आर्थिक महत्व को दर्शाते हुए बताया कि सूरत में जहाँ यह रोजगार उपलब्धता के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण संयंत्र बनेगा वहीं इसमें उत्पादन की प्रक्रिया वर्ष 2024 में शुरु की जाएगी जिससे कि सूरत शहर तकनीकी नवीनता एवं वैश्विक ख्याति को प्राप्त करेगा।

प्रेषक : अशोककुमार मेहता जैन

राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने साध्वीवृंद के दर्शनार्थ उपस्थित होकर लिया आशीर्वाद

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : पंढरपुर, बजाज नगर संघ औरंगाबाद में चातुर्माससार्थ विराजित जैन दिवाकरीय ओजस्वी वक्ता पू. श्री अमितसुधाजी म.सा. के समक्ष जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री श्री दिलीपजी खिंवसरा जैन, श्री ताराचंदजी दुग्गड जैन आदि पदाधिकारी ने उपस्थित होकर ऐतिहासिक सफलतम चातुर्मास की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान करते हुए दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। ओजस्वी वक्ता पू अमितसुधाजी म.सा. का आगामी 2024 का चातुर्मास सभी बड़े गुरु भगवंतो की आज्ञा से द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के आगार को ध्यान में रखते हुए लोनार श्रीसंघ को प्रदान किया है।

प्रेषक : ताराचंद दुग्गड़ जैन

शोक समाचार

महासती श्री चंदनबालाजी म.सा. का चौविहार संथारा के साथ देवलोकगमन

हैदराबाद (तेलंगाना) : श्रमणसंघीय उपाध्याय प्रवर श्री पुष्करमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी, जिनशासन चंद्रिका, सद्गुरुणी मैया महासती श्री शीलकुँवरजी म.सा की प्रधान सुशिष्या, जिनशासन गौरव, तत्वचिंतामणि, मधुर व्याख्यानी गुरुणी मैया श्री चंदनबालाजी म.सा. का दि. 28/12/2023 को 87 वर्ष की आयु में चौविहार संथारा के साथ हैदराबाद स्थित शील चंदन स्वाध्याय भवन, अवंतिनगर में देवलोकगमन हो गया। आपने 70 वर्षों तक दीक्षा पर्याय का पालन किया। आपका जीवन अनेकानेक सद्गुणों का खिला हुआ गुलदस्ता था, जिनकी सुवास से संपूर्ण स्थानकवासी समाज व गुरु पुष्कर-देवेन्द्र बगिया गौरवान्वित थी। जन-जन के मन में धर्म एवं आस्था का सूर्य दीप्तिमान करने वाली महान् साधिका का अवसान हुआ है, महासतीजी के देवलोकगमन से समाज एवं संघ को जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार गुरुणी मैया के देवलोकगमन पर वंदन-नमन करते हुए श्रद्धा-सुमन अर्पित करती है। **प्रेषक : कांतिलाल सिंघवी जैन**

उपप्रवर्तक डॉ. सुभाषमुनिजी म.सा. 'सुमन' का देवलोकगमन

अहमदाबाद (गुजरात) : श्रमणसंघीय व्याख्यान वाचस्पति, गुरुदेव श्री चंदनमुनिजी म.सा., तपस्वीरत्न पूज्य गुरुदेव श्री वर्दीचंदजी म.सा. के सुशिष्य, बालकवि, उपप्रवर्तक डॉ. श्री सुभाषमुनिजी म.सा. 'सुमन' का अहमदाबाद ले जाते समय देवलोकगमन हो गया। आप एक सरल सेवाभावी संत थे। समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार गुरुदेव के देवलोकगमन पर वंदन, नमन करते हुए श्रद्धा-सुमन अर्पण करता है। **प्रेषक : संदीप रांका जैन**

संथारा के साथ श्री नयनऋषिजी म.सा. का देवलोकगमन

पुणे (महाराष्ट्र) : आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. के सुशिष्य श्री नयनऋषिजी म.सा. ने दि.10/12/2023 की शाम 04:15 बजे सजग अवस्था में उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. से दीक्षा एवं संथाराव्रत ग्रहण किया था, जिनका दिनांक 22/12/2023 को परमात्मा के 150 कल्याणक से पावन बने मौन ग्यारस के दिन येरवड़ा, पुणे में संथारा की पूर्णाहूति हुई। समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार संयमी एवं संथारा साधक के देवलोकगमन पर वंदन, नमन करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित करता है। **प्रेषक : तेज गांधी जैन**

दिल्ली : प्रशान्त विहार निवासी श्री शिखरचंदजी जैन की धर्मपत्नी आदर्श सुश्राविका श्रीमती कमलेशजी जैन का देवलोकगमन 31 अक्टूबर 2023 को हो गया। **प्रेषक : जितेन्द्र जैन**

मनमाड़ (महाराष्ट्र) : एडवोकेट श्री विपुलजी संकलेचा की धर्मपत्नी सुश्राविका डॉ. पूनमजी विपुलजी संकलेचा का स्वर्गवास 07 दिसम्बर 2023 को हो गया। **प्रेषक : रूचिरा सुराणा जैन**

दिल्ली : स्वाध्यायी श्रीमती सुशीलादेवीजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री उगमचंदजी मेहता का 17 दिसम्बर 2023 को देहावसान हो गया। **प्रेषक : मनीष मेहता जैन**

जययपुर (राजस्थान) : सरल, सहज श्रीमती संगीताजी नाहर का 25 दिसम्बर 2023 को देह विलय हो गया। **प्रेषक : संदीप रांका जैन**

दुर्ग (राजस्थान) : श्री सुरेशकुमारजी बाघमार पिता स्व. श्री गेंदलालजी बाघमार का 65 वर्ष की आयु में 24 दिसम्बर 2023 को देवलोकगमन हो गया। **प्रेषक : नवीन संचेती जैन**

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

!! श्री महावीराय नमः !!

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110001

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल

(पूर्णतया वातानुकूलित)

सहर्ष आपको सूचित किया जा रहा है कि जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्यालय जैन भवन, नई दिल्ली में नव - निर्मित

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल (पूर्णतया वातानुकूलित)

शुभ विवाह, जन्म दिवस आदि पारिवारिक एवं अन्य आयोजनों के लिए उपलब्ध है।

सामाजिक संस्थाएँ, श्रीसंघ व Corporate Houses आदि भी धार्मिक, सामाजिक व सेमिनार आदि कार्यक्रमों के लिए सम्पर्क कर सकते हैं ।

कार्यक्रम आयोजन हेतु उपलब्ध सुविधायें :-

- नई दिल्ली के शालीन, आदर्श वातावरण के बीच 4500 Sq. Ft. क्षेत्रफल में निर्मित।
- पूर्णतया सुसज्जित, वातानुकूलित व सुविधापूर्ण परिसर।
- कार पार्किंग की सुव्यवस्थित सुविधा उपलब्ध।
- हॉल की बुकिंग के साथ 2 वातानुकूलित कमरे उपलब्ध कराए जाएंगे।
- पूर्णतया सुरक्षित व पारिवारिक माहौल की अनुभूति ।
- भोजन आदि के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध ।
- जैन भवन दिल्ली में सुंदर आवास/सात्विक भोजन व्यवस्था 24/7 उपलब्ध है, अग्रिम सूचना के साथ लाभ उठावें ।

सहयोग राशि :-

24 घंटे की बुकिंग के लिए 61000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : रात्रि 12:00 बजे से अगले दिन रात्रि 12:00 बजे तक), दूसरे दिन के लिए विशेष छूट।

8 घंटे की बुकिंग के लिए 41000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : प्रातः 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा सायं 4 बजे से रात्रि 11 बजे तक)

-: ध्यानार्थ :-

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों व प्रान्तीय अध्यक्षों की अनुशंसा पर धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों हेतु विशेष छूट प्रदान की जाएगी ।

जैन कॉन्फ्रेंस सदस्य 20 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

स्थानकवासी जैन समाज के सामान्य परिवार भी छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

-: विशेष :-

जब भी आप दिल्ली पधारें तो जैन भवन परिसर में ही ठहरने का भाव रखें।

जैन भवन में लगभग 30 ए. सी. कमरे जैन भोजनशाला के साथ उपलब्ध हैं।

!! अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र !!

व्हाट्सएप्प नम्बर : 9019731906 लैण्डलाइन नम्बर : 011 - 23363729 / 23365420

Email.: aissjc1906@gmail.com

*नियम व शर्तें लागू

Date of Publication : 05/01/2024

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म. - स्मृति दिवस - माघ वदी 10, सन् 1962 - 5 फरवरी 2024 को अधिक से अधिक जप - तप एवं त्याग के साथ मनाएं।

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

सूरत - नववर्ष महामांगलिक कार्यक्रम में ध्यानयोगी, युगपुरुष, श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् डॉ.श्री शिवमुनिजी महाराज सा. आदि ठाणा व पूज्यनीय संत - सतीवृन्द।

रायपुर - युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा. आदि ठाणा विहार सेवा पश्चात् वैयावच्च योजना अध्यक्ष श्री रतनजी सिंघवी व अन्य महानुभाव।

नई दिल्ली - जैन भवन में शुभेच्छा भेंट राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंदमलजी छल्लाणी संजयजी बाफना, सज्जनराजजी मेहता - चेन्नई, दिलीपजी खिंवसरा - औरंगाबाद अम्बालालजी लोढा - नाथद्वारा जे.पी. ललवानीजी चेन्नई आदि।

अशोक विहार, दिल्ली - उपाध्याय प्रवर श्री रमेशमुनिजी म. सा., प्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा. आदि संत सतीवृन्द के सान्निध्य में नववर्ष महामांगलिक व गुरु राजेन्द्र जन्मोत्सव, दूसरे चित्र में : प्रवर्तक राजेन्द्रमुनिजी म. को 70वें जन्मोत्सव पर अभिनंदन स्वरूप चरणों में चद्दर भेंट करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री आनंदमलजी छल्लाणी व अन्य पदाधिकारीगण।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित